वर्ष 2021-22

सेलम ज्योति

अंक - 9

राजभाषा अनुभाग
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल

सेलम ज्योति 2021-22

संरक्षक
श्री.आ.गौतम श्रीनिवास
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्शदाता
पी.शिवलिंगम
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडली
राजभाषा अनुभाग,
सेलम

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। इससे संपादक मंडली का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

संपर्क कार्यालय : राजभाषा अनुभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल, सेलम-636005
रेलवे फोन – 65030/32, बी.एस.एन.एल फोन -04272336833, ई-मेल- ra@sa.railnet.gov.in

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

सत्यमेव जयते

ए.जी श्रीनिवास
मंडल रेल प्रबंधक

संदेश

सेलम मंडल की वार्षिक गृह पत्रिका 'सेलम ज्योति' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा के प्रति सेलम मंडल के रेलकर्मियों की कर्मचारियों की अभिरुचि को दर्शाता है। राजभाषा में किए जा रहे पत्र-व्यवहार तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के अलावा सेमिनार, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि से राजभाषा हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है। पत्रिका का प्रकाशन भी अनुकूल वातावरण तैयार करने में एक अतुलनीय पहलु है। पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य लेखकों तथा कवियों की लेखनी मात्र तक सीमित न हो बल्कि उनके द्वारा शत प्रतिशत हिंदी में कामकाज संपन्न करने की भावना निहित हो।

'सेलम ज्योति' की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं,

(ए.जी.श्रीनिवास)
मंडल रेल प्रबंधक/सेलम

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

सत्यमेव जयते

पी.शिवलिंगम
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सेलम मंडल की वार्षिक गृह पत्रिका 'सेलम ज्योति' का 9वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। गृह पत्रिका के माध्यम से सृजनधर्मी प्रतिभाओं को एक मंच मिलता है। रचना कौशल में विकास एवं भाषा के सुप्रयोग में निखार आता है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत की प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। हमें अपने देश की एकता, अखंडता तथा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करनी है। हिंदी इसके लिए उपयुक्त भाषा है। राजभाषा नीति के अनुपालन की दिशा में उठाए गए सभी समुचित कदम सराहनीय है। कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा का प्रयोग उत्साहपूर्वक बना रहे, ऐसी आशा करता हूँ।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे संपादक मंडल, रचनाकारों को बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह प्रकाशन अनवरत जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

25/3/22

(पी.शिवलिंगम)
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी/सेलम

भारत सरकार
रेल मंत्रालय, दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम - 636005

सत्यमेव जयते

बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

प्रिय पाठको,

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से हिंदी पत्रिकाओं ने सदैव अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । इसी क्रम में सेलम मंडल की वार्षिक गृहपत्रिका सेलम ज्योति रेलकर्मियों को एक मंच प्रदान करती है, जिसके माध्यम से समस्त रेलकर्मी अपने विचारों को हिंदी भाषा में सहज अभिव्यक्त कर सके । पत्रिका के माध्यम से लेखक अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं । साथ ही भाषा प्रयोग में होनेवाले हिचक को हम सहज ही दूर कर पाते हैं । राजभाषा हिंदी में आपके विचारों को जब अभिव्यक्ति मिलती है तो वह पूरे देश के साहित्य प्रेमियों के हृदय तक पहुंच जाती हैं ।

अपनी रचनाएं प्रदान कर सेलम ज्योति पत्रिका को सफल बनाने वाले सहयोगी रचनाकारों को साधुवाद । राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार में अपना योगदान सदैव बनाए रखें ।

पाठकों की प्रतिक्रियाएं हमें प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन प्रदान करती हैं, इसलिए प्रतिक्रियाओं का सदैव स्वागत है ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

बि. सोय

बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं	रचना	लेखक	पन्ना सं.
1	कार्य-जीवन संतुलन	पवन कुमार	7
2	सब को सब कुछ नहीं है मिलता	बिनीता सोय	9
3	हम और हमारा स्वास्थ्य	मुरलीधर कुंभारे	10
4	महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार	डॉ.एन गुरुमूर्ति	12
5	भेद-भाव की राजनीति	देवी नांगरानी	15
6	मजदूर	पुरुषोत्तम कुमार	20
7	मेरी पहली यादगार दक्षिण भारत यात्रा	मोहन	21
8	चुनाव	पी.शिरंजीवी राव	23
9	हिंदी के कालजयी उपन्यास	निमिता. के.वी	24
10	नारी	रूपा मंडल	27
11	गांधी अंतरात्मा की पहरुआ@74	अमित कुमार मिश्रा	28
12	नदी नहीं, पूरी संस्कृति है कावेरी	एस.चंद्रशेखरन	32
13	बचपन का साथी	सूर्यप्रकाश सिंह	33
14	मेरी रेल यात्रा	बलिराम प्रसाद	34
15	प्लास्टिक का कम उपयोग - स्वच्छ पर्यायवरण की पहल	नंदलाल मीना	37
16	मेरा संघर्ष	पुरुषोत्तम कुमार	39
17	विज्ञापन के मायाजाल में बच्चे	सूरज पी.एस	40
18	हमारा हिंदुस्तान	पवन रामटेके	42
19	कचरा एक बड़ी समस्या पृथ्वी पर	रामस्वरूप मीना	43
20	प्रतियोगी परीक्षाओं से जूझता प्रतिभागी	रूपा मंडल	44
21	सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन - एक विस्तृत परिचय	सपना सोनी	48
22	कूटने की परंपरा	श्री किशन	51
23	"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना हिंदी है हम वतन के हिंदुस्तान हमारा सारे जहाँ से अच्छा"	वीरेंद्र कुमार शर्मा	52
24	बिहार के पर्यटन स्थल	अभिषेक कुमार	54

कार्य-जीवन संतुलन

पवन कुमार,
मंडल इंजीनियर/सेलम

"*अपनी नौकरी से प्यार करो लेकिन अपनी कंपनी से प्यार मत करो, क्योंकि आप नहीं जानते कि आपकी कंपनी कब आपसे प्यार करना बंद कर देती है!* "~डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

किसी भी संगठन का प्रदर्शन मूल रूप से उसके कर्मचारियों की दक्षता और उत्पादकता पर निर्भर करता है। व्यक्ति अपने दिन का अधिकांश उत्पादक समय कार्य स्थल पर ही व्यतीत करता है। काम जीवन का एक आयाम और आजीविका का साधन है, यह हमें हमारी पहचान को आकार देने में मदद करता है, हमारे अस्तित्व को एक उद्देश्य देता है, हमें अपने दिन बिताने का एक उपयोगी तरीका देता है, हमारी सामाजिक स्थिति और परिवार के लिए योगदान देता है एवं हमें दूसरों के संपर्क में लाता है।

कार्य जीवन संतुलन पर्याप्त आराम के साथ एक खुशहाल, स्वस्थ गृह जीवन को बनाए रखते हुए नियंत्रण की भावना का अनुभव करने और काम पर उत्पादक और प्रतिस्पर्धी बने रहने की क्षमता है। कार्य जीवन संतुलन व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाए रखता है और इसलिए यह दोनों के बीच घर्षण को कम करने में मदद करता है।

लोग क्या संभालने में सक्षम हैं, इसकी सीमाएं हैं, और वे सीमाएं एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती हैं। जब कार्यस्थल की आवश्यकताएं कार्यकर्ता की क्षमताओं, संसाधनों या जरूरत से मेल नहीं खाती हैं और कार्य कर्मचारी की सीमाओं को पार कर जाता है, तो वे खुद को इतनी गंभीर समस्याओं का सामना करते हुए पाते हैं कि वे स्वयं उन्हें हल करने में असमर्थ होते है और इससे उनमे काम का तनाव होने लगता है । काम का तनाव अंततः कर्मचारी को अत्यधिक थका हुआ, शक्तिहीन और उदास महसूस करने के साथ-साथ शारीरिक बीमारियों का शिकार भी बना सकता है। यदि कर्मचारी पर काम का अधिक बोझ है, तो वह जिम्मेदारियों को निभाने के लिए प्रेरणा खो देता है और थका111 हुआ महसूस करता है और हर रोज कुशलतापूर्वक प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित नहीं होता है। लंबे समय तक काम करने तथा लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संगठन से लगातार दबाव की वजह से, कर्मचारियों के पास अपने निजी जीवन को त्यागने के सिवाय कोई अन्य विकल्प नही होता है । यह पूरी प्रक्रिया कर्मचारी पर तनाव पैदा कर रही है जो उच्च रक्तचाप, मधुमेह, दिल का दौरा, स्त्री रोग संबंधी समस्याओं आदि का मूल कारण है,और कभी-कभी कर्मचारी इस तनाव से निपटने के लिए अनैतिक प्रथाओं, शराब, धूम्रपान, ड्रग्स, आदि को भी जीवन में अपनाने लग जाता है।

मूल रूप से कार्य जीवन असंतुलन के छह कारक है, जिनमे सामाजिक समर्थन, संगठनात्मक कारक, तनाव कारक,कार्य समस्या कारक, पारिवारिक समस्या कारक, व्यक्तिगत कारक शामिल हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि काम, घर पर अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग करें तथा तनाव रहित रहे कुछ उपाय इस प्रकार है-

- अपने समय के उपयोग का विश्लेषण करें, यह तय करें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। सुनिश्चित करें कि आपने महत्वपूर्ण चीजें पूरी कर ली हैं और बाकी की चिंता न करें।
- काम को काम पर छोड़े। अपने सेल फोन का उपयोग बंद करें या कम करें, अपने लैपटॉप को बंद करें और काम के घर के बीच एक स्पष्ट सीमा निर्धारित करें। अपने परिवार को यह सुनिश्चित करने के लिए कहें कि आप पुरानी आदतों में वापस न आ जाएं।
- तनावपूर्ण चीजों को "नहीं" कहें जो कि बाद में केवल संघर्ष का कारण बनेगी। यह जीवन के उन हिस्सों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगा, जिनकी वास्तव में परवाह करते हैं और उन्हें सौ प्रतिशत एवं अविभाजित ध्यान दे सकते हो ।

“यदि आप अपने जीवन में गिरते हैं, तो न तो आपका बॉस या ग्राहक आपकी मदद के लिए हाथ देंगे, केवल आपके मित्र और परिवार ही देंगे।“ ~डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कार्य जीवन संतुलन स्वस्थ कार्य वातावरण बनाए रखने के बारे में है, जो कर्मचारियों को काम और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने में सक्षम करेगा और इस प्रकार कर्मचारी की वफादारी और उत्पादकता को मजबूत करेगा। एक असंतुलन मूल रूप से कार्य जीवन और व्यक्तिगत जीवन के बीच स्पष्ट रूप से परिभाषित और लागू सीमाओं की कमी है। जब लोग स्वस्थ कार्य संतुलन पाने में असफल होते हैं, तो भावनात्मक तनाव, चिंता और अवसाद का अनुभव करते हैं। स्थिति का परिणाम यह हो सकता है कि संगठन अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता है, और कर्मचारी संगठन से संतुष्ट नहीं होते हैं । दोनों ही सूरत में पूरा संगठन खतरे में होता है। जिन कर्मचारियों के पास अपने पेशेवर और व्यक्तिगत और व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करने का उपकरण होता है, वे अधिक खुश, स्वस्थ और अधिक उत्पादक होते हैं।

इसी संदर्भ में कार्य जीवन संतुलन पर बहुत प्रसिद्ध लोगों के कुछ उद्धरण यहाँ हैं:

"कार्य जीवन संतुलन की चुनौती निस्संदेह आधुनिक मनुष्य द्वारा सामना किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण संघर्षों में से एक है।" - स्टीफन कोवे, लेखक

"कार्य जीवन संतुलन कोई अधिकार या लाभ नहीं है। आपकी कंपनी इसे आपको नहीं दे सकती है। आपको इसे अपने लिए बनाना होगा।" - मैथ्यू केली, लेखक

"आप कितने भी व्यस्त क्यों न हों, या आपको लगता है कि आप कितने व्यस्त हैं, कल काम हमेशा रहेगा, लेकिन आपके मित्र और परिवार नहीं हो सकते हैं।" - अनाम

"अगर आप दुनिया को बदलना चाहते हैं, तो घर जाइए और अपने परिवार से प्यार कीजिए।"

- मदर टेरेसा

"हम में से अधिकांश लोग बहुत अधिक समय उस पर व्यतीत करते हैं जो जरूरी है और जो महत्वपूर्ण है उस पर पर्याप्त समय नहीं है।" - स्टीफन कोवे, लेखक

सब को सब कुछ नहीं है मिलता

बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी/सेलम

सब को सब कुछ नहीं है मिलता,
किसी को ज्यादा, किसी को कम है मिलता,
पर मिलता उतनी ही, जितना कर्म है हम कर पाते,
हर कर्म का फल यहीं हमें है मिलता।

अच्छे कर्म जीवन को प्रगति की दिशा में है ले जाते,
बुरे कर्म मानव को पतन की ओर है ले जाते,
शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य है भोगना पड़ता,
जो जैसा है कर्म करता, वैसा ही फल भुगतना पड़ता।

यदि परमात्मा भी मनुष्य के रूप में अवतरित होते,
तो सारे नियमों का वे भी पालन करते,
अनेक जन्मों में किए हुए कर्म अन्तःकरण में हमारे संग्रहित रहते,
संचित कर्म वही है कहलाते और उनसे ही प्रारब्ध बनते।

सब को सब कुछ कहां है मिलता,
किसी को खुशी तो किसी को गम है मिलता
पर मिलता सभी को अपने हिस्से का सुख,
जो न मिलता उसका ही सब जताते दुख।

हम और हमारा स्वास्थ्य

मुरलीधर कुंभारे
मंडल स्वास्थ्य अधिकारी/सेलम

आज के भाग-दौड के माहौल में हम अपने आप के स्वास्थ्य के बारे में भूल गए हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य का हमारे जीवन में जो भूमिका है, यदि हम उसे दैनिक जीवन में सदा के लिए अपनाते हैं तो हम स्वस्थ्य जीवन का आनंद उठा सकते हैं। स्वस्थ आनंदी और निरोगी जीवन हासिल कर सकते हैं। हम हमारे जीवन में हमारे पूर्वजनों और आयुर्वेद में बताई गई बातें और सिद्धांत भूल ही गए हैं। जैसे कि

1) प्रातः सूर्योदय के पूर्व नींद से जागकर हाथ मुंह धोकर सूर्य नमस्कार करें। कुछ गरमाहट पैदा करने के लिए हलके व्यायाम और आसन करें। यह सभी गुरुकुल और आश्रमों में पढ़ाया जाता था। हमारे भगवान श्रीराम श्रीकृष्ण इन्होंने आश्रम में ही शिक्षा ली है।

2) हमेशा – हर रोज शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र पहनना चाहिए। कारण यह है कि हर रोज पहने हुये वस्त्रों पर धूल और प्रदूषित विषाणुओं का प्रादुर्भाव होता है, दुष्प्रभाव होता है। हर रोज कपडे बदलने और उसे धोने से रोग संक्रमण की संभावना नहीं के बराबर हो जाती है। हमारा शुद्ध आचरण रहता है।

3) आज तो हम करोना के महामारी के वैश्विक संकट से गुजर रहे हैं। करोना हमारे श्वास को प्रभावित करती है और नाक द्वारा गला और हृदय तक प्रभावित कर जाती है तथा और सांस लेने में दिक्कत हो जाती है। ऑक्सीजन (oxygen) की कमी महसूस होती है। हमारा ऑक्सीजन लेवल 94% होना अनिवार्य है। इसीलिए इस पर उपाय सुझाया गया है।

1) मास्क पहनें /Mask –up।
2) दो गज की दूरी अपनाए।
3) बार-बार हाथ और चेहरा और मुह धोते रहें।
4) बिना कोई कार्य से घर के बाहर न निकलें और अनावश्यक प्रवास यात्राओं को रद्द करें।

सावधानी बरतना ही हमारी स्वास्थ्य सुरक्षा है। Prevention is better than cure

कोविड से बचने के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने प्रभावी ठीकाओं का आविष्कार किया है और उसे संपूर्ण भारत में कोविड पर नियंत्रण पाया गया है। हमारे वैज्ञानिकों ने कोवैक्सीन(Co Vaccine) कोवि-शील्ड (Covishield) के आविष्कार किया है और सफलता से उपयोगी पाया गया है। संपूर्ण भारत में इसका टीकाकरण किया गया है। उसका पहला और दुसरा डोज लेने के बाद भी अभी अभी तो तीसरा डोस (Dose)का भी आविष्कार हुआ है। यह डोज (Dose)नौ महीने के बाद लिया जा सकता है। और हम निश्चित स्वस्थ रहेंगे। सावधानी ही सुरक्षा है। सभी के बूस्टर डोस लेना हमारे हित में होगा और हम कोविड पर विजय पायेंगे।

हमारा परिसर

जैसे हम स्वस्थ रहने के लिए साफ-सुथरा स्वच्छ रहना चाहते हैं। अच्छे विचार आचरण रखते हैं। वैसे ही हमारा पर्यावरण को भी साफ सुथरा, स्वच्छ रखना हमारी जिम्मेदारी है। हम अपना परिसर हमेशा साफ सुथरा रखें। National Green Tribunel ने तो गाईड लाईन दी है कि कहीं पर भी कूड़ादान नहीं होगा। Dust bin are

banned कुड़ादान पर कायदे से और NGT नियमों के अनुसार बंदी लाई गई है । अभी हमारे कोई भी बस्ती (Colony) में कुड़ादान नही रखा जाएगा ।

हमें हमारा कूड़ा स्वयं ही निरस्त(Dispose) करना होगा । वह इस प्रकार - किचन गार्डनिंग और किचन कंपोस्टिंग। हमारे घर का कूड़ा विभाजित कर देखा जाए तो ज्यादातर किचन वेस्ट होता है जो कि जैविक खाद के रूप में हम उपयोग में ला सकते हैं । इसीलिए NGT ने सुझाव दिया है, किचन वेस्ट कूड़ादान में नही फेंकना चाहिए । इसीलिए NGT नियमों के अनुसार महा नगरपालिकाओं ने कूड़ादान ही हटा लिए हैं और सुझाव दिए गए हैं कि हर परिवार अपने ही परिसर में 2x2x2 फिट का गड्ढा करके हर रोज का किचन वेस्ट और सभी प्रकार का वेस्ट इसमें डाला करें और उसपर एक मिट्टी का स्तर (Layer) डालें और उस मिट्टी पर पानी का छिडकाव करते रहें । हर रोज ऐसे करने से 29 दिन में यह हमारा जैविक खाद (compost) बन जायेगा । यह अच्छी तरह से तैयार होने के बाद इसे हम हमारे पेड़ पौधों में जैविक खाद के रूप में प्रयोग में ला सकते है । यह जैविक खाद इतना प्रभावित होता है कि पेड पौधों की वृद्धि होकर फल और फूल अच्छी मात्रा में मिल जाते है और हमारे परिसर और पर्यावरण की शोभा बढाते हैं, सुंदरता बढ़ाते हैं ।

दैनिक जीवन में हम अपनी बुनियादी बातें भूल चुके है । अक्सर ही कोई सुर्योदय पूर्व नींद से जागता होगा । जागता भी होगा तो वह कभी सूर्य नमस्कार और आसन करने की कोशिश नहीं करता है । आलस निकालने के लिए चाय की चुस्की लेगा । टी वी के आगे आ बैठेगा । फिर नाश्ता, खाना सभी टी वी के सामने टी वी देखते-देखते मिल जायेंगे । फिर ऑफिस और ऑफिस से घर और टी वी । यह हमारी दिनचर्या बन चुकी है । यदि टी.वी नहीं तो हाथों में मोबाईल फोन जरूर होता है । मोबाइल ने तो इतना बड़ा आविष्कार किया है कि सभी कुछ हम मोबाईल पर पा सकते है । देख सकते है । मोबाईल ही हमारी दुनिया बन चुकी है । तुरंत कार्यसफलता मिलती है । आज तो पोस्ट ऑफिस अक्सर ही लोग जाते हैं । हम हमारे मोबाईल से एसएमएस, एमएमएस, ईमेल, पैसों का ट्रांसफर, ट्रैंसैक्शन, वीडियो कॉल आदि कर सकते है । कितना आसान तरीका हो गया है । इलेक्ट्रानिक्स तकनीक हमारे काम आयी है और समय और पैसों की अचूक कार्य सिद्धांत कर दिखा रही है । इसलिए यह एक लोकप्रिय साधन हो गया है । मोबाईल अगर हमारे हाथ में है तो दुनिया की सारी चीजें हमारी हाथों में होती है । एक क्लिक से हम तुरंत देख सकते है पा सकते हैं आदेश कर सकते हैं । चीजों के बिलों का भुगतात, आरक्षण, खरीदी, बिक्री घर बैठे कर सकते हैं । अभी तो वीडियो मीटिंग भी वैश्विक स्तर पर की जा रही है ।

इस करोना महामारी में तो यह वीडियो कॉफरेंस और ऑनलाइन ऑर्डर बिज़नस कारगर सिद्ध हुआ है । और हम सभी को इसकी सुविधा मिल चुकी है । यह एक तकनीकी आविष्कार है । वर्क फ्रम होम/ऑनलाइन ऑफिस सरल और अति शीघ्र काम करने का आसान तरीका है । किसी रुकावट बिना कार्य करने का आसान तरीका हो चुका है । आज वह जमाना जा चुका है जहां हम बाबुओं के और कार्यालयों के चक्कर काटा करते थे । अभी तो 1097 दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने तो हेल्पलाईन निकाली है । कोई भी सेवा के लिए यह नंबर डायल करने से महानगर पालिका अधिकारी हमें संपर्क करके उसका समाधान हेतु हमारे सेवा में अधिकारी घर पर भेजेंगे और हमारी समस्या का समाधान करेंगे । यह तकनीकी सेवा एक आविष्कार में बदल चुका है । रेलवे ने भी 139 सेवा का नंबर दिया है । डायल करे और जानकारी पाएं । वैश्विक करोना महामारी में अपने आपको संभालना असंभव हो जाता, लेकिन हमारी सूझबूझ और वैक्सीन के आविष्कारों से तो हमें वरदान ही मिला है । हर संकट की स्थिति में हमें समाधान मिला है । महामारी से बचाव हुआ है ।

सावधानी ही सुरक्षा है, सावधान रहें सुरक्षित रहें ।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारतियार

डॉ.एन गुरुमूर्ति, वरिष्ठ अनुवादक

श्री.सुब्रह्मण्य भारतियार भारत के महान कवि, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थे। उन्हें महाकवि भारतियार के रूप में जाना जाता था। प्रशंसापरक विशेषण महाकवि का अर्थ है - महान कवि। उन्हें भारत के महानतम कवियों में से एक माना जाता है। राष्ट्रवाद और भारत की स्वतंत्रता पर आधारित उनके गीतों ने तमिलनाडु में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के लिए जनता को एकजुट करने में मदद की।

सुब्रह्मण्य भारतियार का जन्म 11 दिसंबर, 1882 को तमिलनाडु के तिरुनेलवेली ज़िले के एट्टयपुरम नामक गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम सुब्बैया था। उनके पिता चिन्नस्वामी अय्यर थे और उनकी माता लक्ष्मी अम्माल थीं। सात साल की उम्र में सुब्बैया ने तमिल में कविताएं लिखना शुरू कर दी थीं। जब वे ग्यारह वर्ष के थे, तब उन्होंने इस तरह लिखा कि विद्वान लोग भी उनके महान ज्ञान और कौशल की प्रशंसा करते थे। ग्यारहवें वर्ष में, सुब्बैया ने महसूस किया कि उसे अपनी साख स्थापित करनी होगी। उन्होंने विद्वानों की सभा में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को एक चुनौती दी कि वे बिना किसी पूर्व सूचना या तैयारी के किसी भी विषय पर बहस में उनसे मुकाबला करें। प्रतियोगिता एट्टयपुरम दरबार की एक विशेष बैठक में आयोजित की गई थी जिसमें राजा (शासक) स्वयं उपस्थित थे। चुना गया विषय "शिक्षा" था। सुब्बैया ने प्रभावी ढंग से बहस जीत ली। सुब्बैया के जीवन का यह एक यादगार पल था। जिस लड़के को उस समय तक "एट्टयपुरम सुब्बैया" के रूप में जाना जाता था, उसे अब "भारती" के रूप में जाना जाने लगा। बाद में उसे पूरे विश्व में राष्ट्रवादियों और लाखों तमिल प्रेमियों द्वारा सम्मानपूर्वक "भारतियार" कहा जाने लगा।

जून 1897 में, पंद्रह वर्ष की आयु में उनकी शादी हुई और उनकी संतान-वधू चेल्लम्माल थी। भारती बनारस के लिए रवाना हुए जिसे काशी और वाराणसी के नाम से भी जाना जाता था। उन्होंने अगले दो साल अपनी चाची कुप्पम्माल और उनके पति कृष्णा शिवन के साथ बिताए। संस्कृत, हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं का उचित ज्ञान प्राप्त करते हुए, उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेश-परीक्षा अच्छे अंक के साथ विधिवत् उत्तीर्ण की। बनारस प्रवास भारती के व्यक्तित्व में ज़बरदस्त बदलाव लाया। बाह्य रूप से, उन्होंने एक मूंछ और एक सिक्ख पगड़ी पहन रखी थी और अपनी चाल में एक साहसिक परिवर्तन लाया था।

भारती : एक कवि और एक राष्ट्रवादी

ध्यातव्य है कि सुब्रह्मण्यम भारती के साथ तमिल साहित्य में एक नए युग की शुरुआत हुई थी। उनकी अधिकांश रचनाओं को देशभक्ति, भक्ति और रहस्यवादी विषयों पर लघु गीतात्मक उद्गारों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारती मूलतः एक गेय कवि थे। "कण्णन पट्टू" " निलावुम वानमीनुम काट्रुम " "पांचाली सबदम्" "कुयिल पाट्टु" भारती की महान काव्य-रचना के उदाहरण हैं।

भारती को राष्ट्रीय कवि के रूप में माना जाता है क्योंकि उनकी देशभक्ति की कविताओं की संख्या के कारण उन्होंने लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने और देश की मुक्ति के लिए सख्ती से काम करने का आह्वान किया। उन्होंने केवल अपने देश पर गर्व करने के बजाय एक स्वतंत्र भारत के लिए अपने दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया। उन्होंने 1908 में सनसनीखेज "सुदेस गीदंगल" प्रकाशित किया।

सक्तिप्पेय दान तलैयोडु तलैगल मुट्टि...........
अन्नै अन्नै आडुंकूत्तै नाडच्चेय्दाय येन्नै।

कुछ साहित्यकारों का मानना है कि द्रौपदी की कहानी पर आधारित पांचालि सबदम् में भी भारत-माता का ही गुणगान किया गया है। पांडव मानो भारतवासी हैं, कौरव अत्याचारी अंग्रेज़ हैं और महाभारत का युद्ध ही मानो हमारे भारत देश का स्वतंत्रता संग्राम है। इसमें समाज में नारीत्व के उत्थान के भी झलक मिलते हैं।

पट्टिनिल उडैयम् पंजिनिल आडैयुम् पण्णि मलैगळेन वीदि कुविप्पोम्।
कट्टि द्रवियंगल कोण्डु वरुवार कासिनि वणिगरुक्कु अवै कोडुप्पोम्।

अर्थात् रेशमी और सूती कपड़े हम बनाएँगे जिनका पर्वतों सा ढ़ेर बनाएँगे।
विश्व के व्यापारियों को देंगे जो हमें धन-संपत्ति बख्शेंगे।

भारती ने कहा है कि यद्यपि भारतवासियों को विभाजित करेंगे तथापि वे एक ही माता के सपूत हैं तो ऐसे में विदेशियों के हस्तक्षेप की ज़रूरत ही नहीं होगी। सन् 1910-1920 की अवधि में ये कहते हैं कि उन्मुक्त भारत ऐसा हो जहाँ जात-पाँत का कोई भेदभाव नहीं होगा। इन्होंने भारत की सेना, जहाज़, उद्योगों में विनिर्माण की सफलता और सार्वभौमिक शिक्षा के विकास का भी उल्लेख किया है। बंगाल डेल्टा के अतिरिक्त पानी को अन्य ज़रूरतमंद क्षेत्रों द्वारा प्रयोग और श्रीलंका के लिए सेतु का भी इन्होंने ज़िक्र किया है।

तनि ओरु मनिदनुक्कु उणवु इल्लयेनिल इंद जगत्तिनै अ़षित्तिडुवोम्।

भारती ने भुखमरी के बारे में कहा है कि यदि कोई व्यक्ति भुखमरी से तड़पता है तो हम सारे विश्व का नाश कर देंगे।

पत्रकार के रूप में भारती

भारती के जीवन के कई वर्ष पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यतीत हुए। भारती ने एक युवा के रूप में एक पत्रकार के रूप में और नवंबर 1904 में "स्वदेसमित्तिरन" में एक उप-संपादक के रूप में अपना भावी जीवन शुरू किया।

भारती ने मई, 1906 में दिन का प्रकाश देखा। आदर्श वाक्य के रूप में फ्रांसीसी क्रांति, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के तीन नारे घोषित किए। इन्होंने तमिल पत्रकारिता में एक नया मुकाम हासिल किया। भारती ने अपने क्रांतिकारी उत्साह का प्रचार करने के लिए लाल कागज़ में साप्ताहिक छपवाया था। तमिलनाडु में राजनीतिक कार्टून प्रकाशित करने वाला पहला अखबार "इंडिया" था। उन्होंने "विजय" जैसी कुछ अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन भी किया। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जल्द ही पत्रिका के संपादक की गिरफ्तारी के लिए "इंडिया" कार्यालय के दरवाज़े पर एक वारंट इनका इंतजार कर रहा था। 1908 में इस बिगड़ती स्थिति के कारण भारती ने उस समय एक फ्रांसीसी क्षेत्र के अधीनस्थ पांडिच्चेरी जाने का फैसला किया और "इंडिया" पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के प्रकोप से बचने के लिए भारती कुछ समय के लिए पांडिच्चेरी में रहे।

अपने निर्वासन के दौरान, भारती को स्वतंत्रता आंदोलन के उग्रवादी विंग जैसे ऑरोबिंदो, लाजपत राय और वी.वी.एस. जैसे कई नेताओं के साथ घुलने-मिलने का अवसर मिला। भारती के जीवन के सबसे लाभदायक वर्ष, पांडिच्चेरी में बिताए गए वह दस वर्ष ही थे।

पांडिच्चेरी से उन्होंने मद्रास के तमिल युवाओं को राष्ट्रवाद के मार्ग पर चलने के लिए निर्देशित किया। इसने भारती के लेखन के प्रति अंग्रेजों के गुस्से को बढ़ा दिया क्योंकि उन्हें लगा कि यह उनका लेखन है जो तमिल युवाओं की देशभक्ति की भावना को प्रेरित और प्रभावित करता है। भारती महात्मा गांधी से 1919 में मद्रास में राजाजी के घर में मिले। भारती ने नवंबर 1918 में कडलूर के पास ब्रिटिश भारत में प्रवेश किया और उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में भी, उन्होंने अपना समय स्वतंत्रता, राष्ट्रवाद और देश के कल्याण पर कविताएँ लिखने में बिताया।

अपनी युवावस्था के शुरुआती दिनों में वी.ओ.चिदंबरम, सुब्रह्मण्य शिवा, मांडयाम तिरुमलाचारियार और श्रीनिवासचारी जैसे राष्ट्रवादी तमिल नेताओं के साथ उनके अच्छे संबंध थे। इन नेताओं के साथ वे ब्रिटिश शासन के कारण देश के सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा करते थे। भारती भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक सत्र में भाग लिया करते थे और उग्रवादी भारतीय राष्ट्रीय नेताओं जैसे बिपिन चंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और वी.वी.एस. अय्यर के साथ राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा करते थे। बनारस अधिवेशन (1905) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सूरत

अधिवेशन (1907) में उनकी भागीदारी और गतिविधियों ने उनके देशभक्ति के उत्साह के बारे में कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रभावित किया। भारती ने कुछ राष्ट्रीय नेताओं के साथ अच्छे संबंध बनाए रखा और राष्ट्र पर अपने विचार साझा किए और राष्ट्रवादी आंदोलन को मज़बूत करने के लिए अपने सुझाव दिए। निस्संदेह, उनके बुद्धिमान सुझावों और राष्ट्रवाद के लिए दृढ़ समर्थन ने कई राष्ट्रीय नेताओं को फिर से जीवंत कर दिया। इस प्रकार भारती ने भारत की स्वतंत्रता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

एक समाज-सुधारक के रूप में भारती

भारती जाति-व्यवस्था के खिलाफ थे। उन्होंने घोषणा की कि केवल दो जातियाँ हैं- पुरुष और महिला और इससे ज्यादा कुछ नहीं। सबसे बढ़कर, उन्होंने स्वयं अपना पवित्र धागा हटा दिया था। उन्होंने कई दलितों को पवित्र धागे से भी सजाया था। वह मुसलमानों द्वारा चलाई जाने वाली दुकानों में बिकने वाली चाय लेते थे। वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ सभी त्योहारों के अवसरों पर चर्च में जाते थे। उन्होंने दलितों के मंदिर में प्रवेश की वकालत की। अपने सभी सुधारों के लिए उन्हें अपने पड़ोसियों के विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन भारती बहुत स्पष्ट थे कि जब तक भारतवासी भारत-माता की संतान के रूप में एकजुट नहीं होंगे, वे स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकते। वे महिलाओं के अधिकारों, लैंगिक समानता और महिला-मुक्ति में विश्वास करते थे। उन्होंने बाल विवाह प्रथा और दहेज का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

भारती की मृत्यु 11 सितंबर, 1921 को हुई थी। भारती ने एक कवि, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक के रूप में न केवल तमिल समाज पर बल्कि पूरे मानव समाज पर बहुत प्रभाव डाला था। उन्होंने जो कुछ भी उपदेश दिए उन सबका उन्होंने पालन किया और यहीं पर उनकी महानता प्रकट होती है। भारत की स्वतंत्रता के बारे में औपनिवेशिक काल के दौरान उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी उनके निधन के ढाई दशक बाद सच हुई। एक गौरवशाली भारत के बारे में उनकी दृष्टि स्वतंत्रता के बाद के युग में साकार हुई। भारती अपने लिए नहीं बल्कि लोगों और राष्ट्र के लिए जीते थे। इसलिए उन्हें सम्मानपूर्वक भारतियार कहा जाता है।

आडुवोमे पळ्ळु पाडुवोमे नम् भारतियिन् पुगऴ् दन्नै पाडुवोमे.........

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर

रखा जाता सकता है तो उसका

माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

- सुब्रह्मण्य भारती

भेद-भाव की राजनीति

देवी नांगरानी, साहित्यकार

उस एक छोटे से पर्चे ने मुझे मेरी औक़ात की याद दिलाई और उस महान व्यक्ति की, जिसने समाज में अपनी जात के लिए, अपने देशवासियों को मूल सिद्धांतों की नीव पर उनके जीवन सुधार के लिए एक नया प्रतिष्ठान स्थापित किया। डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर आज भी मेरे ध्येय है और रहेंगे, जिनके पदचिन्हों पर चलकर मैं भी अपनी जात के लिए, अपने पिता की इच्छापूर्ति के लिए जितने क़दम आगे बढ़ाता हूँ, उससे कहीं ज़्यादा क़दम पीछे की ओर धकेला जाता हूँ। एक वो थे, एक मैं हूँ!

याद है वह दिन जब मैं मैट्रिक पास करके कॉलेज की दाखिला के लिए ऑफिस के बाहर लम्बी कतार में जाकर खड़ा हुआ। कहने कहलवाने के बहुत सारे यत्न किए। मेरे दादा, पिता और स्कूल के प्रधानाचार्य सुखीराम माधवन ने भी यही कहकर ज़मानत दी कि मैं एक ज़हीन, मेधावी शागिर्द हूँ, बिना ट्यूशन के खुद पढ़ाई करके 95% अंक ले पाया हूँ। पर कुछ भी नहीं हुआ, किसी की एक न सुनी। कॉलेज का ट्रस्टी जाना-पहचाना विशिष्ट आदमी था, पर ऐन वक़्त पर उसने भी अपना रुख बदलने में देर न की। यह सब मेरे साथ हुआ, क्यों हुआ कुछ समझ में आकर भी नहीं आया। आता भी कैसे? और उस प्रयास का प्रतिफल मुझे कालेज में दाखिला न देकर, वहां के प्रतिनिधियों ने यह जतलाया कि मैं कमतर जात का पददलित हूँ। यहाँ दाखिला होनी संभव नहीं। दूसरा कारण दाखिला न मिलने का यक़ीनन यह भी रहा होगा, कि मैंने डोनेशन के नाम पर काला धन नहीं दिया। अपनी जात की कमतरी का लेबल अपने माथे से नहीं हटा सका। हाथ में थमा कागज़ यही जतला रहा था-दाखिला न मिलने की नकारात्मक उपाधी थी उसमें।

परिवार के बीच में रहते, न कोई चालबाजी, न कोई शातिरता देखी, न सीखी। न ही कभी बाहर और भीतर की दुनिया में कोई भेद-भाव जाना। अपने काम से काम रखने वाले परिवार भी कहाँ किसी चाहत को अंजाम देने की कोशिश करते हैं। सिर्फ़ उस एक चाहत के लिए, जो मेरे बाबा ने अपने सीने में पाल रखी थी कि मैं पढ़ लिख कर उनका, उनकी बिरादरी का, उनकी जात का किसी तरह उद्धार करने का प्रयास करूँ।

मैं जिस परिवार में पलकर बड़ा हुआ, वहां मेरे जागने से पहले मैंने माँ-बाबा को झाड़ू और टोकरी लेकर घर के बाहर जाते हुए, और भरी दुपहरी घर लौट कर अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जुटते हुए देखा। कुछ और बड़ा हुआ तो शिक्षा के मैदान में खड़ा कर दिया गया, जहाँ भी दिक़्क़तें मेरी आसानियों को दुश्वार करती रहीं। और अब सिलसिलेवार यादों के पश्चात महसूस कर रहा हूँ कि अब वक़्त आया है कि मैं किसी न किसी तरह परिवार में सहकार देकर, पिता के उन बूढ़े कंधों का बोझ कम करूँ। याद आया बाबा का कहना-

'तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो, यह उम्र है पढ़ाई करने की, पढ़कर किसी ओहदे के क़ाबिल बनने की। जब क़ाबिल बन जाओगे तब मेरा हाथ बंटा पाओगे और आगे चलकर अपने परिवार का भी भार संभालकर हमारा और जाति का सहारा बन पाओगे।'

'बाबा, पर मैं आपको इस तरह दिन रात मेहनत की चक्की में पिसते हुए नहीं देख सकता। आपकी सेहत भी दिनोदिन आपका साथ छोड़ती जा रही है। अब मैं मेट्रिक पास हूँ, कोई छोटी मोटी नौकरी करके आपकी मदद कर सकता हूँ। इस समय मेरा कॉलेज पढ़ना इतना जरूरी नहीं, जितना आप को काम में हाथ बंटाना। बाबा आपने पिता व सारथी बनकर मुझे इस क़ाबिल बनाया है कि मैं शिक्षा की रोशनी में अपना भविष्य साफ़ देख पा रहा हूँ। मैं आपकी चाहत को अंजाम दूंगा, यह मेरा वादा है आपसे।'

'आदित्य बेटे मैं चाहता हूँ कि तुम कॉलेज पढ़ कर किसी अच्छी नौकरी को हासिल करो। तब कहीं जाकर हम भंगियों की जात वालों का सर उठाने लायक होगा। अपनी क़ाबिलियत से अनपढ़ बच्चों को इस गंदगी की दलदल से निकाल कर ज्ञान की रोशिनी में एक साफ़ सुथरी ज़िंदगी की राह पर ले जाओ। यही मेरी दिली तमन्ना है, यही ख्वाइश। इसी कारण मैंने बचपन में कभी तुझे यह झाड़ू लेकर, घर घर का कचरा उठाने के लिए अपने साथ नहीं लिया, और न ही तुझे मुन्सिपालिटी के स्कूल में दाखिला दिलाई।'

'पर बाबा अब तो मैं हाई स्कूल पास, आपकी बताई राह पर चलने का हर प्रयास कर रहा हूँ। आपकी सहायता करना मेरी ख्वाइश है और तो और मैं आपके सर पर लगी तोहमत के दाग़ को भी धोना चाहता हूँ। मैं अकेला ही इस हकीक़त का चश्मदीद गवाह हूँ ... भले ही दुनिया माने या न माने......!'

'बस बेटा बस, एक लफ्ज़ ज़्यादा न कहना....मैं सुन नहीं पाऊंगा।'

'....... पर बाबा जो गुनाह आपने किया ही नहीं है उसका बोझ अपने दिल दिमाग पर क्यों ढो रहे हैं। अब मैं बड़ा हो गया हूँ, सब कुछ साफ-साफ देख सकता हूँ, सच झूठ को परख सकता हूँ। आप उस अनचाही सोच को ज़हन से क्यों निकाल कर फेंक नहीं देते?'

'बेटा ये गुलामी की जंजीरें जो कराए वह कम है। मेरी जात मेरे काम से पहचानी जाती है, मेरे ज़मीर की रोशनी से नहीं। यहाँ का तहसीलदार सफेद कपड़े पहन कर अपने शाही घर में बैठे बैठे हमारी गुरुबत का नंगा नाच देखता है। उसकी गंदी नज़र गंदगी उठाने वाली बाल्टियों पर नहीं, उठाने वाली हमारी बहू-बेटियों पर रहती है, उनके गंदे कपड़ों की तहों में छुपे उनके शरीर पर होती है। यह सब हकीक़तें हमें उन औरतों के अश्कों की जुबानी मालूम होती हैं। सफ़ेद कपड़ों के पीछे उनकी काली नियत, काले कारनामे के चिट्ठे को नहीं छुपा पाती। उसने तुम्हारी मां की बेइज़्ज़ती करके उसके नारीत्व को ललकारा। वह यह बर्दाश्त न कर पाई। एक दिन मौका देख कर उसने तहसीलदार को औताक में बंद करके, मिट्टी का तेल छिड़ककर उसे जिंदा जला दिया और फिर खुद को भी उस आग के शोलों में अर्पण कर दिया। हमारे समाज की औरतें कब तक यह अग्नि-परीक्षा देती रहेंगी?'

'पुरानी बात को दोहरा कर इस तरह खुद को दुखी न कीजिए बाबा। अम्मा ने खुद को मुक्त कर दिया, पाप की भावना ने शायद उसके शरीर को पाप का भागीदार बना कर छोड़ा और उसने पापी को सज़ा देकर, खुद को भी उस आग में भस्म करते हुए अग्नि परीक्षा दी। पर अब ऐसा नहीं होगा....बाबा, नहीं होगा। '

'मेरी एक बात हमेशा याद रखना बेटे, ज़ालिम का ज़ुल्म न कभी भूलना, न माफ़ करना। यह सरासर बुज़दिली होगी।' कहते हुए आदित्य के पिता ने धोती के छोर से अपनी पीढ़ा को झटक कर लम्बी सांस ली।

'यह सब तो ठीक हैं बाबा, पर मुझे इसमें अम्मा की कोई बुज़दिली दिखाई नहीं देती। वह तो अपने सतीत्व व आत्मसम्मान का कुल हिसाब कुछ यूं पूरा कर गई, जो बहुत ही दिलेरी का कार्य है, जिस पर गर्व किया जा सकता है।' अब आदित्य की आवाज़ में आक्रोश शामिल रहा।

'पर सभी गुनहगार को सज़ा देकर, अपने स्वाभिमान को भी स्वाहा करें, यह भी तो ठीक नहीं है न बेटा। हमारे इस गंदे क्षूद्र समाज में कितने बेगुनाह सज़ा भोगते हैं और कितने गुनहगार आज़ाद घूमते हैं, इसका कोई हिसाब नहीं।

उनकी पहचान नामुमकिन है क्योंकि उनके तन पर मुजरिमों की या कैदियों की वर्दी नहीं होती। वे आज़ाद रहकर गुनाह कर रहे हैं, कौन उनको जंजीरों में बाँध रहा है?' ' बाबा छोड़ो इन बातों को, गुनाह और बेगुनाही की दलदल में क्यों अपने आपको मैला कर रहे हैं? आपका इशारा मैं समझ रहा हूँ। आप चिंता न करें बाबा, मैं अपनी रहनी को अपनी करनी में शामिल करके अंधेरे से उजाले को चीर कर लाऊंगा।'

'बेटा तेरी सदभावना मेरे लिए खुदा की ओर से आई हुई नियामत है। फिर भी सोच-समझकर किसी मुमताज़ जाने पहचाने शख्स या किसी बहुत ही बड़े इज्ज़त दार आदमी की मदद से गांव में ही किसी कॉलेज में दाखिला लेकर आगे पढ़ने जाओ। मेरी ज़्यादा चिंता न करो।'

पिता के मनोभावों का आदर करते हुए आदित्य सोचने लगा, ठीक वैसे ही जैसे शायद बाबा का ज़हन सोच रहा था। अगर भंगियों की औलाद भंगी बनकर गांव में सेठ, साहूकारों की गंदगी साफ़ करती रहेगी तो अपनी पहचान कैसे पा सकेगी? अपनी जात के कंधों से यह सलीब उतारने के लिए किसी को तो मसीहा बनना पड़ेगा, पीड़ियों से चल रहे इस पेशे को इल्म की रोशनी से उजगार करना होगा। हज़ारों बच्चों के माता-पिता यह काम करते करते जवानी से बुढ़ापे की दहलीज़ तक आ पहुंचे हैं। बस बड़ों के नक़्शे क़दम पर चलते-चलते वे भी समाज की गंदगी को उठाते रहेंगे, और यही विरासत शायद आने वाली पीढ़ी के साथ आगे दूर तक जाएगी।' सोचते सोचते आदित्य का मन फिर नए जोश से भर गया। पिता के पांव छूकर अपना नसीब आज़माने पैदल ही एक दिशा में चल पड़ा।

पढ़ने में तेज़, लिखने में माहिर, सोचने की तीक्ष्णता रखने वाला आदित्य अपने दिलो-दिमाग में एक सपना लिए हुए था। उसके ज़हन में अपने लिए, अपनी जाति के लिए, उनके उद्धार के लिए एक ऐसा सपना था जिसके पूरा होने से आने वाली पीढ़ी को फिर से नया जीवन जीने का अधिकार मिलता।

अपनी काबिलियत से उसने स्कूल के प्रधानाचार्य सुखीराम माधवन का मन मोह लिया था। अपने ख़यालों की तर्जुमानी करते उसने अपने लिए कुछ न सही, पर अपनी जात के लिए कुछ करने की जिम्मेवारी को अपने कंधों पर उठाना चाहा। बस सोचते सोचते प्रधानाचार्य सुखीराम के घर की चौखट पार करते उसके पाँव आँगन में आकर रुके। उनके चरण स्पर्श के लिए झुकते ही उसने सुना.....

'अरे आदित्य यह क्या, तुम छुट्टियों में भी मेहनत कशी से बाज़ नहीं आते। कुछ आराम कर लेते, कुछ मन बहलाव के लिए मौज मस्ती कर लेते। मैट्रिक का नतीजा तो निकला है, पर कॉलेज की दाखिला लेने में अभी 15 दिन बाकी है। आखिर तुम क्या करने की सोच रहे हो?'

'सर मैं उसी काम से आपके सामने हाज़िर हुआ हूँ। आपको तो पता है, बाबा अपनी जात के सिरमोर है, भले समाज उन्हें गुनहगार समझे। लोग कहते हैं, बाबा ने ही यह सब कुछ करने के लिए अम्मा को भड़काया था!'

'हूँ ....हूँ....!'

'अगर बाबा ने ऐसा चाहा भी हो, तो भी मेरी माँ ने भी तो अपनी जान गवाई।'

'हां, यह तो है। जो हुआ वह नहीं होना चाहिए था। सच का सामना करना फिर भी मुश्किल है।" कहते हुए सुखीराम जी ने एक लंबी सांस ली।

'पर जो हुआ वह हुआ, अब आगे की परिस्थितियों को संभालना है। आप बीच की कोई राह...!'

'...राह पेचीदा लगती है। सभी तहसीलदार, ठेकेदार एक मत विरुध खड़े हैं। उनका सोचना है कि बंधुओं की औरतें अगर इस तरह निर्णयात्मक बागडोर अपने हाथों में ले लेंगी तो इज्ज़त किसी की भी नहीं बचेगी।'

'यह उनका विचार है, आप क्या सोचते हैं..?' अनगिनत सवाल आदित्य की आँखें लिए हुई थीं।

'हां यह उनका विचार है। वे समाज के स्थापित स्तंभ है। कुछ भी कह सकते हैं, कुछ भी कर सकते हैं। ये स्कूल कॉलेज उन्हीं के दम से ही चल रहे हैं, इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता।'

'पर अपनी इज्जत के बचाव के लिए नारी जाति पर कलंक लगाना भी तो ठीक नहीं? गुनाह की गन्दगी में वे उतरें और सज़ा नारी जाति पाए, क्यों?'

'समाज की रीति-रस्मों को बनाना-बिगाड़ना बड़े-बड़े सूबेदारों का काम है आदित्य, तुम्हारा-मेरा नहीं।'

'पर सर, कोई तो उन्हें एहसास दिलाने वाला होगा कि नारी घर का मान, समाज की मर्यादा है, फिर चाहे वह किसी भी जाति की हो। क्या उनकी रक्षा करना हम मर्द जात का धर्म नहीं है?'

'तुम धर्म-अधर्म की बात को छोड़ दो, यह बात उन्हें कौन समझाए?' सुखीराम कहते कहते उसकी ओर निहारने लगे।

'लगता है मुझे ही कुछ करना पड़ेगा सर। बस आप मुझ पर भरोसा रखिए और मेरी रहबरी करते जाइए।' कहते हुए आदित्य ने प्रधानाचार्य सुखीराम के सामने अपनी तजवीज़ रखी, और उनको प्रणाम करते हुए बाहर निकल आया।

चार साल गुजर गए। कॉलेज में दाखिला न मिलनी थी, न मिली। पर आदित्य ने हिम्मत नहीं हारी। दिन रात मेहनत करके अपने बस्ती के बच्चों को तालीम की रोशनी से मुखातिब किया। उन्हें पढ़ना लिखना सिखाने की कोशिश की। ज़ुल्म के सामने बगावत की आवाज ऊंची की, इस क़दर कि किसी भी घर या घर के बाहर का कचरा उठाना व साफ करना बंद कर दिया। गांव में हलचल मच गई, आग भड़की। इस हलचल में नारियों की सिरमोर रही 'सुजाता', प्रधानाचार्य सुखीराम माधवन की बेटी। वह आदित्य की हमउम्र थी, उसके साथ पढ़ते, उठते-बैठते, उसे पसंद भी करने लगी थी। यह बात सुखीराम जी से भी छुपी न थी। एक तरह से दो जवान दिलों के मिलन में उनकी हामी भी शामिल थी।

समाज सुधार की इस पहल में उनका भी सुजाता के माध्यम से यही योगदान रहा कि जाति भेद को रद्द किया जाय। समान अधिकार पाकर ही तो नौजवान पीढ़ी कुछ आगे बढ़ पायेगी। वर्ना शिक्षा का होना बेमतलब होता। समस्या हो और समाधान न हो, तो कोशिशें निराधार होने लगतीं हैं। इस नई समस्या का समाधान निकालने के लिए पंचायत मुकर्रर हुई। मंगलवार के दिन गांव के बाहर मंदिर के सामने भीड़ जमा हुई। प्रधानाचार्य सुखीराम जी ने अपनी बेटी सुजाता का विवाह आदित्य के साथ संपन्न करने की ठानी ली और तय किये गए दिन रीति रस्मों के साथ सम्पूर्ण किया। प्रधानाचार्य सुखीराम जी के निमंत्रण पर गांव के कई जाने माने वरिष्ठ मान्यता प्राप्त लोग एकत्रित हुए। मगर भले घराने की बेटी का विवाह एक अछूत जात के लड़के से होता देखकर उलटे पाँव लौटने लगे। फिर भी समारोह में कोई भी विघ्न नहीं पड़ा, सभी बड़ी ही तन्मयता के साथ कार्य को संपन्न करने में लगे रहे।

पंचायत ने एकमत होकर फिर एक फैसला किया और प्रधानाचार्य को पैग़ाम भेजा कि अगले मंगलवार के दिन पंचायत में सुजाता को भी आदित्य के साथ गाँव से निकालने का हुकुम दिया जाएगा। मंगलवार के दिन पंचायत के पंच परमेश्वर व उनके मुरीद और तमाशा देखने वालों की भीड़ जमा थी। आदित्य भंगी परिवार का, सुजाता एक हिंदू परिवार की पढ़ी लिखी, सौम्य लड़की। ऐसी जात के लड़के से शादी कैसे कर सकती थी? उनकी शादी से समाज की अधोगति हो यह पंचों को स्वीकार न था। और यही निर्णय लेकर उस नव-दम्पति को गाँव से बाहर निकल जाने का आदेश दिया गया। इस आदेश के विरोध में सुजाता ने सभा के पंचों के सामने अपनी मर्जी का इज़हार करते हुए कहा-' मैं 18 साल की बालिग पढ़ी-लिखी लड़की हूँ, कानून के मुताबिक मैं अपना फैसला खुद करने के लिए मुख्त्यार हूँ। यह मेरी मर्ज़ी है कि मैं आदित्य के साथ शादी करूं। वह भंगी जात का है पर भंगी नहीं है। एक पढ़ा-लिखा सुलझा हुआ इंसान है। जितनी सभ्यता और मर्यादा उसमें है, शायद ही किसी साहूकार के बच्चे में हो। मैंने अपनी इच्छा को उसके सामने रखकर उसे और अपने पिता को मनाया। अगर उन्हें कोई ऐतराज नहीं है तो किसी और को ऐतराज़ क्यों होना चाहिए? अब धर्म-रीति से, कानून से, हम दोनों पति-पत्नी हैं? किसी राजनीति का कोई भी शास्त्र इस गाँव में उपयोग न हो तो बेह्तर है। यह हम दोनों का फैसला है कि हम इस गाँव से कहीं बाहर नहीं जा रहे हैं, यहीं रहकर वही सब कुछ करेंगे जो अब तक करते आ

रहे हैं। आपकी जात और हमारी जात में अब ज्यादा फर्क नहीं रह गया है, यह आप सभी जानते हैं। अपने अपने गरेबानों में झांक कर हर सवाल का जवाब खुद पाइए। यह जाति-भेद की राजनीति का खेल अब बंद कीजिए....!'

सरपंच निस्तब्ध! मुखिया मौन! फिर भी आदित्य की ओर देखते हुए एक सवाल उठाया गया-' तुमने क्या समझ कर यह नाता कबूल किया? क्या तुम्हें अपनी जात याद न रही, या सभी सीमाओं को तोड़ने की ज़िद पकड़ ली थी?"

'याद थी सरपंच साईं। यह भी याद है कि हमारी असली जात है इंसानियत, जो हर आदम की विरासत है। मैं पढ़-लिख कर अपनी जात को इस गंदगी से निजात दिलाने के लिए हमेशा से कुछ करना चाहता था। जब सुजाता ने मेरे सामने अपनी मर्जी रखी तो मुझे सोचने और गौर करने का मौक़ा मिला, और आदरणीय प्रधानाचार्य जी की अनुमति से यह निर्णय लिया। अब मर्यादा में रहकर सुजाता के साथ शास्त्र अनुसार शादी के बंधन में बंधा हूँ। मेरे मन में न कोई छल है, न कोई छलावा है तो फ़क़त प्रधानाचार्य जी के परिवार के लिए आदर और सम्मान, जिन्होंने विशाल ह्रदय से मुझे स्वीकारा है। यह हमारी जाति के लिए गर्व की बात है। अब सुजाता मेरी धरम पत्नी, हमारे घर की गृहलक्ष्मी और मर्यादा है।' ऐसा कहकर आदित्य ने अपनी जगह से उठकर सुखीराम जी से चरण छूकर आशीर्वाद लिया, फिर अपने पिता से आशीर्वाद मिलते ही उनके गले लग गया। पंचायत के मुखिया यह आचरण देखकर पथरा से गए। अब सुजाता के पिता ने उठकर पंचों की ओर रुख करते हुए कहा-' मुझे इस रिश्ते के लिए मंजूरी देने में कोई ऐतराज़ न था। आदित्य, एक सुशील, संस्कारी और सुलझा हुआ सभ्य, पढ़ा-लिखा क़ाबिल इन्सान है। अब तो वह मेरा जमाई और हमारी बिरादरी का सदस्य बन गया है। वह भंगी नहीं है, मेरी बेटी का सम्माननीय पति है, हमारे परिवार का सदस्य!'

पंच आंखें फाड़-फाड़कर प्रधानाचार्य सुखीराम की ओर देख रहे थे। आदित्य ने अपने दोनों हाथ जोड़कर पंचों को नमन करते हुए कहा-' मैं आदरणीय सुखीराम जी का सदैव कृतज्ञ रहूंगा, जिन्होंने मेरा जीवन सुधारने की खातिर यह कदम उठाने में मेरा साथ दिया। जाति-भेदभाव को दूर करके मुझे अपने गले लगाया। अपनी बिरादरी में शामिल करके मेरा और मेरी जात वालों का मान बढ़ाया है। यह एक बेमिसाल क़दम है जो इतिहास में दर्ज होगा। आपके सामने भी मेरी हाथ जोड़कर यही प्रार्थना है कि आप भी इस पावन कार्य के यग्य में हमें अपने आशीर्वाद का अभिदान दें। एक और घोषणा आज सभी के सामने कर रहा हूँ –'यह कि आज के बाद कोई भी भंगी या उसके परिवार वाले न आपके घरों के भीतर सफाई करेगा, और न बाहर ऑफिस में। सब अपना अपना काम खुद करेंगे, ताकि ऊंच-नीच जाति के फासले कम होकर मिटने लगें। हम सब एक से हैं और एक से अधिकार लेकर एक नव-निर्माणित युग का आरंभ करते हैं। आप ने मुझे अपनाया है इसके लिए आप सभी को फिर से प्रणाम करता हूँ।'

पंचों के पास कहने के लिए कुछ भी न था। अपने कपड़े झटककर खड़े हुए और अपनी अपनी औकात की पोटली अपने सर उठाकर चलते बने।

आदित्य ने अपने ससुर सुखीराम जी के पैर छूकर आशीर्वाद लिया और सुजाता ने आदित्य के पिता के चरण स्पर्श करके 'सौभाग्यवती हो' का आशीर्वाद पाया।

यह एक मिसाल थी जो समाज से बीच पनपते भेद भाव की दीवारों के बीच की दरारों को सिकुड़ने में मददगार रही। जात की पहचान के 'ताज' कितने सरों पर चढ़े और कितने ही सरो से उतरे। आखिर सभी आपस में दूध-शक्कर की तरह घुल मिल जाएंगे, इस बात की खुशबू हवाओं को मदहोश करती रही। नौजवान पीढ़ी के साथ एक नए युग का आरंभ हुआ जिसका जश्न मनाना लाज़मी रहा तो चलिए शामिल होते हैं महफ़िल में, क्योंकि मौका भी है, माफ़ी भी है....आइये, आपका स्वागत है!

मजदूर

पुरुषोत्तम कुमार
स्टेशन मास्टर/मैग्नसाइट जंक्शन

देश को सींचने वाले
अर्थव्यवस्था को संभालने वाले
रोज कमाकर खाने वाले
घरों को बोझ उन पर
परिवार की चिंता उनकी
बच्चों की पढाई का टेंशन
अपने गाँव से मीलों दूर
फुटपाथ पर सोकर
एक टाइम खाकर
हालात उनकी आज क्या है ?
उनके लिए मंदिर का कपाट बंद
मस्जिद का दरवाजे बंद
वैटिकन का द्वार बंद
सरकार की मदद नाकाफी
आखिर में हिम्मत उनकी जवाब दे गई

चल पड़े पैदल भगवान भरोसे
सिर पर टोकरी
बगल में बच्चे
पैरों में छाले पड़े हुए
फिर भी स्वाभिमान से भरे हुए
जिद्द उनकी सिर्फ एक ही थी
घर जाने पर अड़े हुए थे
भूख प्यास से मारे हुए थे
भारी दोपहरी में चलते हुए
बारिश तूफानों को सहते हुए
सरकार ने वादे किए अनगिनत
पर धरातल पर पहूँचा न अबतक
कंपनियों के मालिक धनासेठ हुए
इनके बदौलत
वो भी काम न आए इनके बुरे वक्त
आखिर इनकी गलती क्या थी ???

मेरी पहली यादगार दक्षिण भारत यात्रा

मोहन, कनिष्ठ अनुवादक
लोको शेड/ईरोड

करीब चार साल पहले मैंने अपनी पत्नी के साथ जनवरी के महीने में दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों का भ्रमण किया था। उन्हीं यादों और यात्रा के अनुभवों का आज मैं अपने लेख के जरिए आपसे साझा करना चाहता हूँ। चूंकि उस समय जनवरी का महीना चल रहा था तो, प्राकृतिक सौंदर्य और देवों की भूमि केरल हरियाली में दुल्हन की तरह सजा हुआ लग रहा था। दरअसल यह केरल और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों का संयुक्त भ्रमण था। सर्दियों के मौसम में घूमने के लिए दोनों राज्य प्राकृतिक सौंदर्य एवं सुहावने मौसम से भरे रहते है। मैंने अपने कार्यालय से यात्रा पास जारी करवाया और रेल टिकट बुक करा लिये। अब यात्रा भारतीय रेलवे से हो, तो यात्रा का आनंद चार गुना बढ जाता है। हमारी टिकटें द्वितीय वातानुकूलित शयनयान श्रेणी में थी। हम दोनों अपनी यात्रा के बारे में काफी उत्साहित थे, खासकर मैं, क्योंकि मैं अपने जीवन में इन राज्यों में कभी नहीं गया था, लेकिन मैंने इन स्थानों की प्राकृतिक सुंदरता के बारे में काफी कुछ सुन एवं पढ रखा था।

हमारी सारी तैयारी पूरी हो चुकी थी। हमारी ट्रेन चेन्नै एळुंबूर स्टेशन से थी। जैसे ही सुबह हमारी आंखे खुली तो ट्रेन धीरे धीरे चल रही थी। शायद कोई स्टेशन आने वाला था। जैसे ही मैंने अपनी बर्थ वाले सीसे से पर्दा हटाया तो, बाहर का दृश्य देखकर मेरे मुँह से अनायास ही “वाह” शब्द निकल गया। रात्रि का छाया सारा आलस्य सेकेंड में उडन छू हो चुका था। तमिलनाडु का नागरकोविल स्टेशन ने हमारा स्वागत नारियल के हरे-भरे पेड़ों और सुहावने परिवेश ने किया। जैसे ही स्टेशन पर गाड़ी रूकी मैं बाहर से गरमा-गरम नाश्ता यानि इडली, डोसा, वडा और इंजि यानी अदरक वाली चाय ले आया। मेरी पत्नी को डोसा बहुत ही पसंद है। तो उसने डोसा खाया और मैंने इडली और वडा खाया। नाश्ते बाद हमने गरमा गरम अदरक वाली चाय का भी मजा लिया। अगला स्टेशन कन्याकुमारी आने वाला था। चारों ओर हरियाली और सुखद मौसम ने मेरी पत्नी के मन को प्रसन्न बना रखा था। वो बडे गौर से गाड़ी की खिडकी से आने वाली सूरज की हल्की रोशनी को ध्यान से देख रही थी। शायद उसने ऐसा पहले कभी ना देखा हो। करीब आठ बजे हम कन्याकुमारी पहुंचे और हमने एक होटल में एक कमरा किराए पर लिया। कमरे का एक दिन का किराया काफी मंहगा था। लेकिन वहां से कन्याकुमारी का लाइट हाउस बिल्कुल ही करीब था। उस कमरे से विवेकानंद रॉक केवल 200 मीटर की दूरी पर था, जो कि कमरे की खिड़की से साफ दिखाई दे रहा था।

होटल के मैनेजर से पता चला कि कन्याकुमारी का सूर्यास्त काफी ही सुहाना होता है। हमने विवेकानंद रॉक केलिए बोट ली। वहां से समुद्र का दृश्य किसी स्वर्ग से कम नहीं लग रहा था। एक अजीब सा सुकून था वहां पर। मैंने अपना मोबाइल निकाला और मेरे और अपनी पत्नी के बहुत सारे फोटो ले डाले। रॉक के बराबर में ही तिरुवल्लूवर स्टेच्यू भी था। दिन के दौरान ही हमने भारत का वह अंत बिंदु भी देखा जहां पर तीन समुंद्र, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी और अरब सागर आपस में मिलते है। हम दोनों अब काफी थक चुके थें। फिर हम कमरे पर आ गए और आराम किया। शाम को हम कन्याकुमारी का मशहूर सूर्यास्त देखने के लिए आगे कमरे से फिर बाहर निकल आए। सूर्यास्त का दृश्य काफी सुहावना होता है। क्योंकि ऐसा लगता है कि गहरा लाल सूर्य, गर्जने वाले सागर में डुबकी लगा रहा है। सूर्यास्त के बाद लोगों की चुप्पी और समुद्र की लहरों के शोर ने मुझे उदासी और खुशी की

मिश्रित भावनाएं दीं। मेरी पत्नी एकटक डूबते सूरज को देखे जा रही थी, मानों वो भी सूरज के साथ स्वयं को किसी अदृश्य शक्ति को समर्पित कर रही हो।

अगले दिन सुबह 8 बजे हमारी ट्रेन त्रिवेंद्रम के लिए थी। हम दोनों ने जल्दी से खुद के तैयार किया और विवेकानंद रॉक के पास एक विशेष बिंदु से सूर्योदय के देखने के लिए खड़े हो गए। मैं यह देखकर आश्चर्य चकित था कि जब हम उस स्थान पर पहुंचे तो पहले से ही वहां पर लगभग 500 से अधिक लोग मौजूद थे। सूर्योदय के उन क्षणों का मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। बस यूं कहों कि वह एक दिव्य अनुभव था और जब आप स्याह काले आकाश को गुलाबी से लाल रंग में बदलते हुए देखा था। 7.30 हो चुके थे। हमने जल्दी से एक ऑटो लिया और स्टेशन पर पहुंच गए। कन्याकुमारी में ऑटो वालो का फिक्स रेट है 50 रुपए स्टेशन तक के लिए। गाड़ी छुटने से 5 मिनट पहले हम अपनी सीटों पर बैठ चुके थें।

त्रिवेंद्रम पहुंचने के बाद हमने सबसे पहले विश्व प्रसिद्ध पद्मानाभन मंदिर का भ्रमण किया, जो कुछ सालों पहले अपने छः रहस्यमय बंद दरवाजों के पीछे छुपी बड़ी संपति के लिए मीडिया में छाया हुआ था। यहां आपकों मंदिर के ड्रेस कोड यानि पुरुषों और महिलाओं के लिए सफेद धोती का पालन करना होता है। पुरुष केवल सफेद धोती के साथ नंगे बदन मंदिर में प्रवेश कर सकते है। कपड़े बदलने और जमा करवाने के लिए कमरे और क्लोक रूम हैं जहां हर कोई अपना सामान जमा कर सकता था। यह मंदिर विष्णु भगवान को समर्पित है।

हमारी यात्रा का सबसे खूबसूरत हिस्सा केरल के बैकवाटर, जिसे वेनिस ऑफ एशिया भी कहा जाता है, था। त्रिवेंद्रम से 4 घंटे की यात्रा कर हम एलेप्पी पहुंचे जिसे आलप्पुऴा भी कहा जाता है। हमने एक नाव किराए पर ली और सपनों की यात्रा शुरु की। पानी में 10 मिनट नाव चलने के बाद हमे एहसास हुआ कि हम किसी औऱ दुनिया में हैं,

क्योंकि पानी के दोनों किनारों पर लंबे हरे नारियल, आम के पेड़ और छोटी छोटी झोपडियों के अलावा कुछ नहीं था। जैसा कि मूल नाविक ने बताया कि एलेप्पी के बैकवाटर प्राकृतिक नहीं हैं लेकिन इसे 200 साल पहले किंग जॉर्ज ने बनवाया था। उन्होंने इस क्षेत्र में बहने वाली 4-5 नदियों को नहरें खोदकर एक दूसरे के साथ में मिलाने का आदेश दिया था। इन नहरों की कुल लंबाई 250 किमी से भी अधिक है। इस तरह क्षेत्र के छोटे गांवों को सड़क के बजाए जलमार्गों के माध्यम से विभाजित किया गया है जो पूरे क्षेत्र में एक अनूठा रूप प्रदान करते है। यहां एक स्थान पर समुद्र तल से नीचे की जाने वाली खेती भी देखी जा सकती है। ऐसा माना जाता है कि पूरे विश्व में समुद्र तल नीचे केवल यही पर खेती की जाती है। यहां पर लोकल परिवहन के तौर पर सरकार द्वारा बड़ी कश्तियां चलाई जाती हैं।

हमने नहर के किनारे स्थानीय कैफ्टेरिया में दोपहर का भोजन किया और उनके स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया। स्थानीय पक्षियों द्वारा नदी किनारे मछलियों को पकड़ते देखने का अलग ही रोमांच था। चारों तरफ हरियाली और नारियल के पेड़ों से घिरे पानी में चार घंटों की यात्रा ने हमारी यात्रा को यादगार बना दिया था। यात्रा के अंत में हमने कोवलम बीच का आनंद लिया। वहां पर समुद्र इतना शांत था कि मानों तुम्हें अ पनी खामोशी में डुबाना चाहता हो। रात के समय हमने त्रिवेद्रम के स्थानीय बाजारों का दौरा किया। वहां से हमने बहुत सारा सामान यादों के रूप में खरीदा। मैंने अपना पसंदीदा केला का चिप्स भी खरीदा। मेरी व्यक्तिगत राय है कि अगर देश की सुदंरता देखनी हो तो अपने जीवनकाल में एक बार केरल और तमिलनाडु की यात्रा पर जरूर जाए।

चुनाव

पी शिरंजीवी राव
अधीक्षक (टंकण) /राजभाषा अनुभाग

देखो यारों हर बार की तरह इस बार भी चुनाव आया है।
भोले भाले मतदाताओं के मन में भारी भरकम सोच लाया है।
शातीर उम्मीदवारों के मन में जोश खरोश लाया है।
मैंने सोचा इस बार भी कुछ नया नहीं होने वाला हैं।
कोई भी चुनकर आये मतदाता फिर से रोने वाला है।
उम्मीदवारों और नेताओं की पोल फिर से खुलने वाला है।

क्या फर्क पड़ता है किसी के पोल खुलने से
क्या फर्क पड़ता है किसी के जेल जाने से
यह भारत का चुनाव तंत्र है, यहाँ सरकार चलती है जेल से
पढ़ाई लिखाई मेहनत मजदूरी सिर्फ आम आदमी के लिए है।
चोरी डकैती लूट खसोट जैसी योग्यता चुनाव जीतने के लिए है।
किसको वोट दें, किसको न दें मध्यम वर्ग भ्रम पाल लिए हैं।

लेकिन यारों किसी चुनाव में गजब हो ही जाएगा।
बड़े-बड़े सूरमा और तीसमारखां को आइना दिखा दिया जाएगा।
चेहरों का चक्कर छोड़ जनता द्वारा पारदर्शिता पर जोर दिया जाएगा।
गाली ठोकने वालों, मूछों पर ताव देने वालों, कब्र में पाँव लटकने वालों को
जनता द्वारा बड़ी शिद्दत से घर पर बिठा दिया जाएगा।

गलत और भ्रष्ट उम्मीदवारो अब ये उम्मीद में मत रहना कि
हर बार तुम लोग जीतेंगे
जाग रही है जनता अब तो न देखेंगे धर्म, न देखेंगे वर्ण
देखेंगे सिर्फ कर्म को ही
सुधर जाओ कपट नेताओ, वरना सड़ते रहेंगे घर में ही

बोलो जनता जनार्दन की जय, जय हिंद

हिंदी के कालजयी उपन्यास

निमिता. के.वी, कनिष्ठ अनुवादक

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है । साहित्य की कई विधाएं हैं, उनमें प्रमुख है – उपन्यास । उपन्यास में गद्यबद्ध कथानक के माध्यम से सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति होती है । उपन्यास में साधारण बोलचाल की भाषा के माध्यम से आम जनता की समस्याओं को पाठक के सामने रखा जाता है । काव्य जैसे आलंकारिकता, काल्पनिकता कम और यथार्थ का वर्णन अधिक होने के कारण पाठक उपन्यास के साथ सामंजस्य महसूस कर पाते हैं इसीलिए यह साहित्य की लोकप्रिय विधा है। उपन्यास में भी काल्पनिक, मांत्रिक या तिलस्मी – ऐयारी काथानक का चित्रण होता आया है। उपन्यास साहित्य के प्रारंभिक काल में एसे उपन्यासों की रचना हुई हैं। मनोरंजन की दृष्टि से पाठक ऐसे उपन्यासों को पसंद भी करते हैं। परंतु मेरी दृष्टि में ऐसे उपन्यास कालजयी हैं, जो समय के साथ-साथ अपनी प्रासंगिकता बनाए रखते हैं। उपन्यास में जीवन का व्यापक एवं कलात्मक चित्रण मिलता है । सामाजिक जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति के कारण उपन्यास तत्कालीन समाज का इतिहास भी बयान करते हैं। एक उपन्यास पढ़ने से मनोरंजन के साथ-साथ उस समय के सामाजिक विशेषताओं से भी पाठकगण अवगत हो जाता है।

19 वीं शताब्दी से हिंदी में उपन्यास लेखन की परंपरा शुरू हो गयी थी। शुरुवात अनूदित उपन्यासों से हुई। बाद में मौलिक हिंदी उपन्यासों की रचना हुई । लाला श्रीनिवास दास, श्रद्धाराम फिल्लौरी, देवकीनंदन खत्री, बालकृष्ण भट्ट आदि प्रारंभिक काल के प्रमुख उपन्यासकार हैं । हिंदी उपन्यास साहित्य का वास्तविक विकास आधुनिक काल में हुई। हिंदी के उपन्यास साहित्य को आधुनिक युग की देन भी कहा जा सकता है। प्रारंभिक उपन्यास साहित्य की अपेक्षा नए युग का उपन्यास साहित्य, कला और विषय की दृष्टि से उन्नत बना । भाषा, विषय और कथानक के स्तर पर हिंदी में बहुत अधिक रोचक एवं मार्मिक उपन्यासों की रचना हुई हैं। उनमे बहुत उपन्यास से ऐसे हैं जो कालजयी हैं, जिनका अध्ययन साहित्य प्रेमियों को अवश्य करना चाहिए।

कालजयी एवं प्रासंगिक उपन्यासों के सागर में से ऐसे पाँच उपन्यासों का उल्लेख करना चाहती हूँ जिनके कुछ पात्र आज भी हमारे आस पास जिंदा हैं या जिनमें चित्रित घटनाएं आज भी हमारे समाज में घटित हो रही हैं।

1. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु

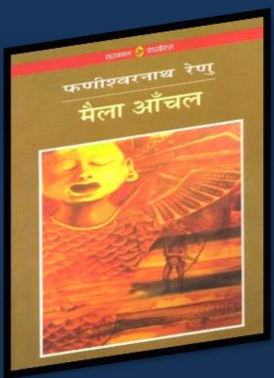

“मैला आंचल” फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा 1954 में लिखा गया श्रेष्ठ उपन्यास हैं। इस उपन्यास में भारत की स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक, राजनीतिक, वैयक्तिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्य का वर्णन किया गया है । “मैला आंचल” को हिंदी के प्रमुख आंचलिक उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास का नायक एक युवा डॉक्टर प्रशांत है, जो अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद बिहार के एक पिछड़े गाँव को अपना कार्यक्षेत्र के रूप में चुनता है। वहाँ पर उसका साक्षात्कार ग्रामीण जनता पर होने वाले शोषण, उनके पिछड़ेपन, अभाव, अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास इत्यादि से हो जाता है। भ्रष्ट राजनीति, किसानों की समस्या आदि का भी चित्रण उपन्यास में मिलता है । इस उपन्यास में रेणु जी ने सहज, स्वाभाविक भाषा शैली के माध्यम से ग्राम्य जीवन का जीवंत चित्रण किया है।

2. कितने पाकिस्तान – कमलेश्वर

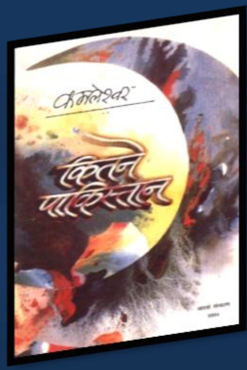

सन् 2003 में प्रकाशित यह उपन्यास प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर द्वारा रचित है । इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यासों की कोटि में गिना जाता है । भारत-पाकिस्तान का बंटवारा और हिंदु – मुस्लिम संबंध उपन्यास का विषय हैं। इस उपन्यास में पाकिस्तान शब्द बंटवारे का प्रतीक है । बंटवारा केवल दो देशों की भौगोलिक सीमा का नहीं बल्कि उनकी संस्कृति और सभ्यता का भी होती है । उपन्यास में अदीप नामक पत्रकार एक अदालत चलाता है । इस अदालत में एक-एक करके इतिहास के ऐसे पात्र आते हैं, जिनके ऊपर यह आरोप है कि उन्होंने अपने समय में कुछ ऐसे काम किए थे जिनकी वजह से लोगों के बीच मदभेद हो गए या देशों का बंटवारा हो गया । लेखक इस उपन्यास के माध्यम से यह सवाल उठाते हैं कि आखिर कब तक लोग आपस में लड़ते रहेंगे, देशों का तथा उनकी संस्कृतियों का बंटवारा होता रहेगा ।

3. गोदान -प्रेमचंद

1936 में प्रकाशित “गोदान” प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास हैं । होरी और धनिया के परिवार के रूप में भारत की एक

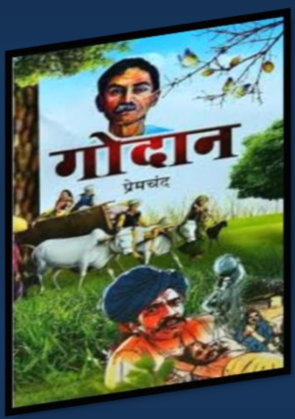

विशेष संस्कृति का सजीव चित्रण उपन्यास में मिलते हैं । गोदान एक ऐसा उपन्यास हैं जिसमें तत्कालीन भारतीय समाज की अनगिनत समस्याओं का चित्रण हैं । गाँवों की आर्थिक दुर्दशा, जाति व्यवस्था, किसानों की गरीबी, शहरी जीवन का प्रभाव, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में मिलता है । ग्राम और कृषक संस्कृति उपन्यास का मुख्य विषय हैं । किसान वास्तव में भारतीय समाज का मेरुदंड हैं उन्हें जमींदारी व्यवस्था, औद्योगिक संस्कृति तथा अंग्रेजों के प्रभुत्व की वजह से विवश बना देता है, ऊपर से ग्रामीण जनता का अंधविश्वास, धर्म के प्रति भय, अज्ञान उनकी विवशता को और मजबूत बना देते हैं ।

गोदान होरी की ही नहीं हरेक भारतीय किसान की कहानी है जो जीवन भर मेहनत करता है, अनेक कष्ट सहता है लेकिन मेहनत का फल प्राप्त नहीं होता ।

4. तमस – भीष्म साहनी

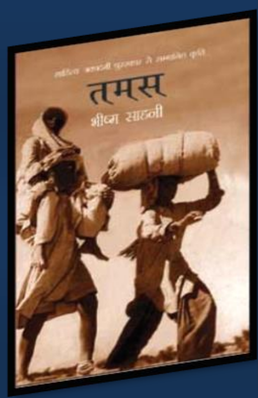

‘तमस’ भीष्म साहनी का महत्वपूर्ण उपन्यास है । यह सन् 1973 में प्रकाशित हुई थी । आज़ादी के पहले हुई सांप्रदायिक दंगो पर आधारित इस उपन्यास में विभाजन की त्रासदी, सांप्रदायिक राजनीति, मानवीय मूल्यों और संबंधों के विघटन इत्यादि का चित्रण किया गया हैं। तमस पाँच दिनों की कहानी हैं, जिसके माध्यम से भारत देश के सालों की कहानी को दर्शाया गया है । अंग्रेजों के फूट डालो और राज करो नीति के तहत मुराद अलि नामक कट्टर मुसलमान ने नत्थू नामक एक चमार के द्वारा एक सुअर को मरवाता है और लाश को मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंक दिया जाता है, जिससे पूरे शहर

में सांप्रदासिक दंगे शुरू हो जाते हैं। सुअर मारने की प्रतिक्रिया के रूप में दूसरे वर्ग के लोगों द्वारा गाय को मारा जाता है। दोगों की आड़ में चोरियाँ होती है, विभिन्न धर्म के लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। पाँच दिनों में पूरा शहर, आस-पास के गाँव तहस-नहस हो जाते हैं।

तमस उपन्यास में उन कारणों या स्थिति का चित्रण किया गया है जिसकी वजह से विभाजन अनिवार्य बन गया था। धार्मिक अंधता के कारण होनेवाले सांप्रदायिक दंगों के परिणामों को इस उपन्यास द्वारा भीष्म साहनी ने पाठक के सामने रखा है।

5. राग दरबारी- श्रीलाल शुक्ल

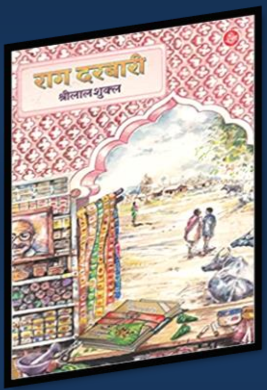

श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित राग दरबारी उपन्यास में व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ का चित्रण किया गया हैं। यह उपन्यास 1968 में प्रकाशित हुआ था। इसमें शिवपालगंज नामक एक गाँव की कहानी के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को चित्रित किया है। आम जनता का सपना था कि आज़ादी के बाद उनका जीवन सुधर जाएगा, जिन ग्रामीण विकास, स्वतंत्रता की वे सपना देखते थे सब आज़ादी के दो दशकों के अंदर ही चकनाचूर हो गए थे। कुटिल राजनीति, भ्रष्टाचार, अवैध धंधे, गुंडागर्दी से शिवपालगंज का हाल बहुत ही बुरा है।

संपूर्ण उपन्यास में व्यवस्था में जड़ जमा चुकी अनैतिकता का वर्णन है। जो भी इस व्यवस्था को सुधारने के लिए आते है वह अपनी अनुसार व्यवस्था को ढाल लेना चाहते हैं। जब पढ़ा लिखा एक नौजवान (रंगनाथ) इस व्यवस्था को बदलने की कोशिश करता है तो उसे हर जगह भ्रष्टाचार ही दिखाई पड़ते हैं। व्यवस्था को बदलने का उसका हर कोशिश नाकाम हो जाता है। हार मानकर वह वहां से भाग जाने का फैसला करता है तो उसके सामने सवाल उठता है कि जाओगे कहां ? हर जगह बेईमानी और भ्रष्टाचार व्याप्त है। राग दरबारी उपन्यास प्रकाशनकाल में जितना प्रासंगिक था वर्तमान युग में उससे कई ज्यादा प्रासंगिक है।

उपरोक्त पांच उपन्यास केवल उस उपन्यास सागर के पाँच बूंदें हैं, जिनमें सागर सी गहराई है। ऐसी कालजयी रचनाओं की प्रासंगिकता, लोकप्रियता, समय के साथ बढती जाती हैं।

नारी

रूपा मंडल, कनिष्ठ अनुवादक
रेल भर्ती बोर्ड, चैन्नै

नारी को कम न आंको तुम,
कभी तो इसके अंतर्मन में झाकों तुम,
न ये झुकती है न झुकने देती है,
समाज को क्या इसलिए ये खलती।
राह का रोड़ा बनने को इसके,
दुनियां क्यों इतनी मचलती,
जब इसके गुणों को जान जाओगे,
तब निश्चय ही तुम गुण गाओगे।
क्या नारी इसलिए हेय बनी रहती,
क्योंकि ये घर को घर है समझती,
सबको अपना मान, हित ही करती,
जीवन संघर्षपूर्ण, जीवन में आने से पहले पाया
समाज ने ही नहीं अपनों ने भी इसे ठुकराया
अपना अस्तित्व बचाने को खुद ही इसने बेड़ा उठाया
फिर भी समाज को यह रास न आया
कुछ न मिला तो उस पर लांछण ही लगाया
कहां गया वो समाज जिसे सीता ने बख्श दिया।
इतना अग्नि परीक्षा देकर भी इसने,
समाज को मिटने का श्राप न दिया।
सोचो जरा, क्या होता अगर,
नारी का सतित्व अपने पर आता,
दुर्गा और काली का रूप धारती
तो शिव की महा शक्ति भी रोक न पाता
फिर भला ये अदना सा संसार क्या कर पाता
पर नारी तो बनी है कोमल काया से
पलते है संसार भी इसकी छाया से
इसमे न है क्रूरता का कोई भी घुन
तभी तो है ये कृष्ण की मूरली की धून
और कही है विष्णु का शंखनाद भी
समाज को होना है इसका ऋणी
क्योंकि नारी तो है शिव की अर्द्धांगिनी
कौन कहता है ये अबला है निसहाय है
समाज का संपूर्ण अस्तित्व तो इसी का ध्याय है
इस धरा पर जीवन का तुम्ही तो आधार हो
कौन कहता है तुम्हे अबला हो लाचार हो
आज की नारी अब अबला है न भिखारी है
समाज के हर हक का ये अधिकारिणी है
जितना रोकोगे इसे पाने से इसके अधिकारों को
ये उतनी ही सशक्त होकर उपर उठेगी
छुने लेने को आकाश के तारों को
दुनिया का कोई कोना अछूता न रहा इसकी परछाई से
समुद्र हो, आकाश हो या हो पाताल का कोई भी कोना
इसने मापा है इन सबको अपने ज्ञान की गहराई से
देख कर इसकी अदम्य उत्साह का दंभ
सारी दुनिया है आश्चर्य से दंग ।।।।।

गांधी अंतरात्मा की पहरुआ@74

अमित कुमार मिश्रा, सहायक/ पुल/ ईरोड

2 अक्टूबर1869 को गुजरात में गांधी जी का जन्म हुआ 2 अक्टूबर 2019 को गांधी जी की 150 वी जयंती मनाई गई उनके पिता का नाम करमचंद गांधी जो काठियावाड़ रियासत के दीवान थे, गाँधीजी के माता का नाम पुतली बाई था जो एक धार्मिक विचार की थी। 13 वर्ष की आयु में गांधी जी का विवाह कस्तूरबा गांधी से हुआ।

हम इस लेख में उनके जीवन के कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं जैसे कि राजनीतिक दार्शनिक स्वराज तथा रामराज्य जैसे विषयों को हम प्रमुखता से इस लेख में जगह देंगे जो हम गांधीजी के विषय में समझ रहे हैं। गांधी जी की 74 वीं पुण्यतिथि मनाई गई, हमारे पास एक मौका है कि हम उनके चरित्र और दुनिया के इतिहास में उनके योगदान पर एक बार फिर से चर्चा करें अधिकतर ऐसा देखा गया है कि ऐसे व्यक्तित्व पर केवल चरण वंदना ही होता आ रहा है यह बताने के लिए कि जीवन के हर पहलू में वे कितने शानदार व्यक्तित्व थे लेकिन महात्मा गांधी के लिए यह बात थोड़ी कमतर पड़ जाती है कम रह जाती है क्योंकि गांधी हमेशा से रहस्य में पूर्ण और परेशान करने वाले रहे हैं और कई चले आ रहे विचारों को प्रभावित कर देने वाले व्यक्तित्व भी रहे क्योंकि वह हमेशा कुछ हटकर सोचा करते थे। गांधी ऐसे नेता थे कि उनके जीवन मैं तमाम ऐसी घटनाएं घटी जो उन्हें बाहर की और सोचने के लिए मजबूर कर दिया। प्रेरित कर दी जो बनी बनाई वर्ग था जो बनी बनाई रूढ़ियाँ थी जो बनी बनाई विचार थे गांधी उन विचारों उन रूढ़ियों के भी बाहर जाकर सोचा करते थे।

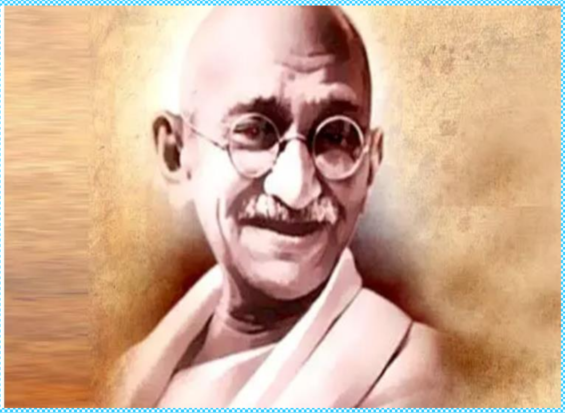

इस उदाहरण से हम समझ सकते हैं गांधी की धर्म में आस्था थी धार्मिक ग्रंथों में आस्था थी पर वह यह भी कह देते थे कि किसी भी धर्म में या धार्मिक ग्रंथों में आस्था, नैतिकता के प्रश्न से ऊपर नहीं है क्योंकि आज के नैतिकता को वह ग्रंथ सफलतापूर्वक उनका उत्तर नहीं देता है जो नैतिकता प्रश्न का है तो हमें उस ग्रंथ को छोड़ देना चाहिए और हमें नैतिकता को अपनाना चाहिए यह कहना एक हिम्मत की बात थी उस व्यक्ति के लिए जो सदैव अपने धर्म में आस्था रखते थे और उस ग्रंथ का गौरव समझते थे।

गांधी ने हमेशा खुद को कमजोर के बीच देखा, गरीबों के बीच देखा। उनके लिए एक न्याय आधारित राजनीति का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से था एक ऐसी परिस्थिति से था जहाँ पर जो सबसे गरीब है जो सबसे कमजोर है उसके सामने भी वही विकल्प हो जो सबके सामने हो यानी कि मजबूत व्यक्ति के सामने वही विकल्प हो जो गरीब आदमी के सामने हो। यहाँ हम गांधी के उस जीत को भी याद कर सकते हैं जिसको कई लोग मानते भी हैं कि कभी अगर जीवन में आपको लगे कि जो हम कर रहे हैं ठीक कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं तब हम सबसे कमजोर व्यक्ति का चेहरा याद करें और फिर यह तय कीजिए कि जो आप करने वाले हैं उसका उस व्यक्ति पर क्या असर पड़ेगा अगर आप अपने काम से सहमत है तो आप ठीक कर रहे हैं अगर आप अपने काम से सहमत नहीं है तो उसे आप फिर से देखें और ठीक करें। इसलिए गांधी उनका उतना नहीं है जो आज सबसे ज्यादा गांधी को सेलिब्रेट कर रहे हैं जो उनके नाम पर बड़ी-बड़ी योजनाएं चला रहे हैं या उनके नाम पर डाक टिकट जारी कर रहे हैं यानी जो भी सत्ताधीश है, गांधीजी उनके उतना नहीं है जितने की कमजोरों के हैं जितने कि हारे हुए लोगों के हैं।

आज जो मजबूत है या तथाकथित जो आज विजेता के रूप में देखे जाते हैं उनको गांधी डिस्टर्ब करते हैं अकरांत करते हैं क्यों करते हैं क्योंकि विजेताओं द्वारा जो सीधे साधे इतिहास या सीधे साधे नैरेटिव में वह फिट नहीं बैठते हैं वह उस सीधे-साधे आख्यान को डिस्टर्ब कर देते हैं प्रश्न खड़े कर देते हैं किसी नाजुक से प्रश्न पर आकर संकल्प ले लेते हैं अनशन कर देते हैं। इसलिए गांधी किसी भी तरह के सख्त आदेशों के लिए बहुत सहूलियत वाले व्यक्ति नहीं होते बल्कि वह अकरांत करते हैं तो फिर हम गांधी को क्यों पड़ते हैं या गांधी को क्यों पसंद करते हैं केवल इसलिए नहीं कि वह

राष्ट्रपिता है बल्कि इसलिए क्योंकि उनकी नैतिकता या उनके नैतिक प्रश्न हमें बार-बार सोचने पर विवश कर देती है कई बार हमें अकरांत कर देती है उनका सारा संयम अधिनायकवादी संस्थाओं के खिलाफ है और ऐसी व्यवस्था के खिलाफ है जिसमें शक्तियां साफ-साफ या छुपे तरीके से दुरुपयोग हो रही है।

गांधी हमेशा से ही सादगी और पारदर्शिता के झंडा वरदार बनकर हमें सीख देते हैं उनकी सादगी उनकी कृतियों में झलकती थी और साथ ही उनके जीवन जीने की तरीकों में भी। क्योंकि उस दुनिया में जिसमें कहा जा रहा है कि अधिक से अधिक पाना है वहां गांधी का मानना है कि कम से कम में अधिक से अधिक पाना तथा संतुष्ट होना हैं। वह व्यापारिक दिमाग जो कम से कम में अधिक से अधिक सफल पाने की होड़ में लगा रहता है वह गांधी को रास नहीं आते शायद इस लेख के वजह से हैं गांधी को समझने में समस्याएं आती है क्योंकि भले ही वह कारपोरेट समाज गांधी को अपने -अपने कारणों से इस्तेमाल तो करता है उनकी पूजा तो करता है लेकिन भीतर ही भीतर इनकी सादगी से डरता है क्योंकि SISYPHUS की तरह गांधी भी जीवन पर्यंत उन चीजों को पाने में लगे रहे जो उन्हें हर बार उनसे थोड़ा और दूर होती चली जाती थी यहां पर हम SISYPHUS की बात कर ले। SISYPHUS माना जाता है कि ग्रीक माइथॉलजी का एक बड़ा किरदार था ग्रीक दंतकथाओं का एक किरदार था जिसको ग्रीक देवता जिऊस ने श्राप दिया क्या श्राप दिया कि तुम्हें जीवन पर्यंत तुम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लिए हो SISYPHUS। तुम्हें जीवन पर्यंत एक पर्वत पर एक पत्थर को चढ़ाते रहना होगा तुम्हारा लक्ष्य यह है कि तुम्हें यह पर्वत की चोटी पर इस पत्थर को पहुंचा देना है श्राप यह है कि जब भी तुम पहुंचाने वाले होंगे पत्थर वापस आकर गिर जाएगा यानी कि SISYPHUS की श्राप एक मिथक है जिसका कभी मियाद पूरा नहीं होगा लेकिन इस मिथक का एक पक्ष यह भी है कि श्राप इस एक पक्ष है उसका दूसरा पक्ष यह है कि SISYPHUS अपने पूरे गौरव के साथ ही श्राप को स्वीकार किया और इस मिथक के अनुसार SISYPHUS अंत काल तक इस काम में लगा रहा है जिसमें यह तो तय है कि उसे सफलता नहीं मिलेगी फिर भी वह अपने बल पर भाग्य को चुना लिया है। गांधी ने ऐसी चीजें चुनी जिसके लिए उससे कहा जा सकता है कि वह कभी सफल नहीं होगी लेकिन इसके चलते गांधी अपने नियति से मुंह मोड़ने से इंकार कर देते हैं यह नियति वह नहीं है जो किताबों और अन्य लेखों में लिखा या छपा करती है गांधी के साथ हमें कोई भी अंतिम सत्य नहीं मिलता है जिसकी कई बार उल्लेख अलग-अलग तरह से किया जाता है गांधी के लिए हमेशा सत्य का अन्वेषक प्रमुखता में रहा है। गांधी सिकर (SEEKER)हैं। सत्य अन्वेषक है सत्य की खोज करता है और इस बारे में एक और कहानी है रविंद्र नाथ ठाकुर की।जीवन भर ईश्वर की खोज और वह खोजने की प्रक्रिया बड़े ही सुंदर थी एक दिन उस दरवाजे पर पहुंच गए जिस के उस पार ईश्वर था और वहां से वह अन्वेषक वापस लौट आया इस कहानी के कई सारे बहस के केंद्र बिंदु है लेकिन इस कहानी की एक पहलू यह भी है कि महत्वपूर्ण वह नहीं था कि इस दरवाजे के पीछे कौन था सत्य था भी कि नहीं महत्वपूर्ण ये था कि सत्य को खोजने की जज्बा। कि सत्य की खोज में अन्वेषक बन जाना इस कहानी का एक और अर्थ यह भी है कि कोई एक सत्य नहीं होता इसलिए सत्य का दरवाजा एक नहीं हो सकता इसलिए सत्य के अन्वेषक को निरंतर खोज में रहना होगा। इसलिए गांधी हमेशा से सत्य की खोज में रहते हैं इसलिए जब गांधी रामराज्य की बात करते हैं तो उसको कई लोग अलग-अलग तरीके से व्याख्या करते हैं जब वह स्वराज की बात रहते हैं तो अंग्रेज उसे अलग तरीके से समझते हैं राष्ट्रवादी उसे अलग तरीके से समझते हैं और जो गांधीवादी हैं वह अलग तरीके से समझते हैं

गांधी हमेशा रहस्यमई बनकर रहते हैं शायद इसलिए वह आक्रांत भी लगते हैं लेकिन गांधी कभी झूठा नकाब पहन कर नहीं रहे वह अपने ऊपर और ना तो भारतीय इतिहास के ऊपर कोई नकाब रहने दिया बल्कि उन्होंने तो भारतीय इतिहास को भी हर उस मुद्दे पर प्रश्न किया जो उनको करने की आवश्यकता थी और वहां पर भी प्रश्न खड़े कर दिए जहां पर प्रश्न अक्सर लोग नहीं करते उदाहरण के रूप में गीता गांधी के लिए भी पूज्य थी और तिलक के लिए भी पूज्य थी दोनों ने इससे भिन्न -भिन्न अर्थ निकाले यहीं भारतीयता और यही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उल्लेखनीयता है कि वह अपने भारतीय सभ्यता से विचार ग्रहण तो करती है साथ ही साथ नए तरीके से परिभाषित भी करती है इसलिए उनका यह निर्णय में एक नैतिक जवाबदेही होती थी और इसलिए वह हमारे इतिहास के साथ के संबंधों को अहिंसा के साथ अहिंसा के प्रश्नों पर एक बातचीत में भी बदल देती थी। तथा गांधी एक नेता और उन लोगों के बीच जो संबंध होते हैं।उस संबंध को भी पुन: परिभाषित करते हैं। इसलिए गांधी का जो दर्शन था जो अपने आप में ही नैतिक था जिसमें सत्य पर विचार और साधन और साधक दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

गांधी का विश्वास दो चीजों में था पहला आत्मानुशासन और दूसरा आत्म संयम इस विचार को हम समझते तो आज के समय की कई समस्याओं के बारे में और जानने को मिलता है एक नई दृष्टि मिलेगी। कि एक व्यक्ति जो एकाकी है या जो व्यक्ति अपने आप को ही आदि और अंत समझता है उसके लिए जीना इसलिए है ताकि उसको उपभोग कर सके जबकि वह व्यक्ति जिसमें आत्मानुशासन है वह जीत इसलिए है या खाता इसलिए है कि वह जी सके और इसलिए गांधी की दो बातें सामने निकल कर आती है (1) आत्मबोध और (2) स्वराज

गांधी जी का राजनीतिक दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था गांधी ने शासन के संबंध में एक हिंद स्वराज पुस्तक लिखी थी उनका कहना था कि स्वराज एक पवित्र शब्द है जिसका अर्थ होता है आत्मा शासन और आत्म संयम।। गांधी ने स्वराज में जनता के शासन की कल्पना की, लेकिन मौजूदा वक्त में देखे तो राज्य जनता पर शासन करता है उन्होंने कल्पना की थी की हर व्यक्ति को उतना ही साधन उपलब्ध होगा जितना सभी लोगों को उपलब्ध है ताकि समाज में ऊंच-नीच की भावना ना के बराबर हो गांधी ने हमेशा ग्रामीण जीवन का पुरजोर तरीके से समर्थन किया

राजनीति में गांधीजी की प्रासंगिकता एक अलग ही है क्योंकि राजनीति में गाँधी को करिश्माई नेता माना जाता है क्योंकि गांधीजी तथा कुछ और नेता को रहकर देखा जाए तो गांधीजी हमेशा भीड़तंत्र के खिलाफ़ मानी जाने वाले नेता क्योंकि मौजूदा राजनीति में राजनेता और राजनीतिक दल सियासी फायदे को देख कर भीड़तंत्र के खिलाफ़ जाने की हिम्मत नहीं दिखा पाते हैं। इसलिए एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है चौरा चोरी घटना के खिलाफ़ गांधीजी की तीखी प्रतिक्रिया दी तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की अपनी योजना को इस आधार पर रद्द कर दिया की जनता नैतिक रूप से अंग्रेजों के खिलाफ़ अहिंसक संघर्ष के लिए तैयार नहीं थे

लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि गांधीजी जनता को ही राजनेता के राजशाही के दोषी मानते थे इसके अलावा गांधी ने आत्म परिवर्तन और नागरिक परिपक्वता जैसी धारणाओं पर ज़ोर दिया उनके मुताबिक अगर हम खुद के जीवन सुधार लेते हैं तो शासक वर्ग अपने आप सुधार जाएगा लिहाजा गाँधी ने चरित्र निर्माण के रूप में व्यावहारिक राजनीतिक में चलना शुरू किया जिसका मकसद राजनीतिक पार्टियों का गठन और संसद में सीटें जीतना नहीं था उन्होंने कहा अगर राष्ट्रीय जीवन बेहतर हो जाये तो लोग खुद ही अपनी जिंदगी का जायजा लेना शुरू कर दें उसके लिए किसी जनप्रतिनिधि की जरूरत नहीं होगी ऐसे हालात में हर कोई अपना सा शासक होगा दूसरे शब्दों में कहें कि स्वराज जी की स्थापना अपने आप ही हो जाएगा दरअसल ऐसे राज्य को एक आदर्श राज्य कहेंगे जिसमें कोई राज्य में राजनीतिक शक्ति नहीं होगी और ना ही कोई सरकार। लेकिन आदर्श को जीवन में कभी कभी पूरी तरह से महसूस नहीं किया जा सकता इसलिए अमेरिकी दार्शनिक हेनरी डेविड थोरो ने कहा था कि वह सरकार सबसे अच्छी होती है जो सबसे कम समय शासन करती है इनका गठन पूरी तरह से सही तो नहीं है लिहाजा कमावेश गाँधी के स्वराज्य की व्याख्या करता है

निस्संदेह गाँधी एक नैतिक नेता होने के बावजूद एक शुद्ध आदर्शवादी नहीं थे वे एक व्यावहारिक वादी थे प्रयोग वादी थे और भारतीय समाज के राजनीतिक संगठन और उससे परे नैतिक मूल्यों तथा सभ्यता मापदंडों को लागू करना चाहते थे या गौरतलब है कि गांधी की समझ को आज भारत और दुनिया पर राज़ करने वाले की नज़र में एक अप्रासंगिक और महत्वहीन मामला माना जाता है। गाँधीजी के मुताबिक राजनीतिक नैतिकतावादी और मानव कल्याण का होना चाहिए यही कारण है कि ऐसे समय में जब भारत और दुनिया भर के विश्व विद्यालयों में उपयोगितावादी और समालोचना न रहित सोच को विकसित किया जा रहा है तब भविष्य में महात्मा गांधी की मौलिकता और अनुक्रमणित को पैदा होने से पहले ही खत्म कर दिया जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि अगर गाँधी जीवित होते तो क्या करते निश्चित रूप से वह युवा पीढ़ी के मन में जागरूकता पैदा करने की कोशिश करते हैं दरअसल उन्होंने नैतिकता विहीन राजनीति का किसी भी हालत में उचित नहीं मानते गाँधीजी का विचारधारा था कि राजनीतिक नैतिकता और मानव कल्याण का साधन होना चाहिए लेकिन मौजूदा वक्त में राजनीति के अंदर नैतिकता अपना वजूद तलाश रही है। जहाँ एक तरफ गरीबी की मार झेल रहे लोगों को दो वक्त की रोटी भी नहीं मिल पाती वहीं राजनेताओं की संपत्ति बेतहाशा इजाफा हो रहा है हाल ही में एडीआर ने बताया कि भारत के 83% सांसद करोड़पति हैं एक सांसद के पास लगभग 15 करोड़ की संपत्ति है ज़ाहिर है कि गांधी के विकेंद्रीकरण के सिद्धांत पर कोई अमल नहीं हो रहा है। जहाँ एक तरफ शतक केंद्रीकृत हो रहा है वहीं दूसरी तरफ हम यह देख रहे हैं कि धन का जमावड़ा अभी कुछ खास लोगों के हाथों में है आज का पूरा संपत्ति

कुछ खास लोगों के पास है कई रिपोर्टों में ऐसा देखा जाता है की भारत की संपत्ति मैं एक बहुत ज्यादा हिंसा कुछ चंद लोगों के पास है अब ऐसे समय में जब चुनाव धन बल का खेल हो गया है तब हम इस बात की कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि कोई आम व्यक्ति चुनाव लड़कर जीत सके और राजनीति में आकर राजनीति को बदल सके आप अभी रिपोर्ट में देखे होंगे की किस तरह एक पार्टी को ही चंदा के रूप में बहुत सारा धन मिला जिसकी कोई पारदर्शिता नहीं है। यही कारण है कि मौजूदा वक्त में ज्यादातर सांसद और विधायक करोड़ों करोड़ों रुपए के मालिक हैं गाँधीजी का एक सपना था कि एक ऐसे भारत का निर्माण हो जिसमें समन्वय और सहयोग का समावेश लेकिन राजनीति के संदर्भ में यह दूर दूर तक यह सहयोग और समन्वय हमें नहीं दिखता है

आज जब गांधीजी के विचारों को मारने की कोशिश हो रही उनके कार्यों को उस ढंग से नहीं बताया जा रहा है जो आज की युवा पीढ़ी और लोग सोचते और समझते हैं यह लेख उन सभी के लिए है जो गाँधी को अच्छे से समझते हैं या गाँधी को नहीं समझते।

अंजलि मीना

पुत्री, बी.आर मीना,स्टेशन मास्टर, एरियोडु

नदी नहीं, पूरी संस्कृति है कावेरी

एस.चंद्रशेखरन
सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी/दक्षिण रेलवे

हर नदी की अपनी यात्रा और कहानी होती है, जिसमें कई रहस्य छिपे होते हैं। सुख-समृद्धि देने वाली नदी कावेरी का भी भारत की धर्म-संस्कृति, समाज-साहित्य आदि को बनाने और बढाने में विशेष योगदान है। कावेरी का उद्गम दक्षिण भारत के कर्नाटक में दो पर्वत मालाएं हैं-पश्चिम और पूर्व, जिन्हें पश्चिमी और पूर्वी घाट के नाम से जाना और पुकारा जाता है। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग में एक बहुत ही सुंदर कुर्ग नामक स्थान है। इसी स्थान पर सह्य नामक पर्वत है, जिसे ब्रह्माकपाल भी कहते हैं, जिसके कोने में एक छोटा-सा तालाब है। यही तालाब कावेरी नदी का उद्गम स्थल है। यहां देवी कावेरी की मूर्ति है, जहां एक दीपक सदा जलता रहता है और नित्य पूजा भी होती है।

कुर्ग की पहाडियों से लेकर समुद्र तक की लंबी यात्रा में कावेरी का रूप कई बार बदलता है। कहीं यह पतली धारा की तरह हो जाती है, तो कहीं इसकी जलधाराएं सागर-सी दिखाई देती हैं। कभी यह सरलता से चुपचाप बहती है, तो कभी ऊंचाई से जलप्रपात के रूप में गिरती है। पचास से अधिक छोटी-बडी नदियां इसमें आकर मिलती हैं। समुद्र में विलीन होने से पहले कावेरी से कई शाखाएं निकलती हैं और अलग-अलग नामों से अलग-अलग नदियों के रूप में बहती हैं।

कावेरी के तट पर दर्जनों बडे-बडे नगर और उपनगर बसे हैं। बीसियों तीर्थ-स्थान हैं। अनगिनत प्राचीन मंदिर हैं और सैकडों कल-कारखाने भी इसके तट पर चल रहे हैं। इतना ही नहीं, लोगों को अन्न देने वाली कावेरी के जल का प्रयोग बिजली पैदा करने में भी होता है। कावेरी के पावन जल और तट ने देश को कई महान संत, कवि, राजा, रानी एवं प्रतापी वीर दिए हैं। इसी कारण कावेरी को तमिल भाषी माता कहकर पुकारते हैं। कावेरी की पुत्री तमिल भाषा में कावेरी को काविरि भी कहते हैं। काविरि का अर्थ है-उपवनों का विस्तार करने वाली। अपने जल से यह बंजर भूमि को भी उपजाऊ बना देती है। इस कारण इसे काविरि कहते हैं। कावेरी का एक अर्थ है- कावेर की पुत्री। कथा है कि राजा कवेर ने इसे पुत्री की तरह पाला था, इस कारण इसका यह नाम पडा।

कावेरी को सह्य-आमलक-तीर्थ और शंख-तीर्थ भी कहते हैं। ब्रह्मा ने शंख के कमंडल से आंवले के पेड की जड में विरजानदी का जल चढाया था। कहा जाता है कि वह जल इसके साथ मिलकर बहा, तो कावेरी के सह्य आमलक तीर्थ या शंख तीर्थ नाम पडे। तमिल भाषा में कावेरी को प्यार से पोन्नी कहते हैं। पोन्नी का अर्थ है सोना उगाने वाली। कहा जाता है कि कावेरी के जल में सोने की धूल मिली हुई है। इस कारण इसका यह नाम पडा। वैष्णव और शैव मंदिर कावेरी के तट पर वैष्णवों का विख्यात मंदिर श्रीरंगम है, जो भगवान विष्णु का मंदिर है। इसके तट पर शैव धर्म के भी कई तीर्थ हैं। चिदंबरम का मंदिर कावेरी की ही देन है। श्रीरंगम के पास बना हुआ जंबुकेश्वरम का प्राचीन मंदिर भी प्रसिद्ध है। तिरुवैयारु, कुंभकोणम, तंजावूर शीरकाल आदि जैसे अनेक स्थान पर शिवजी के मंदिर कावेरी के तट पर बने हैं। तिरुचिरापल्ली शहर के बीच में एक ऊंचे टीले पर बना हुआ मातृ भूतेश्वर का मंदिर और उसके चारों ओर का किला विख्यात है। रामायण रची कंबन ने शैव और वैष्णव संप्रदाय के कितने ही आचार्य, संत और कवि कावेरी के तट पर हुए हैं। विख्यात वैष्णव आचार्य श्री रामानुज को आश्रय देने वाला श्रीरंगपट्टनम का राजा विष्णुवर्द्धन था। तिरुमंगै आलवर और कुछ अन्य वैष्णव संतों का जन्म कावेरी-तीर पर ही हुआ था। सोलह वर्ष की आयु में शैव धर्म का देश-भर में प्रचार करने वाले संत कवि ज्ञानसंबंधर का जन्म भी कावेरी-तट पर हुआ था। तमिल भाषा के कितने ही विख्यात कवि इसी नदी के किनारे पले-बढे।

महाकवि कंबन ने तमिल भाषा में अपनी विख्यात रामायण की रचना इसी नदी के तट पर की थी। दक्षिण संगीत को नया प्राण देने वाले संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री और मुत्तुदीक्षित इसी कावेरी तट के वासी थे। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि दक्षिण की संस्कृति कावेरी की देन है। विदाई उत्सव कावेरी के उद्गम स्थान पर हर साल सावन के महीने में बडा उत्सव मनाया जाता है। इसे कावेरी की विदाई का उत्सव कहा जाता है। कुर्ग के सभी हिंदू लोग, विशेषकर स्त्रियां, इस उत्सव में बडी श्रद्धा के साथ भाग लेती हैं। इस दिन कावेरी की मूर्ति की विशेष पूजा होती है। तलै कावेरी कहलाने वाले उद्गम-स्थान पर सब स्नान करते हैं।

स्नान करने के बाद प्रत्येक स्त्री कोई न कोई गहना, उपहार के रूप में इस तालाब में डालती है। इतिहास -कावेरी के तट पर तिरुवैयारु नामक स्थान पर पेशवाओं ने जो संस्कृत विद्यालय स्थापित किया था, वह आज भी विद्यमान है।

-इसी तट पर चोल साम्राज्य बना और फैला।

-करिकालन के समय में समुद्र तट पर कावेरी के संगम-स्थल पर पुहार नामक विशाल बंदरगाह बना।

-यूनानी लोगों ने इस नगर को कबेरस नाम दिया था। यह कबेरस शब्द भी कावेरी शब्द से ही बना है।

बचपन का साथी

सूर्यप्रकाश सिंह,
स्वास्थ्य एवं मलेरिया निरीक्षक/ईरोड

बचपन की दोस्ती और दोस्त दोनों ही ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा होते हैं । उन जैसे दोस्त चाहकर भी कभी नहीं मिल पाते हैं। जबकि बड़े होते-होते हम कितने लोगों से मिलते हैं दोस्ती भी करते हैं, लेकिन जो बात बचपन वाली दोस्ती में होती है वो उसमें नहीं होती । बचपन की वो खुबसूरत यादें, वो शरारतें जब हम एक-दूसरे से साझा करते हैं, तो बचपना फिर से खिलने लगता है । उन यादों के साथ दोस्त ही नहीं, बल्कि बचपन भी वापस आ जाता है । परिवार के रिश्तों से भी अधिक प्यारा रिश्ता जो है उसे ही दोस्ती का रिश्ता कहते हैं । कभी तकरार तो कभी प्यार लेकिन दोस्ती में जान देने को भी तैयार, यही तो खास बात होती है इस रिश्ते की । उसमें भी बचपन के दोस्तों की तो बात ही कुछ और होती है, बचपन की दोस्ती समय के साथ और मजबूत हो जाती है । कभी क्लास के पहले दिन से तो कभी क्लास के बाहर खड़े होकर या फिर तकरार के बाद, दोस्ती कभी भी और किसी भी स्थिति में शुरू हो जाया करती थी । ऐसे ही तो होते थे स्कूल के दिन और बचपन के दोस्त । एक ही साथ बैठना और साथ में लंच करने से लेके वॉशरूम तक साथ में जाना बचपन की दोस्ती को और मजबूत बना देता है । बचपन के दोस्तों में प्यार की हद तो तब हो जाती थी कि, अगर कोई एक बीमार पड़े तो दूसरा भी उसकी याद में बीमार हो जाया करता था । आपको भी याद आ गए न अपने बचपन के साथी । स्कूल से वापस आते समय साइकिल तेज चलाने की होड़ हो या फिर पैसे बचाकर आइसक्रीम और गोल-गप्पे खाना, दोस्तों के साथ बिताया हर एक पल किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं होता था । खेलने-कूदने से लेकर शैतानियां करने तक दोस्तों के साथ तो टीचर की डांट खाना और मम्मी की पिटाई सब अच्छा लगता था । कितनी प्यारी थी वो दोस्ती और कितने अच्छे थे वो बचपन के दिन । आज भी उसमें से कुछ दोस्त साथ हैं जो समय-समय पर दोस्ती की उस सौंधी खुश्बु की याद दिलाते रहते हैं । जैसे-जैसे बड़े हुए दोस्ती का ये रंग भी गहरा होता गया । हां ये बात जरूर है कि कॉलेज और ऑफिस में कुछ और अच्छे दोस्त बने लेकिन बचपन के वो दोस्त और उनकी दोस्ती की तो बात ही कुछ और है । इसीलिए अब जब भी हमें समय मिलता है हम अपने पुराने दिनों को याद करने के लिए अपने गाँव निकल पड़ते हैं और वहां के हर गली कोने में अपनी दोस्ती की यादों को ताजा करने के लिए, अगर आप भी अपने बचपन के दोस्तों को बहुत याद करते हैं तो क्यों न उनके लिए समय निकालें और उनके साथ मिलकर अपनी दोस्ती को आनंद उठाये, क्योंकि बचपन के साथी बार-बार नहीं मिलते ।

मेरी रेल यात्रा

बलिराम प्रसाद, स्टेशन मास्टर/लोकूर

यात्रा से प्रेम किसे न होगा, वह भी जब रेल यात्रा हो। भारतीय रेल में यात्रा करने पर सदैव नए अनुभवों से साक्षात्कार होता रहता है, जिनकी स्मृतियाँ सदैव के लिए मनोमस्तिष्क में कैद हो जाती है। बात उन दिनों की हैं, जब मेरा चयन दक्षिण रेलवे चेन्नै के रेलवे भर्ती सेल में चतुर्थवर्गीय कर्मचारी पद पर हुआ था। मेरी नियुक्ति सेलम मंडल में हुई थी। सरकारी नौकरी पाने से मेरा मन हवा से बातें कर रहा था, क्योंकि मौजूदा दौर में सरकारी नौकरी मिलना भगवान से मिलने के बराबर है। बड़ी कड़ी मशक्कत के बाद मुझे यह नौकरी मिली थी। अब मुझे पदस्थापित कार्यालय में एक नियत सीमा अवधि के अंदर प्रस्तुत होना था। वैसे मैं इस भर्ती के सिलसिले में शारीरिक दक्षता परीक्षण, लिखित परीक्षा चिकित्सा परीक्षण और प्रमाण पत्र सत्यापन के लिए लड़कों के समूह में कई बार चेन्नै आ चुका था लेकिन इस बार मुझे बिहार से चेन्नै अकेले आना था। घर में बड़ों के लिए मैं अभी छोटा ही था। अंत में यह तय हुआ कि मुझे पदस्थापित कार्यालय में सूचना देने के लिए रेलयात्रा का सहारा लेना पड़ेगा, क्योंकि इतनी लंबी दूरी के लिए बस यात्रा संभव नहीं थी और हवाई जहाज का किराया महंगा होने के कारण हवाई यात्रा नहीं कर सकता था। मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं थी। इसलिए समय से पूर्व ही गाड़ी संख्या 12296 (दानापुर – बंगलूरु) संघमित्रा एक्सप्रेस में आरा से जोलारपेट्टै जंक्शन तक टिकट का आरक्षण करवा लिया गया ताकि नियत समय पर कोई समस्या न खड़ी हो। दि. 25.01.2012 को मुझे ट्रेन पकड़नी थी। जिसके आरा से छूटने का समय सायं 08.45 बजे था। अतः मैंने अपने निवास स्थान बिहिया से सायं 5 बजे आरा के लिए प्रस्थान किया, यह यात्रा मैंने बस द्वारा पूरी की, फलतः सायं 7 बजे मैं आरा स्टेशन पर पहुँच गया।

रेलवे स्टेशन पर पहूँचकर रोमांच का अनुभव हो रहा था, क्योंकि मैं एक बार फिर रेल यात्रा की सेवा का लुत्फ उठाने जा रहा था। रेलवे स्टेशन पर चिलपौ की आवाजें तथा भीड़ का कलरव मुझे उस समय आनंददायी लग रही थी, जो हो सकता है कि शुभ कार्य की यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए भद्दा- मजाक हो। किंतु मैं उस समय रेलवे स्टेशन पर मची अफरा-तफरी और सीट के लिए मच रही भागम भाग को देखकर हतप्रभ हुआ जा रहा था। लग रहा था, जैसे यहां रेलों की प्रदर्शिनी या मेला लगा हुआ है, एक रेल आ रही थी तो दूसरी रेल प्रस्थान के लिए तैयार थी। प्लेटफॉर्म पर मूँगफली, समोसा, पानी बोतल, शीतल पेय पदार्थ खिलौना वगैरह-वगैरह बेचने वाले कर्मचारी भारी संख्या में मौजूद थे जो नए-नए अंदाज में आवाजें लगाकर अपना सामान बेच रहे थे। प्लेटफॉर्म पर कई मिठाई, पूरी- कचौड़ी, समोसा और पकौड़ों की ठेले भी लगे हुए थे, जो ग्राहकों से भरी हुई थी। किंतु मन में प्रश्न उठ रहा था कि रेलवे विभाग किस प्रकार इतनी तकनीकी कुशलता से इन सबका प्रबंध कर लेता है। मैं रेलवे विभाग के कार्य प्रणाली की उधेडबुन में था कि आकाशवाणी हुई, मेरा मतलब घोषणा हुई "यात्रीगण कृपया ध्यान दे। गाड़ी संख्या 12296 (दानापुर-बंगलूरु) दानापुर से बंगलूरु जानेवाली संघमित्रा एक्सप्रेस जिसके आने का निर्धारित समय 20.40 है, 20 मिनट विलंब से चल रही है।

यात्रियों की असुविधा के लिए हमें खेद है ।" घोषणा समाप्त होते ही यात्री अपना – अपना सामान लेकर प्लेटफॉर्म पर जहां तहां अपनी बोगी का अनुमान लगाकर जाने लगे, क्योंकि उस समय आरा स्टेशन पर गाडियों के बोगी की संख्या बतानेवाली दर्शिका पट्ट की सुविधा उपलब्ध नहीं थी । घोषणा के अनुरूप ट्रेन प्लेटफॉर्म नंबर 2 पर आकर खड़ी हो गई । एक बारगी तो लोगों के सीट पकड़ने हेतु उबाल को देखने के लिए मैं लालायित हो उठा, किंतु उस ओर मुखरित हुए बगैर मैं अपनी बोगी की तरफ बढ़ चला । सीट पर पहुँचकर मैंने अपनी पीठ थपथपाई, इसलिए कि मैंने पहले ही अपनी सीट आरक्षित करवा रखी थी। नहीं तो मुझे भी आज इन परेशानियों से जूझना पड़ता ।

धीरे- धीरे बोगी में यात्रियों का आना प्रारंभ हुआ, बोगी की सभी सीटों पर यकायक आक्रमण सा होता प्रतीत होने लगा, लोग अपने सामान को जहाँ – तहाँ ठूसने में लगे थे । इत्तिफाकन मेरे पास इतना सामान नहीं था, ले – देकर दो बैग थे, बड़े बैग को सीट के नीचे घुसेड़ दिया, इससे पहले कि कोई और वह जगह हथिया ले तथा दूसरा बैग अपने साथ ऊपर वाली बर्थ पर रख लिया जो मेरे नाम से आरक्षित थी । धीर- धीरे ट्रेन आरा स्टेशन से प्रस्थान करने लगी । सभी यात्री अपनी सीटों पर विराजित हो चुके थे । रेल अपनी रफ्तार पकड़ चुकी थी । मैं अपनी बर्थ पर चित पड़ा था । कुछ यात्री सोने की तैयारी कर रहे थे तो, कुछ खाना खा रहे थे । मैं रात्रि का भोजन ले चुका था । रात गहराती जा रही थी, ठंड भी अपने चरम पर थी गाड़ी की रफ्तार बढ़ने से हिचकोले अब मुझे लोरियाँ सुनाने लगी, धीरे – धीरे मैं नींद के आगोश में जाने लगा । अभी मैं गहरी नींद की गोद में सोने ही वाला था कि कानों को झिझोड़ते हुए आवाज आई "भाई साहब उठिए, सुनिए तो।" मैं हड़बड़ाकर उठा । सामने देखता हूँ कि एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति मेरे सामने याचक – भाव लिए खड़ा था। "बोलिए ताऊ क्या बात है ? "

मैंने उससे प्रति उत्तर किया । वह अपने पीले दांतों को बाहर निकालकर कुटिल मुस्कान को कानों तक ले जाते हुए बोला "मैं और मेरी पत्नी आँख के इलाज के लिए शंकर नेत्रालय, चेन्नै जा रहे हैं । मेरी पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है जो आपकी नीचे वाली बर्थ पर सो रही है, कृपा कर के आप मेरी बर्थ पर सो जाइए ताकि मैं अपना पत्नी को संभाल सकूं, साहब..... आप मुझे यह बर्थ दे दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।" मैं बुद्धिहीनता का शिकार हो गया था जो मैंने दयावश सीट बदल ली, क्योंकि आगे जो घटने वाला था, उससे मैं बिलकुल अंजान था । उस सज्जन की बर्थ पर पहुँचा तो वहाँ वातानुकूलक सा माहौल था, यानि कैबिन में बहुत ज्यादा ठंड थी । ठिठुराते- कंपकंपाते मैं कंबल ओढ़ कर बर्थ पर लेट गया । नींद न जाने कहाँ काफूर हो गई क्योंकि ठंड से मेरे शरीर पर बार-बार सिहरन पैदा हो रही थी, माथे पर लग रही ठंडी हवाएं तलवार सी कातिलाना हमला कर रही थी । आखिर वापस उठ बैठा और निगाहें तलाशने लगी कि आखिर इतनी ठंड कहाँ से आ रही है। आधी रात को मैं जासूस जैसा बन गया, अपनी तीक्षण नजरों को दौडाने लगा, नजरें दौडाते – दौडाते जहाँ ठहरी कि मुझे अपने-आप पर हँसी आने लगी और उस पीले दांत वाले महापुरुष पर क्रोध । दरअसल उस बर्थ के पास वाली खिड़की का कांच टूटा हुआ था। बर्थ से सटकर दीवार में भी बहुत से छेद थे, जिनसे छनकर आती हवाएं तलवार सा काम कर रही थी । मैं ठंड से बेहाल था और नींद कोसों दूर । सारी रात सीट पर करवटें लेकर सा बैठे – बैठे गुजारी और अपनी दयाद्रता पर हँसता रहा । जब-जब अपनी मूल बर्थ को देखता, जहाँ वह सज्जन

आराम से नींद में तल्लीन थे, मेरा पारा सातवें आसमान पर चढ़ जाता । भोर होते – होते हल्की सी झपकी आई जो सुबह सूरज के आसमान में आ जाने तक बनी रही ।

थोड़ा सा सो लेने के बाद सुबह उठने पर मैं अपने आपको हल्का महसूस कर रहा था । मेरी रेलगाड़ी उत्तरप्रदेश को पार कर मध्य प्रदेश की सीमा में प्रवेश कर चुकी थी । यह जंगल और पहाड़ों से आच्छादित संरक्षित वनक्षेत्र था । ऊँचे – ऊँचे पहाड़, पर्वत, कतार बद्ध पेडों की मेला, उमड़-घुमड़ कर आते बादल जैसे अठखेलियाँ कर रहे थे, जैसे सनसनाती हवा के झौके भी मदमस्त हो बतिया रहे हो । जहाँ अभी- अभी बारिश हुई थी वहाँ हल्की सी खिली धूप के बाद इंद्रधनुष के सतरंगी नजारे मेरे सामने थे । पर्वतों को काटकर बनाए गए सुरंगों से जब हमारी रेलगाड़ी गुजरती थी तो मानो ऐसा लगता था कि पूरी रेलगाड़ी को बहुत बड़े चादर से ढक लिया गया हो । द्वार के पास खड़े लोग उत्सुकता से जोर – जोर से चिल्लाकर अपनी खुशी का इजहार कर रहे थे, छोटे – छोटे बच्चे डर के मारे अपने माँ से चिपककर रो रहे थे । मन ही मन मैं भी रोमांचिंत हो रहा था । एक – एक करके सभी सुरंग मुझसे दूर होते गए और सपाट मैदानों ने उनकी जगह ले ली । ऐसा लग रहा था जैसे मनोरम सपना लेकर जागा हूँ । हमारी गाड़ी मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा सेतु से गुजर रही थी । नागपुर स्टेशन आनेवाला था । मन फिर से प्राकृतिक नजारों को देखने के लिए लालायित हो रहा था । बोगी के दरवाजे के पास खड़ा होकर सनसनाती हवाओं का आनंद ले रहा था, जहाँ कुछ ओर यात्री भी पायदान पर बैठकर प्राकृतिक दृश्यों का मजा लूट रहे थे । दोनों तरफ संतरों के बागान ही बागान दिखाई दे रहे थे, जिसे हमारी गाड़ी अपनी तेज रफ्तार से चीरती हुई आगे जा रही थी । जो खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहे थे । मैं मन ही मन कह उठा “नागपुर वास्तव में संतरों की नगरी है ।” गाड़ी अपनी निर्धारित ठहराव पर रुकते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ती जा रही थी । पूरे दिन की यात्रा के बाद रात होते –होते गाड़ी आंध्रप्रदेश की सीमा से गुजर रही थी । आंध्रप्रदेश में ठंड कम होती चली गई । रात्रि को भोजन खाने के बाद मैं अपनी बर्थ पर लेट गया और किताब में खो गया । कब नींद की आगोश में आ गया, ये मुझे भी पता नहीं चला । सुबह आँखें खुली, अब मैं कुछ ही घंटों में तमिलनाडु की सीमा में प्रवेश करने वाला था । मैं नीचे खिड़की के पास वाले बर्थ पर आकर बैठ गया, जो रात में ही खाली हो गई थी । बहती हुई ताजी हवाएं बता रही थी कि तमिलनाडु का मौसम खुशनुमा है । गाड़ी अपनी निर्धारित ठहराव वाले स्टेशनों पर रुकते हुए जा रही थी । दोपहर 13.30 बजे हमारी गाड़ी चेन्नै रेलवे स्टेशन पर आकर रुकी । मैं गाड़ी से नीचे उतरकर आस-पास की दुकानों से कुछ ठंडा पेय पदार्थ, पीने की पानी का बोतल और नाश्ता खरीद लिया । मैंने देखा कि चेन्नै रेलवे स्टेशन पर काले रंग के वस्त्र पहने, माथे पर तीन अंगुलियों की मदद से भस्म लगाए, गले में बड़े-बड़े रुद्राक्ष की माला पहने माथे पर गठरी रखे, बड़ी-बड़ी दाढी और मूछें वाले, नंगे पाँव लोग भारी संख्या में मौजूद थे । मैंने पास ही खड़े एक सज्जन से उनके बारे में पूछा तो उन्होंने टूटी – फूटी हिंदी भाषा में बताया कि जिस प्रकार उत्तर भारत में, श्रावण मास में लोग भगवा वस्त्र धारण करके भगवान शंकर के दर्शन के लिए बैजनाथ धाम जाते हैं, उसी प्रकार नवंबर से जनवरी महीने तक भगवान अय्यप्पा के दर्शन के लिए लोग बड़ी संख्या में केरल के शबरिमला जाते हैं। मैंने मन ही मन भगवान अय्यप्पा का नाम लेकर उनको नमन किया । दोपहर लगभग 14.00 बजे चेन्नै से हमारी गाड़ी प्रस्थान हुई । मैं खिड़की के पास वाले बर्थ पर आकर बैठ गया । थोड़ी ही देर बाद गाड़ी पेरंबूर स्टेशन पर आकर रुकी तो मैं खुशी से अपनी सीट पर ही उछल पड़ा और अनायास ही मेरे मुँह से शब्द निकल पड़े “अरे ! यही पर तो मेरा शारीरिक दक्षता परीक्षण हुआ था ।” मैं उत्सुकतावश

गाड़ी से नीचे उतर गया और चारों ओर नजरे घुमाकर देखने लगा । तभी गाड़ी की सीटी बजी, मैं झट से अंदर आकर अपनी सीट पर बैठ गया। रास्ते में आने वाली छोटी – बड़ी पहाड़ियों, द्रविड शैली में बने हुए मंदिरों, चर्चों के ऊँचे शिखरों पर लगे लाल रंग के क्रॉस चिह्नों, खेत खलिहान आदि को देख – देख कर मैं बहुत ही खुश हो रहा था ।

सायं लगभग 17.35 बजे हमारी गाड़ी जोलारपेट्टै जंक्शन पहूँची । मैं अपने दोनों बैगों को लेकर आसानी से उतर गया । तभी मुझे चेन्नै से कोयंबत्तूर तक जानेवाली गाड़ी संख्या 12679 इंटरसिटी एक्सप्रेस की प्लेटफॉर्म नं.1 पर आने की घोषणा सुनाई दी । मैंने जल्दी से टिकट काउंटर से एक सामान्य टिकट लिया । तभी इंटरसिटी एक्सप्रेस जोलार पेट्टै स्टेशन के अंदर प्रवेश करने लगी । मैंने अपने दोनों बैगों को लेकर दौडते हुए आगे वाले साधारण कोच में चढ गया । कोच के अंदर काफी भीड़ थी । किसी तरह बैठने की जगह मिल गयी थी। आखिर वह समय भी आ गया, जब यात्रा का अंतिम पड़ाव निकट आ गया । गाड़ी नियत समय से कुछ देरी से सेलम जंक्शन पहूँच गई । एक लंबी और सुकून भरी यात्रा के बाद मैं अपनी मंजिल पर था । सेलम की पावन धरती को अपने पैरों को नंगा करके प्रथम बार स्पर्श करना मेरे लिए कुछ इस प्रकार सुकूनदायक था, जैसे मंदिर में नंगे पाँव प्रवेश करना ।

प्लेटफॉर्म नं. 3 पर स्थित कैंटीन में खाना खाने के बाद प्लेटफॉर्म नं. 1 के मुख्य निकास द्वार से बाहर निकला । स्टेशन के ठीक सामने, सड़क के दूसरी तरफ स्थित गुरुलॉज में ठहरने के लिए एक कमरा लिया । कमरे में बैग रखने के बाद सबसे पहले मैंने स्नान किया । फिर मोबाइल से अपने घरवालों से उनकी कुशल – क्षेम पूछा और अपने सकुशल सेलम आने की सूचना दी । दूसरे दिन से मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में जाने का सिलसिसा शुरू हुआ। चरण-दर-चरण सारी प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद मेरी, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/ रेलपथ/दक्षिण/सेलम में चतुर्थवर्गीय कर्मचारी के रूप में दिनांक 14.02.2012 को नियुक्ति हुई । मौजूदा दौर में जब भी सेलम स्टेशन जाता हूँ तो रेलवे स्टेशन के मुख्य निकास द्वार से बाहर निकलते ही मेरी नजरें कौतूहलता से गुरुलॉज विश्रामगृह के पट्ट को देखने के लिए लालायित हो उठती है । जैसे ही मैं गुरु लॉज पट्ट को देखता हूँ तो वर्षों पुरानी जन्मभूमि से कर्मभूमि तक मेरे द्वारा की गई रेल यात्रा की तस्वीरें मस्तिष्क में किसी चलचित्र की भाँति चलने लगती है ।

मेरी यह रेल यात्रा मेरे लिए जीवन भर अविस्मरणीय रहेगी ।

प्लास्टिक का कम उपयोग - स्वच्छ पर्यावरण की पहल

नंदलाल मीना,
स्वास्थ्य एवं मलेरिया निरीक्षक, मेट्टुप्पालैयम

विज्ञान के क्षेत्र में हुई खोज और आविष्कारों नें समाज और दुनिया को बहुत कुछ प्रदान किया है प्लास्टिक भी उनमे से एक है प्लास्टिक से बनी चीजों का विकास इतनी तेजी से हुआ की प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित उत्पादों को लगभग घरों व दुनिया से बाहर कर दिया जबकि प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित वस्तुएं न तो मानव जाति के लिए हानिकारक थी और न ही पर्यायवरण के लिए खतरा थी ।

पहले मिट्टी से बनी अनेक वस्तुएं घरों में दिखाई देती थी लेकिन अब दिखावट की वस्तुएं बनकर रह गयी है मिट्टी से बने बर्तन, कुल्हड़, घड़े आदि बाज़ारों में खोजने में भी नहीं मिलते है । पेड़ों के पत्तों से बनी हुई पत्तल व दोने खाना खाने के लिए काम में लेते थे और भोजन आदि को परोसने के लिए भी लकड़ी निर्मित ही काम में लेते थे । लेकिन अब इनकी जगह प्लास्टिक से निर्मित वस्तुओं ने ले ली है घरों से लेकर अस्पतालो तक और खाना पैकिंग शादी समारोह सभी जगह प्लास्टिक का ही उपयोग है ।

प्लास्टिक की खोज 1855 में अलेक्जेंडर पार्क्स ने की थी । इसे हम सेल्युलॉईड के नाम से भी जानते है। प्लास्टिक से बनी हुई चीजे हल्की टिकाऊ व सस्ती होती है । 1950 के दशक से लगभग 8.4 बिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक का उत्पादन किया गया है और इसका आधा पिछले 15 वर्षो में निर्मित किया गया है ।

प्लास्टिक का प्रयोग अधिकतर पेय व खाद्य पदार्थ पैकेजिंग व् चिकित्सा के श्रेत्र में प्रयुक्त की जाने वाले उपकरण में होता है विश्व वन्य जीव कोष के अनुसार प्लास्टिक पर्यायवरण के लिए बहुत हानिकारक है यह गैर बायोडिग्रेडेबल है, इसे नष्ट होने में वर्षों लग जाते है ।

प्लास्टिक के अधिक इस्तेमाल से लोगो के स्वास्थ्य व वातावरण पर प्रभाव :- प्लास्टिक का अधिक उपयोग जलवायु प्रदुषण का मुख्य कारण है । विश्व वन्यजीव कोष का दावा है की प्रति व्यक्ति एक सप्ताह में लगभग 5 ग्राम प्लास्टिक का सेवन करता है । प्लास्टिक के कारण एक मिलियन समुद्री जीव व 700 प्रजातियां प्रभावित हो जाती है । प्लास्टिक प्रदुषण के कारण महानगर, शहर, गांव व जीव जंतु सभी प्रभावित हैं । महानगरों व शहरों में बाढ़ आना व वायु प्रदुषण बढना ।

प्लास्टिक में कई घातक रसायन पाए जाते है जिसके कारण कई बीमारियाँ का प्रकोप बढ रहा है तथा लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है जैसे कैंसर व प्रजनन/बांजपन तथा हॉर्मोन असंतुलन आदि ।

प्लास्टिक उपयोग से होने वाले नुक्सानों को कम कैसे करें :- प्लास्टिक कचरा प्रबंधन प्रणाली हमारे शहरो, नदियों, झीलों, महासागरों और दुनियाभर में कमजोर समुदायों पर दवाब ड़ाल रही है । प्लास्टिक प्रतिबंध की लहर देश व दुनिया में फ़ैल रही है । कुछ जगहों पर प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाने की बात की जा रही है । प्लास्टिक वस्तुओं की वजह से होने वाला प्रदूषण बहुत बड़ी चुनौती बन गया है । भारत प्लास्टिक को प्रतिबंध करने के लिए प्रतिबद्ध है । हमारा देश इस वर्ष 2022 में प्लास्टिक को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की और अग्रसर है । भारत सरकार के पर्यायवरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने स्थलीय एवं जलीय इको सिस्टम पर बिखरे हुए प्लास्टिक के कचरे के प्रतिकूल प्रभावों को ध्यान में रखते हुए प्लास्टिक अपशिस्ट प्रबंधन संशोधन नियम 2021 को अधिसूचित कर दिया है । यह नियम वर्ष 2022 तक कम उपयोगिता और कचरे के रूप में बिखरने की अधिक क्षमता रखने वाले प्लास्टिक वस्तुओं को प्रतिबंध करता है ।

01 जुलाई 2022 से पॉलीस्टीरीन और विस्तारित पॉलीस्टीरीन समेत निम्नलिखित उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं के निर्माण आयात भंडारण वितरण बिक्री और उपयोग को प्रतिबंधित किया जाएगा । प्लेट, कप, गिलास, काटे, चम्मच, चाकू, स्ट्रॉ, ट्रे, मिठाई के डिब्बो के चारो और लपेटे जाने या पैकिंग करने वाली फिल्म, निमंत्रण कार्ड, सिगरेटों के पैकेट तथा 100 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक या पीवीसी बैनर । हल्के वजन वाले प्लास्टिक कैरी बैग की वजह से फैलने वाले कचरे को रोकने के लिए 30 सितम्बर 2021 से प्लास्टिक कैरी बैग की मोटाई 50 माइक्रोन से बढाकर 75 माइक्रोन और 31 दिसम्बर 2022 से 120 माइक्रोन कर दी गयी है इससे प्लास्टिक कैरी बैग का पुनः उपयोग किया जा सकेगा ।

स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों में अपशिष्ट प्रबंधन को प्रबल किया जा रहा है। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 के कार्यान्वयन को मजबूत करने के लिए एक विशेष कार्यबल गठित करने का आग्रह किया गया है ।

मेरा संघर्ष

पुरुषोत्तम कुमार, स्टेशन मास्टर
मैग्नसाइट जंक्शन

यह जीवन स्पर्धा है
इसमें हैं कई कड़ियाँ – बेड़ियाँ
इसमें जो उत्तम ठहरें
वे रह जावें
उत्तम मार्ग बतावें
बहुत मिला अपमान
व्यवहार बुरा था
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
मेरा अपराध कुछ यूँ
अलग खड़ा था
हाँ में हाँ न मिलाया
इसलिए अपराध बड़ा था ।
पर मैं भी मनमें ठान लिया था
और अड़ा था
मेरी नियत साफ थी
मेरी मंजिल तय थी
मैं उस पर अडिग और
अविराम चल पड़ा था
मेरे प्रति बाबूजी का समर्पण
मां को मेरे प्रति निस्वार्थ प्यार
एक बोझ की तरह मेरे ऊपर पड़ा था
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
सुविधाएं नहीं थी
थी सिर्फ तंगी - तंगी
आय सिर्फ उतनी थी कि
रहती थी सिर्फ मंदी – मंदी
मेरे सामने कई और भी
चुनौतियाँ खड़ा था
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
पवन प्रतिकूल था

मंजिल तो मेरी तय थी
पर रास्ते कठिन था
धूने का तो अँबर मचली थी
पर सतत् ऊँचाई
बढ़ता ही जा रहा था ।
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
कभी-कभी मेरा मन
कहता था
लौट चलो इस कठिन मार्ग से
निर्बल था अब और
लड़ न सकता था ।
पर मेरा दिल
हमेशा
मन के विपरीत रहता था
मैं तो बीच मझधार में था
पर विश्वास अटूट था
इसमें भी
सामने बाबूजी का संघर्ष खड़ा था
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
मेरे लिए कोई सुबह
कोई शाम न थी
मेरे लिए कोई दोपहर
कोई आराम न था
कब जागना है
कब सोना है
यह भी मेरे बस में न था
पर मैं भी मन में ठान लिया था
और अड़ा था
पर अब .....
चुनौतियाँ नई हैं .....
आशाएं नई हैं ......

विज्ञापन के मायाजाल में बच्चे

सूरज पी.एस
ट्रैक अनुरक्षक III, दक्षिण/सेलम

बच्चों को ईश्वर का रूप कहा जाता है। बच्चे देश का भविष्य एवं अगली पीढ़ी होते है। बच्चों में कपट नहीं होते। मासूमियत उनकी सबसे बड़ी विशेषता है । बच्चे कच्चे मिट्टी की तरह होते हैं। हम उसे किस रूप में ढालते हैं उसी रूप धारण कर लेते हैं। बच्चों में नकल करने की आदत होती है इसके लिए वह अपने माता-पिता या आसपास रहने वाले को अपना आदर्श बना लेता है और उन्हीं के आधार पर बच्चों में विशेषताएं विकसित होती हैं। बचपन मानव जीवन का सुंदर काल हैं, यह एक व्यक्ति का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक विकास का आधार है । वर्तमान युग डिजिटल युग है इसका बच्चों के विकास पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है । बच्चे अधिक समय कंप्यूटर, मोबाइल एवं टी.वी के सामने बिताते हैं । इंटरनेट के इस युग का कई लाभ हैं, फिर भी इसका अधिक उपयोग बच्चों के सामाजिक विकास में कई तरह की बाधाएं डालते हैं । टी.वी देखते, कंप्यूटर या मोबाइल उपयोग करते समय बच्चे कई सारे विज्ञापन भी देखते हैं । इन विज्ञापनों का भी बच्चों पर बहुत बड़ा असर पड़ता है ।

बच्चे जब टी.वी देखते हैं, कार्यक्रम से ज्यादा विज्ञापन पसंद करते हैं । विज्ञापन पर जो भी दिखाते हैं, उसे सच मान लेते हैं । विज्ञापन का मुख्य उदेश्य किसी उत्पाद या सेवा को बेचना है। आधुनिक युग में व्यापार को बढ़ाने के लिए इस माध्यम की अहम् आवश्यकता भी है। आकर्षक विज्ञापन समाज को व्यापारिक वस्तु व सेवा के लिए प्रेरित करता है। विज्ञापनों की भ्रामक और लुभावनी भाषा बच्चों पर सर्वाधिक प्रभाव डालती है। बच्चों के पसंदीदा फिल्म स्टार या सूपर हीरो द्वारा प्रस्तुत विज्ञापनों पर वे और आकर्षित होते हैं । बच्चे चाहते हैं कि वे उन्हीं वस्तुओं का प्रयोग करें जो उनके पसंदीदा फिल्म स्टार या अन्य सूपरहीरो द्वारा विज्ञापित करते हुए बेची जा रही हैं। वास्तव में बच्चों का मन कोमल होता है और उनमें यह सोचने की क्षमता नहीं है कि है कि इन वस्तुओं का सच्चा – झूठा बखान वे लाखों रुपया लेकर करते हैं ।

यह विज्ञापनों का असर है कि माता – पिता भी बच्चों के लिए बहुविज्ञापित वस्तुओं को ही खरीदते हैं, चाहे उसकी गुणवत्ता कैसे भी हो । दुकानदार भी अपने उत्पाद-लागत का बड़ा हिस्सा विज्ञापनों पर खर्च कर रहे हैं और घटिया गुणवत्ता वाली वस्तुएँ भी उच्च लाभ अर्जित करते हुए बेच रहे हैं। विज्ञापन से कुछ लाभ भी है । एक ही वस्तु के विभिन्न उत्पादक होते हैं । सभी के विज्ञापन भी आकर्षक होते हैं तो उपभोक्ता को किसी एक को चुनना पडता है तब माता -पिता वस्तुओं के मूल्य और गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन कर आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं, परंतु इसके लिए इनकी लुभावनी भाषा से बचने की आवश्यकता रहती है।

आजकल के विज्ञापनों में अश्लीलता का भरमार है । कई विज्ञापन में ख़रीदारों को आकर्षित करने के लिए ख़ूबसूरत युवतियों का इस्तेमाल करते हैं। चॉकलेट से लेकर कपड़े तक, आप जो भी विज्ञापन देखते हैं, उसमें अश्लीलता का चित्रण है। अनेक विज्ञापन ऐसे है जो परिवार समेत नहीं देखे जा सकते हैं। स्त्री को प्रदर्शन की एक वस्तु मात्र के रूप में चित्रित कर रहे हैं । इससे बच्चों के मन में स्त्री के प्रति सम्मान कम होने की संभावना है । आजकल बच्चों को लगता है

कि स्वीकार्य होने के लिए उन्हें उस तरह से दिखने की जरूरत है या तो उन्हें लोकप्रिय बनने के लिए ऐसे व्यवहार करना चाहिए।

बच्चे जितना ज्यादा विज्ञापन देखते है उतना ज्यादा खिलौनों, जंक फुड और अन्य वस्तुओं की मांग करते हैं। जब बच्चे अकेले बैठकर टी.वी देखते हैं, तो विज्ञापनों पर ज्यादा ध्यान देते हैं। विज्ञापन का माध्यम चाहे जो भी हो बच्चों के सामने सभी प्रकार के विज्ञापन आ जाते हैं, वे समझ ही नहीं पाते हैं कि कौन सा उनके लिए सही हैं कौन सा नहीं। टेलीविजन पर सबसे आम विज्ञापनों में फास्ट या जंक फूड, पिज्जा, बर्गर, और कुछ अन्य भोजन हर मिनट स्क्रीन पर दिखाया जाता है। फिट दिखने वाले वयस्क/ बच्चों को तरह-तरह के जंक फूड खाते हुए देखते हैं और मानते हैं कि वे स्वस्थ हैं क्योंकि वे विज्ञापन की अवधारणा को नहीं समझते हैं। इन विज्ञापनों की वजह से बच्चों में अस्वास्थ्यकर फास्ट फूड का सेवन बढ़ जाता है। फास्ट फूड और स्नैक्स की बढ़ती लोकप्रियता ने बचपन में मोटापा, हृदय की समस्याएं, मधुमेह और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देता है। विज्ञापनों में छोटे और स्वस्थ मॉडल का उपयोग किया जाता है, जो इस तथ्य को अस्पष्ट करता है कि ये खाद्य पदार्थ स्वास्थ के लिए अच्छा नहीं हैं।

आज की युवा लड़कियों को टीवी और पत्रिकाओं में दिखाई देने वाली छवियों के कारण शरीर संबंधी बड़ी समस्याएं होती हैं। उन्हें बताया जाता है कि उन्हें समाज में स्वीकार किए जाने के लिए विशेष तरीके अपनाने की जरूरत है। अगर वे पतली या सुंदर नहीं हैं, तो वे लोकप्रिय नहीं हैं और वे अच्छे दोस्त नहीं होंगे। उन्हें यह भी लगता है कि अगर वे टीवी पर दिखनेवाली महिलाओं की तरह नहीं दिखेंगी या अभिनय नहीं करेंगी तो उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा। बच्चे दिखावटी या बनावटी सुंदरता को प्रमुखता देने लगते हैं। उदाहरण के लिए -एक बाल काला करने के उत्पन्न के विज्ञापन ऐसा है कि एक छोटी सी बच्ची अपने पापा को स्कूल के मीटिंग में ले जाना नहीं चाहती क्यूंकि उनका बाल सफेद है, बाल काला करके युवक दिखने के बाद ही वह मानती हैं – ऐसे विज्ञापनों से बच्चों को गलत सीख ही मिलती ।

विज्ञापन बच्चों को ऐसे उत्पाद खरीदने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिसकी उन्हें उनकी आवश्यकता हो या न हो, वे उपयोगी हों या नहीं। माता-पिता को ऐसी चीज़ें खरीदकर देने के लिए मनाते हें। बच्चे विज्ञापनों में संदेशों की गलत व्याख्या करते हैं। आज हम जो विज्ञापन देखते हैं उनमें से कई में खतरनाक स्टंट होते हैं जिनका बच्चे अनुकरण करने का प्रयास करते हैं क्योंकि वे विज्ञापनों के साथ आने वाली कानूनी चेतावनियों को नहीं समझते हैं। विज्ञापन बच्चों के आत्मसम्मान को प्रभावित कर सकते हैं और यदि उनके पास विज्ञापनों में दिखानेवाले नवीनतम उत्पाद नहीं हैं तो वे अन्य बच्चों से हीन महसूस कर सकते हैं।

बच्चों को विज्ञापन के इस मायाजाल से बचाने के लिए माता-पिता को कोशिश करना चाहिए। सबसे बड़ा उपाय यह है कि बच्चों का स्क्रीन टाइम कम किया जाय। इस तरह, माता-पिता छोटे बच्चों के सामने आने वाले गलत संदेशों को कम कर सकते हैं। टेलीविजन देखने के लिए समय देते समय उनके बच्चे क्या देख रहे हैं, इस पर नज़र रखें। जब बच्चे कुछ मांगते हैं, तो माता-पिता को तुरंत मना नहीं करना चाहिए। उनसे पूछें कि वे उस विशेष उत्पाद को क्यों चाहते हैं और उन्होंने इसे कहाँ देखा या सुना। अगर वे जवाब देते हैं कि उन्होंने इसे टेलीविजन या इंटरनेट पर देखा है, तो उन्हें समझाना चाहिए कि विज्ञापनदाता अपने उत्पाद को किसी भी तरह बेचने की कोशिश कर रहे हैं। इससे विज्ञापन के बारे में और लोगों में उनके काम करने के तरीके के बारे में अधिक चर्चा हो सकती है। यदि उनका कोई पसंदीदा टीवी शो है, तो उनके लिए रिकॉर्ड करके दिया जाय ताकि बीच में आनेवाले विज्ञापन दिखाई न दें। वे

अपने पसंदीदा शो की डीवीडी भी खरीद सकते हैं, इस प्रकार अपने टीवी स्क्रीन समय और विज्ञापनों के संपर्क को सीमित कर सकते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि उत्पाद बेचने के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा अपने उत्पाद के गुणों को बढ़-चढ़ाकर दिखा रहे हैं , टीवी पर आप जो कुछ भी देखते हैं, खासकर विज्ञापन, पूर्ण रूप से विश्वसनीय नहीं है । बच्चों से ये पूछना है कि ये किस चीज का विज्ञापन है और उसके लिए ये क्यूं दिखा रहे हैं। ये दिखाने की या बताने की तो जरूरत ही नहीं है। ऐसे समझाने पर बच्चे अगली बार याथार्थ्य से परे कुछ विज्ञापन देखने पर सोचने लगते है और उन्हें सही- गलत का पहचान होता है । विज्ञापनों में कितना सच है और कितना झूठ यह उनके समझ में आ जाता हैं। यह आगे जाकर बच्चों को हर चीज़ में सही-गलत पहचानने में सहायक होगा। माता-पिता यह सुनिश्चित करने के लिए कई चीजें कर सकते हैं कि विज्ञापनदाताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न मार्केटिंग रणनीतियाँ उनके बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव न डालें। सबसे अच्छी चीज जो वे कर सकते हैं वह है बच्चों को बाहर जाने और खेलने, पढ़ने, इनडोर और आउटडोर खेल खेलने और सामाजिक मेलजोल के लिए प्रोत्साहित करना। एक बार जब उन्हें पता चलता है कि उन्हें अच्छा समय बिताने के लिए टीवी से चिपके रहने की ज़रूरत नहीं है, तो वे स्क्रीन पर कम समय व्यतीत करेंगे और विज्ञापनों पर अधिक ध्यान न देंगे।

हमारा हिंदुस्तान

पवन रामटेके,
कार्यालय अधीक्षक/सेलम

मेरा देश है एक प्यारा सा, एक प्यारा सा मेरा देश है
बसता हमारे दिलों जां में है , यही हमारी पहचान है -२
वो इंडिया है , वो इंडिया है, वो इंडिया है /
- ना धर्म जाति, ना अमीरी गरीबी
यहाँ रहते है एक साथ यही
यहाँ हिन्दू भी यहाँ मुस्लिम भी
और सिख ईसाई है भाई भाई
सभी धर्मों को जोड़ता है
भारत का वो संविधान है --२
वो भारत है वो भारत है -४
-- जहाँ कई संस्कृति, जहाँ कई भाषाएं
यहाँ खिलते है यहाँ मिलते है

जहाँ खाना पीना, जहाँ रहना जीना
जहाँ त्योहारों का भंडार है
जहाँ मिलता सबको सम्मान है
वो ही हमारा हिंदुस्तान है
यही हमारी पहचान है
सबसे वो प्यारा हिंदुस्तान है
उसमे बसती हम सबकी जान है
वो ही हमारा हिंदुस्तान है
यही हम सबकी पहचान है
जान से भी प्यारा हिंदुस्तान है
वो हिंदुस्तान है, वो हिंदुस्तान है
वो हिंदुस्तान है, वो हिंदुस्तान है

कचरा - एक बड़ी समस्या पृथ्वी पर

रामस्वरूप मीना,
स्वस्थ्य एवं मलेरिया निरीक्षक/सेलम

कचरा एक बहुत ही बड़ी समस्या है जो भारत में दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, इससे निजात पाने के लिए हम सभी को प्रयास करना है। कचरा कई तरह का होता है

1.घर का कचरा

2.कैंटीन का कचरा

3.हॉस्पिटल का कचरा

4.स्कूल, कॉलेज का कचरा

5. बस स्टैंड का कचरा

6.रेलवे स्टेशन का कचरा

8. ट्रेन के डिब्बों में उत्पन्न होने वाला कचरा

9. ट्रेन के भोजनालय में उत्पन्न होने वाला कचरा

10. औद्योगिक क्षेत्र का कचरा

इस तरह कचरा बहुत से स्त्रोतों से प्राप्त होता है जिसमें पॉलीथिन, रब्बर, प्लास्टिक, कांच की बोतल, लोहा, पेपर और खाद्यपदार्थ आदि प्राप्त होते है। अगर सरकार चाहे तो इस कचरे को सही ढंग से इसका निस्तारण किया जा सकता है। गांव से ज्यादा शहरों में ज्यादा कचरा उत्पन्न होता है क्योंकि गांव में अधिकतर लोग पॉलीथिन और कई तरह की चीजें कम उपयोग करते हैं जिससे वहां कचरा कम होता है और खाद्य पदार्थ जो होते हैं वह भूमि के अंदर खाद बनाने के काम लिया जाता है और फलों और सब्जियों का वेस्ट भेड़ बकरियों को खिलाकर डिस्पोज किया जाता है। सरकार चाहे तो कचरे का बहुत अच्छे से निस्तारण किया जा सकता है उसके लिए एक पत्र जारी करके एक कानून बनाकर के जो भी कचरा जो उत्पन्न करेगा वह उसे निस्तारित भी करेगा, वह उसकी जिम्मेदारी होगी अन्यथा आपको जुर्माना देना पड़ेगा। कचरे का निस्तारण करने के लिए सरकार को गाइडलाइंस बनाकर जैसे कि घर में उत्पन्न होने वाला कचरा खाद्य पदार्थों को अलग इकट्ठा किया जाए और उसे अगर शहर के अंदर जगह हो तो उसी के पास खाली जगह में एक गड्ढा खोदकर उस गड्ढे में खाद्य पदार्थों और फल सब्जियों के वेस्ट को डालकर खाद के रूप में बदला जाए। इसके अलावा कांच की बोतल, प्लास्टिक, लोहा, पॉलीथिन यह सब घर के अंदर ही अलग करके रखा जाए। इन सब को महीने में एक बार सरकार के द्वारा भेजी गई गाड़ी के अंदर अलग-अलग दिया जाए, जिससे इनका सही ढंग से निस्तारण किया जाए और इसके लिए वजन के हिसाब से जो जितना कचरा दे उससे उतना चार्ज लिया जाए। ऐसा करने से जनता कचरा कम से कम करने की कोशिश करेगी इसी के साथ भोजनालय, स्कूल, कॉलेज, छात्रावास, हॉस्पिटल सभी जगह अलग-अलग कचरे को अलग-अलग कर के दिया जाए। सरकार को हर बड़े शहरों में ये प्लांट लगाने चाहिए।

1.प्लास्टिक रीसायकल प्लांट

2. पॉलिथीन रीसाइकल प्लांट

3. पेपर रीसाइकिल प्लांट

4. कांच रीसाइकल प्लांट

अगर कोई रोड पर या नदी, नालों, तालाब या समुंदर में कचरा फेंकता है तो उससे भारी भरकम जुर्माना लिया जाए। इसी के साथ उसे उस जगह को साफ करने के लिए 15 या 20 दिन के लिए का दंड दिया जाए। इस तरह हम कचरे का सही तरीके से निस्तारण कर के पेड़ पौधों जीव जंतुओं और आने वाली पीढ़ियों को कई गंभीर बीमारियों से बचाने में कारगर साबित हो सकते हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं से जूझता प्रतिभागी

रूपा मंडल, कनिष्ठ अनुवादक
रेल भर्ती बोर्ड, चेन्नै

आजकल प्रतियोगिता का दौर है। समाज के हर क्षेत्र में प्रतियोगिता से हमारा सामना हो ही जाता है। आज की युवा पीढी भी इससे अछूती नहीं है। जीवन को सुचारू रूप से जीने के लिए इस स्पर्धा से जुझना ही पडता है। भारत के करोडों युवाओं का एक मात्र सहारा यही प्रतियोगिता ही है जो उन्हें नौकरी के लिए उत्साहित करता है। इसलिए प्रत्येक भारतीय अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए इसमे जी जान से लग जाता है। कहा जाता है कि “जीवन एक दौड़ है और इस दौड में वही आगे निकलने में सफल होता है जो लगातार प्रयासरत होता है।” भारत की आबादी लगभग सवा सौ करोड़ हैं। भारत में वर्ल्ड और साउथ एशिया रीजन से भी कहीं ज्यादा कमजोर बेरोजगारी का आलम है। 53.5 करोड़ लोगों के पास खराब क्वालिटी की नौकरी है। भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र (CMIE) 02 मार्च 2020 के अनुसार भारत में रोजगार दर न्यूनतम 46.80 प्रतिशत, अधिकतम 50.80 प्रतिशत है। इस प्रकार लोगो में रोजगार के लिए प्रतियोगिता का होना लाजमी हैं। आजकल, प्रतियोगिता दिन-ब-दिन मुश्किल हो रही है। देश के युवाओं में एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ मची है तथा अपने लक्ष्य को पाने के लिए अभ्यार्थी एक-दूसरे के लिए चुनौती साबित हो रहे हैं। इसके लिए बहुत मेहनत, समर्पण और सबसे महत्वपूर्ण, लगातार प्रयासों की आवश्यकता होती है। चुनौतीपूर्ण रास्ते के लिए खुद को तैयार करने के लिए जरूरी है कि बहुत कम उम्र में शुरुआती कदम उठाएं। आइए हम जानते है कि प्रतियोगी परीक्षाएं होती क्या है? और इसके लिए तैयारी कैसी होनी चाहिए तथा इसके क्रैश न कर पाने के पीछे की समस्या क्या है?

सबसे पहले तो हमे यह जानना है कि प्रतियोगी परीक्षाएं क्या है। प्रतियोगी परीक्षाएँ किसी भी व्यक्ति के ज्ञान एवं क्षमता के मूल्यांकन का एक माध्यम है। जिसका मूल उद्देश्य सही नौकरी के लिए उपयुक्त उम्मीदवारों की भर्ती करना है। इस प्रतियोगिता का एक मात्र ध्येय समाज में प्रत्येक वर्ग से उपयुक्त एवं योग्य उम्मीदवारों का चयन करना है। चयन प्रक्रिया में योग्यता केवल मानदंड ही नहीं है बल्कि यह प्रत्येक वर्ग के लोगों को समान स्तर का दर्जा देने के लिए प्रयासरत है। हर साल युवा बडी संख्या में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आवेदन करते है तथा विभिन्न सार्वजनिक क्षेत्रों में अपने सपनों की नौकरी हासिल करते है। विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाएं आयोजित की जाती है और सभी परीक्षाओं के अपने अलग-अलग मानदंड होते है। परीक्षा बुद्धि, तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच विकसित करने और किसी के कैरियर के लिए एक मजबूत नींव का निर्माण करती है। प्रतियोगी परीक्षाओं का उद्देश्य न केवल प्रतिभा का आकलन करना है बल्कि प्रबंधन और योजना कौशल का परीक्षण करना भी है। यही वो परीक्षा है जो छात्रों को असली दुनिया का सामना करने के लिए तैयार करता है। विभिन्न तरह की चुनौतियों में हिस्सा लेने से बच्चों को उनकी ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद मिलती है। यह उन्हें सिखाता है कि कैसे हार को शान से स्वीकार करना चाहिए और अपनी गलतियों से कैसे सीखना चाहिए। इससे उन्हें जीवन में लगातार मेहनत करने के महत्व भी

समझ में आता है। एक बार जब बच्चे नियमित अनुशासित काम की इस आदत में पड़ जाते हैं, तो वे वास्तविक दुनिया का सामना करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हो जाते हैं।

प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभागियों को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पडता है। इन समस्याओं के कारण कुछ निराश हो जाते हैं और कुछ गलत कदम उठा लेते हैं। अत: हमें प्रतियोगी परीक्षाओं में आने से पहले यह जानना जरूरी है कि इसके सामने समस्या क्या है? क्योंकि स्थिति यह है कि पदों के अनुसार परीक्षार्थियों की संख्या कई गुना अधिक होती है। जिसके कारण प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होने वाले छात्रों को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के दौरान मेरे दृष्टिकोण के अनुसार छात्र को आत्मविश्वास की कमी का सामना करना पड़ता है क्योंकि वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न में वह उत्तर जानता है लेकिन प्रश्नों के उत्तरों के बारे में कम आत्मविश्वास के कारण, इसकी सटीकता और प्रत्येक गलत उत्तर के बाद नकारात्मक अंकों का आतंक है, वह प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास नहीं करता है। परीक्षा पूरी करने के बाद वह सोचता है कि वह उस प्रश्न को परीक्षा हॉल में क्यों नहीं चिह्नित कर पाया और अभ्यर्थी इसी चिंता में पडा रहता है कि काश उसका जवाब दिया होता। जिसके कारण उसे घबराहट तथा नींद की कमी आदि जैसे अन्य बीमारी का सामना करना पड जाता है।

अध्ययन योजना और रणनीति की कमी भी समस्या का एक कारक है। अधिकांश छात्रों को यह पता ही नहीं होता है कि किसी भी प्रतिस्पर्धा में सफलता हासिल करने के लिए किसी भी विषय को योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है। सबसे पहले उन्हें जानने की आवश्यकता यह है कि कब और क्या अध्ययन करना है। और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे "कैसे" अध्ययन करेंगे। ऐसे में वही सफलता प्राप्त करते है, जो अपने निर्धारित लक्ष्य के अनुसार उचित पाठ्यक्रम, अनुशासन और समय के अनुसार कार्य करते है, इसके साथ ही कुछ और भी महत्वपूर्ण बातें है जिन पर विशेष ध्यान देने की जरुरत होती है। हमे अपनें निर्धारित लक्ष्य के अनुसार सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले तन-मन को स्वस्थ रखना आवश्यक है। इसके साथ ही अपने जीवन में अनुशासन और समय की कद्र को भी महत्व देना होगा, अगर हम समयानुसार कार्य करते हैं, तो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल होते हैं। ऐसा कहा गया है, कि अगर इरादे मजबूत हों और खुद पर विश्वास हो तो कोई भी कार्य कठिन नहीं रह जाता है और हर काम आसान हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मूल्यवान लक्ष्य की प्राप्ति का नाम ही सफलता है। किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के अंतर्गत सबसे पहले हमें परीक्षा से सम्बंधित सिलेबस की जानकारी होना आवश्यक है, क्योंकि परीक्षा में पूछे जाने वाले सभी प्रश्न पाठ्यक्रम से सम्बंधित होते है। जब हमें परीक्षा के सिलेबस की अच्छी जानकारी होती है, तो हमे एक दिशा मिल जाता है, कि आखिर पढाई कैसे करे ताकि सारे सिलेबस अच्छे से पूरे कर पाए।

सबसे पहले तो हमे अपनी स्कूल कॉलेज की पढाई के साथ-साथ या पढाई पूरी होने के बाद शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अपना मनपसंद नौकरी पाने के लिए संबंधित विषय की तैयारी हेतु मार्गदर्शन अपने वरिष्ठ जनों से एवं शिक्षकों से प्राप्त करनी चाहिए। इनमें सफलता पाने के लिए जिन चुनौतियों का सामना करना पडता है जिन पर हमे ध्यान देने की आश्यकता होती है जिन्हें हम निम्न देख सकते है-

- लक्ष्य का चुनाव सही न करना – जब हम किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी शुरू करते हैं तो सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि पढ़ाई को कहाँ से प्रारंभ किया जाए, क्या पढ़ें, क्या नही पढ़ें, कौन सी पुस्तक पढ़े, कौन से लेखक की पुस्तक सही है, कठिन विषय को समझ पाएंगे कि नहीं, ऐसे तमाम तरह के प्रश्न हर एक के दिलो दिमाग में आने लगते हैं । प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले अभ्यर्थी को चाहिए की वह सही लक्ष्य का चुनाव

करें । लक्ष्य का निर्धारण अपने मानसिक एवं शारीरिक स्थिति के अनुसार करें ताकि कोई बाधा या बहाना का मौका ही न रह जाए। सही लक्ष्य का चुनाव इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यदि कोई छात्र दो राह पर चले तो वह डगमगा जाता है क्योंकि उसका ध्यान दोनों ओर पूरी तरह नहीं लग पाता है, एक समय में एक ही चीज पूरी होती है, चीजें अपने मन मुताबिक नहीं मिलती है अत: जो हासिल करना चाहते है उसका एक ही लक्ष्य होना चाहिए।

- अपना एक समय-सारणी बनाने में असमर्थ- सिलेबस से सम्बंधित जानकारी होने पर हमे यह मालूम होना चाहिए कि आखिर किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में क्या आएगा। इसके बाद हमे अपने सिलेबस के अनुसार एक बेहतर समय-सारणी बनाना चाहिए, जिसमें पढ़ना, सोना आदि सभी कुछ शामिल हो। समय सारणी बनाते समय ध्यान रखना है कि बीच-बीच में कुछ खाली वक्त भी हो जिससे तैयारी करते समय बोरियत महसूस न हो और दिमाग न थके। हमे अपना खुद का समय-सारणी बनाना चाहिए ताकि हम आपने समय-सारणी को अच्छे से फॉलो कर सके। लेकिन बहुत से छात्रों में इसकी असमर्थता देखी जाता है। इससे प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी बहुत मुश्किल हो जाती है।

- पाठ्यक्रम से संबंधित उपयुक्त पुस्तकों का चुनाव न कर पाना- परीक्षा की तैयारी के लिए उचित पुस्तके सबसे अहम् होती है। उम्मीदवार के मन में प्रतियोगी परीक्षा पास करने के लिए कौन से प्रकाशन की किताबों का अध्ययन करें, टॉपर्स ने क्या पढ़ा, टॉपर्स ने सफलता कैसे हासिल की यह सवाल बार-बार आता है। लेकिन ऐसे में उम्मीदवार भ्रम में होता है कि किस रोल मॉडल के नक्शे कदम पर चले, कौन से पुस्तकों का चयन करें । क्योंकि गलत पठन सामग्री का पठन करने से समय की बर्बादी होती है । यदि परीक्षा से सम्बंधित हमारे पास सामग्री नहीं है, तो परीक्षा में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते । इसलिए पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सभी पुस्तके और अन्य सामग्री को ढूंढ कर हमें अपने पास ही रखना चाहिए, इससे आवश्यकता पड़ने पर आसानी से लाभ उठाया जा सकता है। अंग्रेजी में एक कहावत है "When in doubt go to the Library" यानि कि हमारी सारी समस्याओं का सामाधान पुस्तकों में निहित है।

- परीक्षा के लिए नोट्स स्वयं बनाने में कठिनाई - यदि हम नियमित अध्ययन करने के दौरान हम स्वयं नोट्स नहीं बना पाते है तो और किसी दूसरे द्वारा बनाये गये नोट्स पर निर्भर हैं तो, इसका मतलब यह है कि हम सफलता से काफी दूर है और हममें सोचने-समझने तथा उत्तरदायित्व की भावना का संचार नहीं हुआ है। तब हम किसी भी विषय पर तत्परता से कोई भी निर्णय लेने में सक्षम नहीं है। जो कि प्रतियोगी परीक्षा के सफलता के मार्ग में सबसे बडी बाधा साबित होती है।

- आत्मविश्वास की कमी- आत्मविश्वास का मतलब होता है अपने आप में विश्वास का होना, प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में आत्मविश्वास का होना परम आवश्यक है, हम आत्मविश्वासी उन्हें कहेंगे जो 100 बार हार कर भी जीतने की उम्मीद करते हैं और एक दिन वही आदमी जीत जाता है । इतिहास के पन्नों मे छप जाते हैं और दूसरों के लिए उदाहरण बन जाते हैं और इसी की कमी आज के युवा पीढी में ज्यादा नजर आता है। उम्मीदवार के अंदर आत्मविश्वास तभी आएगा जब प्रतियोगी परीक्षा के लिए कैंडिडेट पूरी तरह से सक्षम हो अपने अंदर समझ हो, इसी के साथ आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवार का आत्मविश्वास ही उनको सफलता की ओर ले जाता है। अभ्यर्थी के अंदर यदि आत्मविश्वास नहीं होगा तो वह छोटी-छोटी बातों से विचलित होकर तैयारी मे मन नहीं लगेगा और वह कोशिश करने के बजाए कोशिश से पीछे हटता चला जाएगा। यदि परीक्षा की तैयारी बहुत अच्छे तरीके से करते हैं पर परीक्षा देते समय हमारे अंदर आत्मविश्वास नहीं है तो परीक्षा मे प्रश्न के उत्तर आते हुए भी हम उत्तर को गलत कर के आ सकते हैं।

- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी का वातावरण अनुरूप न होना – बहुत से कैंडिडेट मध्यम वर्गीय परिवार से होते है। और ऐस, परिवारों में सदस्यों की संख्या अधिक होती है तथा घरों में जगह की तंगी होती है। ऐसे में पढाई के अनुरूप वातावरण नहीं बन पाता। व्यक्ति जिस माहौल में जैसा वातावरण में रहेगा उसकी सोच भी उसी तरह की हो जाती है । वातावरण को हम पूरी तरह बदल तो नहीं सकते परंतु वातावरण में अपने आप को सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश जरूर कर सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता हासिल करने में छात्रों के सामने यह भी एक बडी चुनौती के रूप में सामने आता है। यह सिर्फ मौसमी वातावरण की ही बात नहीं किया जा रहा है, इसमें अभ्यर्थी के घर-परिवार, आस-पड़ोस के लोगों के व्यवहार को भी शामिल किया जा सकता है। और अगर घर एवं आसपास का वातावरण बहुत ज्यादा अशांत हो, जिसमें अभ्यर्थी को सामंजस्य स्थापित करना नामुमकिन हो तो ऐसी परिस्थिति में वातावरण का बदलना बहुत ही आवश्यक है, इसमें आप घर से बाहर शांत माहौल में रहकर परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं।
- पिछली वर्षो के प्रश्न-पत्रों का अध्ययन सही से न कर पाना- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के अंतर्गत हमें पिछले वर्षो के प्रश्न-पत्रों को अवश्य हल करना चाहिए। लेकिन छात्र प्रश्न पत्रों को इकट्ठा तो कर लेते है पर उस को हल सही से नहीं कर पाते हैं । जबकि सबको पता होता है कि इससे परीक्षा में आने वाले पेपर से सम्बंधित जानकारी प्राप्त होती है। प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए परीक्षा पैटर्न को समझना महत्वपूर्ण होता है जिसके आधार पर प्रतिभागी अपने ज्ञान को परख पाता है । बहुत सारे प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए प्रश्न दोहराए भी जाते हैं जो कि प्रतिभागी के अंक बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसलिए परीक्षार्थी को कम से कम 5 वर्ष में आए हुए प्रश्न पत्रों का संग्रह करना चाहिए और समय के साथ उनको हल भी करते रहना चाहिए जिससे हमारे ज्ञान की परीक्षा भी हो जाती है।
- दोस्तों के साथ ग्रुप बनाने में असमर्थ:- आज के युवा पीढी में यह गलत धारणा बनी हुई है कि वह अपने ज्ञान के स्तर को अपने तक ही सीमित रखता है । अगर इसकी जानकारी किसी दूसरे तक पहुँच गई तो सफलता पहले उसे मिल जाएगी, इसी गलत भावना के कारण वह ग्रूप में पढने के फायदों से वंचित रह जाता है। जबकी सभी को पता है कि प्रतियोगी परीक्षा देने वालों के साथ एक अच्छा ग्रूप बनाकर और साथ में मिलकर पढाई करने से ज्ञान का आदान प्रदान होता है जिससे उनके अंदर तर्क-वितर्क का गुण पैदा होता है। और जो कुछ समझ नहीं आता तो उसकी जानकारी दोस्तों से पूछ कर प्राप्त सकते है।

और अंत में मेरा मानना है कि इससे भी बडी चुनौती छात्रों के लिए यह है कि पूरी तैयारी करने के बाद, परीक्षा देने के बाद यह पता लगे कि परीक्षा रद्द कर दी गई है। इसके पीछे का कारण यह होता है कि परीक्षा के दौरान प्रश्न पत्र लीक हो जाता है। इस तरह की घटनाओं से पता चलता है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न पत्र आउट होने की समस्या गंभीर हो गई है। बरसों मेहनत कर अपने करियर की राह संवारने वाले लाखों छात्रों का भविष्य दांव पर लग जाता है। इससे मेहनती अभ्यर्थियों और भर्ती प्रक्रिया दोनों को बड़ा नुकसान हो रहा है।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन - एक विस्तृत परिचय

सपना सोनी
स्टेशन मास्टर/मैग्नसाइट जंक्शन

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की सुप्रसिद्ध कवियत्री और लेखिका थी। उनकी दो कविता संग्रह तथा तीन कथा संग्रह प्रकाशित हुए पर उनकी प्रसिद्धि 'झांसी की रानी' कविता के कारण है ये राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवियत्री रही हैं, किन्तु इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएं सहने के पश्चात अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया। वातावरण चित्रण- प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयगाही है |

प्रारंभिक जीवन:

उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर गांव में 16 अगस्त 1904 को हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकर रामनाथ सिंह था और वे जमींदार थे तथा वे शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देखरेख में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई । सुभद्रा कुमारी चौहान चार बहनें और दो भाई थे। 1919 मे खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थी।

1921 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह पहली महिला थीं। वे दो बार जेल भी गई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री, सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है । वह एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम के सेनानी भी थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य प्रतिभा बचपन से ही सबके सामने आ गई थी । उनका विद्यार्थी जीवन प्रयाग में ही बीता ।'क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में आपने शिक्षा प्राप्त की। 1913 ई में 9वर्ष की आयु में सुभद्रा की पहली कविता प्रयाग से निकलने वाली पत्रिका 'मर्यादा' में प्रकाशित हुई थी । यह कविता सुभद्रा कुँवरि के नाम से छपी। यह कविता 'नीम के पेड़ ' पर लिखी गई थी। सुभद्रा चंचल और कुशाग्र बुद्धि की थी पढ़ाई में प्रथम आने पर उनको ईनाम मिलता था । सुभद्रा अत्यंत शीघ्र कविता लिख डालती थी, मानो उनको कोई प्रयास ही न करना पड़ता हो। स्कूल के काम की कविताएं तो वह साधारणतया घर से आते-जाते समय तांगे में ही लिख लेती थी इससे इसी कविता की रचना करने के कारण से स्कूल में उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी।

1929 ईसवीं में उनका विवाह ठाकुर लक्ष्मण जी से हुआ । विवाह के पश्चात वे जबलपुर में रहने लगी। सुभद्रा कुमारी चौहान अपने नाटककार पति लक्ष्मण सिंह के साथ शादी के डेढ़ वर्ष के होते ही सत्याग्रह में शामिल हो गई और उन्होंने जेल में ही जीवन के अनेक महत्वपूर्ण वर्ष गुजारे । गृहस्थी और नन्हें-नन्हे बच्चों का जीवन सवारते हुए उन्होंने समाज और राजनीति की सेवा की। उनका पहला काव्य संग्रह 'मुकुल' 1930 में प्रकाशित हुआ । इनकी चुनी हुई कविताएं 'त्रिधारा' में प्रकाशित हुई है। झांसी की रानी इनकी बहुचर्चित रचना है कविता, अनोखा दान, आराधना, इसका रोना, उपेक्षा, उल्लास, झांसी की रानी की समाधि पर झांसी की रानी, झिलमिल तारे, ठुकरा दो या प्यार करो, तुम नीम परिचय, पानी और धूप, पूछो प्रतीक्षा, प्रथम दर्शन प्रभु तुम मेरे मन की जानो, प्रियतम से फूल के प्रति, विदाई, भ्रम, मधुमेह प्याली, मुरझाया फूल, मेरा गीत मेरा जीवन, मेरा नया बचपन, मेरी टेक, मेरे पथिक, यह

कदम्ब का पेड़, विजयी मयूर, विदा, वीरों का हो कैसा वसंत, वेदना व्याकुल चाह, समर्पण साध स्वदेश के प्रति, जलियांवाला बाग में बसंत |

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रचेतना और ओज कूट-कूट कर भरा था। बचपन से उनके मन में देशभक्ति की भावना इतने गहरे तक पैठ बनाए हुए थी कि 1921 में अपनी पढ़ाई छोड़ कर उन्होंने असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और आजादी की इस लड़ाई में उन्होंने कई बार जेल यात्रा की। विवाह के पश्चात वे जबलपुर में बस गई । कथनी-करनी की समानता सुभद्रा जी के व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है । उनकी रचनाएं सुनकर मरणासन्न व्यक्ति ऊर्जा से भर सकता हैं ।

1920-21 में सुभद्रा और लक्ष्मण सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य थे। उन्होंने कांग्रेस में भाग लिया और घर-घर में कांग्रेस का संदेश पहुंचाया। लाज और सादगी में सुभद्रा जी सफेद खादी की बिना किनारी धोती पहनती थी । गान और कपड़ों का बहुत शौक होते हुए भी वह चूड़ी और बिंदी का प्रयोग नहीं करती थी उनको सादा वेशभूषा में देखकर बापू ने सुभद्रा जी से पूछ ही लिया, बहन तुम्हारा ब्याह हो गया है? सुभद्रा ने कहा हां और फिर उत्साह से बताया कि मेरे पति भी मेरे साथ आए हैं इसको सुनकर बापू जहां आश्वस्त हुए वहां कुछ नाराज भी हुए, बापू ने सुभद्रा को डांटा । तुम्हारे माथे पर सिंदूर क्यों नहीं है और तुमने चूड़ियां क्यों नहीं पहनी? 'जाओ कल किनारे वाली साड़ी पहन कर आना' सुभद्रा जी के सहज स्नेही ही मन और निश्चल स्वभाव का जादू सभी पर चलता था। उनका जीवन प्रेम से युक्त था और निरंतर निर्मल प्यार बांट कर भी खाली नहीं होता था। 1922 जबलपुर का 'झंडा सत्याग्रह' देश का पहला सत्याग्रह था, सुभद्राजी पहली महिला सत्याग्रही थी ।

रोज-रोज सभाएं होती थी और जिसमें सुभद्रा भी बोलती थी। टाइम्स ऑफ इंडिया के संवाददाता ने अपनी एक रिपोर्ट में उनका उल्लेख लोकल सरोजिनी कहकर किया था। सुभद्राजी में बड़े सहज ढंग से गंभीरता और चंचलता का अद्भुत सहयोग था। सुभद्रा कुमारी चौहान ने 15 वर्ष की आयु में ही लिखना शुरू कर दिया था । जिस समय इन्होंने लिखना शुरू किया राजनीतिक दृष्टि से उथल-पुथल का युग था ब्रिटिश शासन बनिया की तरह यहां आए थे और प्लासी के युद्ध के बाद तो उन्होंने अपनी जड़े ही जमाने शुरू कर दी थी । धीरे- धीरे अंग्रेजी शासन का दमन चक्र बढ़ता चला गया । भारतीय स्वयं को भाग्य के भरोसे छोड़ निराशाजनक स्थिति में पहुंच गए थे । देश का राजनीतिक आंदोलन शिथिल हो गया था। सत्याग्रह आंदोलन के शिथिल होने पर समाज की जो कुंठा थी, जो विकृतियां थी वह फिर से उभरने लगी । सुभद्रा जी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जेल जा चुकी थी । पर्दा छोड़ चुकी थी, छुआछूत नहीं मानती थी, पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती थी। स्पष्ट ही है कि आज से 45-50 साल पहले इस प्रकार की नारी रूप को कितनी भर्त्सना, कितना लांछन सहना पड़ा होगा। लेकिन सुभद्रा जी जो कदम आगे बढ़ा चुकी थी, फिर वह वापस पलटी नहीं थी । अपने पति की ओर से वह आश्वस्त थी कि वे उन्हें पूरी तरह समझते हैं और अपनी सद्भावना और विश्वास उन्हें देते हैं । ऐसे में कवियों साहित्यकारों ने अपनी कलम के माध्यम से देशवासियों को जागृत किया। भारत की स्वर्णिम अतीत की झांकी दिखाकर लोगों को प्रेरित किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान का हृदय भी देश प्रेम से ओतप्रोत था । देश पर कुर्बान हुए वीरों को नौजवानों को प्रेरणास्रोत मानती थीं। अनुभूति पत्रिका के अनुसार हिंदी काव्य जगत में यह अकेली ऐसी कवयित्री है जिन्होंने अपने कंठ की पुकार से लाखों युवक-युवतियों को युग युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग, स्वतंत्रता संग्राम में अपने को समर्पित कर देने के लिए प्रेरित किया है। इनकी रचनाएं सहज सरल भाषा में जटिल से जटिल भाव को पिरो कर पाठक के मन में उत्साह जगा देती है। बुंदेलखंड के लोक शैली में गाए जाने वाले छंद को लेकर उसी में झांसी की रानी जैसी रोमांचक कथा का लिखना उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों का परिचय देता है यद्यपि उनकी इस रचना को अंग्रेजों ने जप्त कर लिया था ।

सुभद्रा जी की काव्य साधना के पीछे उत्कृष्ट देश-प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। वर्षों तक सुभद्रा जी की झांसी की रानी और 'वीरों

का कैसा हो बसंत' शीर्षक कविताएं लाखों तरुण-तरुणियों के हृदय में आग फूकती रहेगी। सुभद्राजी को प्रकृति से भी काफी लगाव था उनका भावना-सकल मन नारी मन की बहुरंगी छवियों में तो झलका ही, देशभक्ति की इन ओजस्विनी कविताओं में भी उन्होनें अभिव्यक्ति पाई। सुभद्रा जी का अनुभव संपन्न जीवन हर तरह से भरा पूरा और परितृप्त था। शायद यही कारण हो सकता है कि उनकी कविता में स्त्री का सहज रूप अनायास ही अपनी समग्रता और सरलता में उभर आया है । उनकी कविताओं में एक नारी का प्रणय निवेदन है, प्रिय पर न्योछावर हो जाने की आतुर मनोकामना है तो साथ ही उस प्रिय पर अपने ही स्वामित्व का भाव भी है कि कविताओं में नारी-मन अपनी पूरी गरिमा और अपनी शक्ति केंद्रित सीमा दोनों ही स्थितियों में अभिव्यक्त हुआ है ।

सुभद्रा जी ने कहानी लिखना भी शुरू किया। कविता की ही भांति उनके गद्य में भी बोलचाल की भाषा में मन के भाव की सहज अभिव्यक्ति थी। उनकी कहानियों में दो ही स्वर प्रमुख रूप से आए हैं, एक तो देश की पराधीनता से मुक्त कराने वाले युद्ध का स्वर और दूसरा अपने स्वत्व की रक्षा के लिए संघर्षरत नारी का स्वर। मध्यवित्त परिवार में रहन-सहन की बड़ी अंतरंग झलकियां भी उनकी कहानियों में मिलती है। बिखरे मोती उनकी पहली कहानी संग्रह है जिसमें 15 कहानियां हैं । इनमें घरेलू जीवन के अंतरंग झांकियां और अपने व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए स्त्री की छटपटाहट, पहली बार किसी स्त्री की लेखनी द्वारा व्यक्त की गयी। सुभद्रा जी की बहुत सी कहानियां, कहानियां भी है साथ ही उनके जीवन चित्र के टुकड़े भी है। सुभद्राजी का लेखन और उनका कर्म स्कूल जीवन, एक दूसरे में इतने घुले-मिले हैं कि दोनों की समांतर रेखाएं खींच सकना मुश्किल है। वे उलझी-पुलझी रेखायें एक दूसरे को कभी काटती, कभी एक दूसरे में उलझती और साथ-साथ चलती है ।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है यह एक ऐसा सत्य है जिसे सब जानते हैं और तब भी भूले रहते हैं फिर एक दिन जबरदस्त झटके से उनके सामने यह सत्य उजागर हो जाता है और तब समझ में आता है कि भाग्य के सामने वे कितने निर्बल और असहाय है। 17 फरवरी 1947 को नागपुर में एक मीटिंग से शाम को एक बीमार मित्र को देखने गयी । वहीं से जबलपुर लौटते समय मोटर दुर्घटना में सिवनी के पास सुभद्रा जी की मृत्यु हो गई । वे बहुत दिनों से बीमार होती, उनकी उम्र अधिक होती तो शायद उनका देहांत इतना अप्रत्याशित नहीं लगता । 16 अगस्त 1904 को जन्म लेकर 17 फरवरी 1947 ई तक ही रहने के लिए वे इस दुनिया में आई थी। जिस आजादी के लिए उन्होंने जीवन-भर संघर्ष किया था, वह अभी-अभी तो मिली थी, अभी 6 महीने ही हुए थे। उनकी लेखनी जिसने 'झांसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो बसंत' जैसी ओजस्वी, देश-प्रेम की कविताएं दीं थी, वह बरसों सोते-जागते रहने के बाद अब फिर से सजग हो गई थी और उनकी कहानियां पत्रों में प्रकाशित होने लगी थी । जीवन ने एक निश्चित गति पा ली थी, और इस कारण अपने कामों के साथ-साथ लिखते-पढ़ने का काम भी व्यवस्थित ढंग से चलने लगा था। तभी अचानक जीवन की डोर एक झटके से टूट गयी।

[भारत- माता की जय] --- [जय भारत]

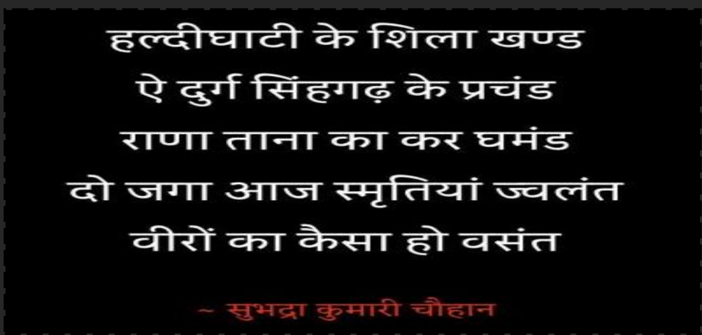

कूटने की परंपरा (व्यंग्य)

श्री किशन, स्टेशन अधीक्षक/ पेट्टैवायतलै

मैंने दादी से पूछा कि पहले इतने लोग बीमार नहीं होते थे, जितने कि आज हो रहे हैं, तो दादी ने अपने तजुर्बे से जवाब दिया......

पौत्र ! पहले कूटने की परंपरा थी जिसमें इम्यूनिटी पावर मजबूत रहता था, तो मैं हकबकाया। दादी बोली पहले हम हर चीज कूटते थे। जब से हमने कूटना छोड़ दिया है, तब से हम बीमार होने लगे हैं, जैसे - पहले खेत से अनाज को कूट-कूट कर निकाल कर

कभी-कभी तो बड़े भाई-बहन भी छोटों को कूट देते थे और छोटे भाई-बहन इसकी शिकायत मां से करते, तो मां बड़े भाई को कूट देती थी। कभी-कभी तो दादी भी पोते को कूट देती और बाप बेटे को कूट देते थे। यानी कुल मिलाकर दिन भर के कामकाज में कूटने का काम चलता ही रहता था। कभी मां बाजरा कूटकर राबड़ी और खिचड़ी बनाती थी। पहले हम कपड़े भी कूट-कूट कर धोते थे, स्कूल में मास्टर भी छात्रों को कूट देते थे, जहां देखो वहां पर कूटने का काम चलता ही रहता था। इसलिए बीमारी नजदीक नहीं आती थी, इसलिए सबका इम्यूनिटी पावर मजबूत रहता था। जब कभी बच्चा सर्दी में नहाने से मना करता था तो मां पहले उसको कूटकर इम्यूनिटी पावर मजबूत कर देती थी। वर्तमान समय में इम्यूनिटी पावर बढ़ाने के लिए देशी परंपरा जारी रहनी चाहिए या नहीं इसका मंथन करना चाहिए। लोहार भी लोहे को कूट-कूट कर उसको आकार देता है। पटसन को कूट कूट कर उसकी रस्सी बनाते थे, गोधन कूटने की अनोखी परंपरा थी, अन्न कूट पर्व मनाया जाता था। इस मशीनरी युग में कूट का काम बंद हो गया है, बीमारियां घर पकड़ रही है, कूटने की परंपरा विलुप्त हो रही है। दादी माँ की बात सुनकर में लोटपोट हो गया, पहले मैंने मजाक में लिया, लेकिन जब दादी माँ की बातों पर गौर किया तो पाया कि बुजुर्ग लोग भले ही अनपढ होते थे लेकिन तजुर्बा दुनिया भर के ज्ञान का होता था मेरी दादी माँ के "कूटने" की परंपरा और तजुर्बे को प्रणाम.....

“मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना हिंदी है हम वतन के हिंदुस्तान हमारा सारे जहाँ से अच्छा”

वीरेंद्र कुमार शर्मा
लिपिक/संकर्म शाखा

दुनिया भर में हर छठा इंसान हिंदी बोलता या समझता है। हिंदी दुनिया की उन चुनिंदा भाषाओं में से एक है जिसमें जो लिखा जाता है, वही बोला भी जाता है। हिंदी राष्ट्रभाषा तो नहीं है, किंतु राजभाषा है। ये देश के विशाल क्षेत्र को एक सूत्र में बांधने का कार्य तो करती ही है। महात्मा गांधी और नेताजी सुभाषचंद्र बोस भी यही कहते थे।

कविता के रूप में सबसे पहले हिंदी भाषा प्रयोग करने वाले प्रख्यात कवि अमीर खुसरो थे। खास बात यह है कि अंग्रेजी में 26 अक्षर की तुलना हिंदी में 52 वर्ण होते हैं। इसमें उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण, जिसमें 10 स्वर + 35 व्यंजन होते हैं। लेखन के आधार पर 52 वर्ण, जिसमें 13 स्वर + 35 व्यंजन + 4 संयुक्त व्यंजन होते हैं। ठाठ भी कम नहीं है हिंदी के। भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। देश के करीब 77 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। डोनिका सालाजार, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी की वर्ल्ड इंग्लिश एडिटर के अनुसार अब तक हिंदी भाषा के 900 शब्दों को डिक्शनरी में जगह मिल चुकी है।

- ढाई लाख से ज्यादा है हिंदी शब्दकोश में शब्दों की संख्या। एक-एक वस्तु, कार्य, भाव आदि को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द हैं।
- ण से किसी शब्द की शुरुआती नहीं होती है। लेकिन इसमें मात्रा लगाई जा सकती है और इसका प्रयोग अक्षर के मध्य या अंत में किया जाता है।
- ताकत की बात करें तो वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम द्वारा तैयार पावर लैंग्वेज इंडेक्स के मुताबिक साल 2050 तक हिंदी दुनिया सबसे ताकतवर भाषाओं में से एक होगी।
- थोड़ी नहीं, बल्कि बहुत समृद्ध है हिंदी भाषा। इसकी पांच उपभाषाएं और कम से कम सोलह बोलियां प्रचलित हैं।
- दुनियाभर में हिंदी का प्रयोग करीब 60 करोड़ से ज्यादा लोग करते हैं। यह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।
- ध्वनि प्रधान होती है हिंदी भाषा की लेखनी। शब्दों को उसी तरह लिखा जाता है जैसे बोला जाता है।
- नमस्ते शब्द हिंदी में सबसे ज्यादा उपयोग में लिया जाने वाला शब्द है। ठीक उसी तरह जैसे अंग्रेजी में हेलो शब्द प्रयोग किया जाता है।
- पहली पुस्तक हिंदी भाषा में प्रेम सागर 1805 में प्रकाशित हुई थी जिसे लल्लू लाल ने लिखी थी।
- फारसी शब्द हिंद से ही हिंदी शब्द की उत्पत्ति हुई है जिसका मतलब है 'सिंधु नदी की भूमि'।

बिहार पहला राज्य था जिसने 1881 में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था।

'भारत-दर्शन' हिंदी पत्रिका इंटरनेट पर विश्व का पहला हिंदी प्रकाशन है। यह 1996-97 में न्यूजीलैंड से प्रकाशित हुई। मातृभाषा के रूप में बात करें तो हिंदी 40 प्रतिशत भारतीयों की मातृभाषा है । युवा भारत

में यूट्यूब पर 93 प्रतिशत हिंदी वीडियो देखते हैं। भारतीय युवाओं के स्मार्टफोन में औसतन 32 एप में 8 से 9 हिंदी के हैं।

राजभाषा का दर्जा हिंदी को 14 सितंबर को मिला। इसी कारण 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। लगभग दुनिया की 176 विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। इतना ही नहीं, अमेरिका के 45 विश्वविद्यालय भी इसमें शामिल है। वेब एड्रेस बनाने में 7 भाषाओं का इस्तेमाल होता है और हिंदी भाषा उन्हीं में से एक है। हिंदी का जो शब्द पहली बार ऑक्सफोर्ड की डिक्शनरी में शामिल किया गया वह स्वदेशी था। संयुक्त राष्ट्र आम सभा को सबसे पहले 1977 में उस समय के विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी में संबोधित किया था। ष आज के प्रयोग में कहीं खो सा गया है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है। कुछ लोग श के समान ही इसका उच्चारण करते हैं और कुछ लोग ख के समान।

हरि शब्द हिंदी का ऐसा शब्द है जिसके दर्जन से भी ज्यादा मतलब होते हैं। जैसे यमराज, पवन, इंद्र, चंद्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, सांप, वानर और मेंढक आदि।

क्षेत्रीय स्तर की बात करें तो हिंदी बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्यों की आधिकारिक भाषा है।

त्रिनिदाद, मॉॅरीशस, फिलीपींस, नेपाल, गुयाना, सूरीनाम, तिब्बत और पाकिस्तान में कुछ परिवर्तनों के साथ ही सही लेकिन हिदी बोली और समझी जाती है। ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी हिंदी को पहचान मिली। 2018 में एक सर्वे रिपोर्ट आई कि इंटरनेट की दुनिया में हिंदी ने भारतीय उपभोक्ताओं के बीच अंग्रेजी को पीछे छोड़ दिया है। श्रीधर पाठक को हिंदी भाषा का पहला बाल साहित्यकार माना जाता है।

टाइप राइटर भी हिंदी के बाजार में 1930 के दशक में आ गया था। यह हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण ही हुआ है।

सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ० हरदेव बाहरी के शब्दों में, हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरम्भ होता है। यह कहना ही ठीक होगा कि वैदिक भाषा ही हिन्दी है। इस भाषा का दुर्भाग्य रहा है कि युग-युग में इसका नाम परिवर्तित होता रहा है। कभी 'वैदिक', कभी 'संस्कृत ', कभी 'प्राकृत ', कभी'अपभ्रंश ' और अब – हिन्दी ।

हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से माना जाता है। 'सिन्धु' सिन्धु नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया।

भारत में अधिकांश लोग हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते हैं । देश की सर्वाधिक जनसंख्या हिंदी समझती है और अधिकांश हिंदी बोल लेते हैं । लेकिन यह भी एक सत्य है कि संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी भारत की 'राजभाषा' यानी राजकाज की भाषा मात्र है । भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा का कोई उल्लेख नहीं है ।

बिहार के पर्यटन स्थल

अभिषेक कुमार,
स्टेशन मास्टर/सेलम टाउन

बिहार पर्यटन स्थलों व एतिहासिक धरोहरों, धर्म अध्यात्म व संस्कृति का केंद्र रहे हैं। यहां की परंपरा व रीति-रिवाज, जीवन पद्धतियां, पर्व त्योहार हमेशा से पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। बिहार, हिंदुओं जैन और विशेषतः बौद्ध धर्म के लोगों के लिए धार्मिक केंद्र है। यह राज्य भारत के महान साम्राज्यों जैसे मौर्य व गुप्त के उदय और उनके पतन का गवाह रहा है।

1. नालंदा के खंडहर

नालंदा प्राचीन काल से ही विश्व विख्यात शिक्षा का केंद्र रहा है। यहां दुनिया भर से अनेक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। चीनी यात्री ह्वेन सांग ने भी यही पर शिक्षा ग्रहण की थी। यह विश्व का पहला आवासीय विश्व विद्यालयों में से एक था। यहां पर एक समय 2000 शिक्षक व 10000 विद्यार्थी रहते थे। इसका निर्माण कुमारगुप्त प्रथम ने 5 वीं शताब्दी में की थी। इसका बख्तियार खिलजी के द्वारा 12 ई शताब्दी में नष्ट कर दिया गया था तथा उसका खंडहर आज भी है। आज यह युनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।

2. विश्व शांति स्तूप

विश्व शांति स्तूप राजगीर में स्थित है जो पूरे विश्व के लोगों को आकर्षण का केंद्र रहता है। यह प्राचीन में मगध राजवंश की पहली राजधानी रह चुका है। यहां स्थित विश्व शांति स्तूप एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्तंभ है। यह भगवान के रूप में अपने शांति के आकर्षण के लिए 400 मी की ऊंचाई पर रणगीर पहाड़ी के उच्चतम बिंदु पर स्थित है। स्तूप की चार स्वर्ण प्रतिमाओं को स्थापित करते हुए विश्व शांति के प्रतीक सफेद संगमरमर पत्थर से बना है। सहां रोपवे के माध्यम से पहूंचा जा सकता है। राजगीर में स्थित गर्म जल का कुंड काफी प्रसिद्ध है। कहा जाता है इन जल में कई औषधीय गुण पाए जाते है।

3. महाबोधि मंदिर

यह वही स्थल है जहां भगवान बुद्ध को 2500 वर्ष पहले एक पीपल वृक्ष के नीचे तपस्या की तथा ज्ञान की प्राप्ति हुई। महाबोधि मंदिर का निर्माण तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक के द्वारा किया गया था तथा वर्तमान में मौजूद सभी मंदिरों का निर्माण 5 वीं या 6 वीं शताब्दी के आस पास का है। वर्ष 2002 में युनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

4. जल मंदिर

बिहार के पावापुरी में स्थित जैन धर्म के पवित्र मंदिर जिसे जल मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह जैन धर्म के अनुयायियों के लिए सबसे पवित्र स्थलों में से एक है। यह वही स्थल है जहां महावीर जैन धर्म के 24 वीं तीर्थंकर का निर्वाण हुआ था। कहा जाता है कि उनकी निर्वाण के बाद उनका अंतिम संस्कार देवताओं द्वारा किया गया था। महावीर स्वामी के 527 ई.पूर्व में मृत्यु हुई थी। मंदिर का निर्माण मूल रूप से महावीर स्वामी के बड़े भाई राजा नंदीवर्धन ने लाल रंग के कमल के फूलों से भरे तालाब के भीतर करवाया। यह पावापुरी के पांच मुख्य मंदिरों में से एक है। जहां चरण पादुका या महावीर के चरण की छाप है।

5. गोलघर

स्थापत्य का अद्भुत नमुना है गोलघर। इसके निर्माण मे कहीं भी कोई स्तंभ नहीं है। यह गुंबदकार आकृति के कारण इसे गोलघर कहते है। यह अंग्रेजो के दारा "अन्न भंडारण" हेतु बनाया गया था। इसका वास्तुकार कप्तान जोन गास्टिन था। तथा वर्ष 1786 ई . में इसका निर्माण हुआ।

इन सब के अलावा और भी अनेक पर्यटन स्थल हमारे बिहार राज्य में है जैसे देव सूर्य मंदिर या जिसे देवार्क सूर्य मंदिर भी कहा जाता है जो औरंगाबाद जिले में देव नामक स्थान पर स्थित है। यह सूर्य भगवान को समर्पित है। यह सूर्य मंदिर अन्य सूर्य मंदिर की तरह पूर्वाभिमुख न होकर पश्चिमाभिमुख है। विष्णुपद मंदिर जो कि गया जिला में है। यह मंदिर फल्गु नदी के किनारे बसा हुआ है। पितृपक्ष के अवसर पर यहां श्रद्धालुओं के कारण भीड जमा हो जाती है। इसके अलावा गया में देखने के लिए बराबर के गुफा, मंगला गौरी मंदिर, ब्रह्म योनि पर्वत आदी है और भी अनेक स्थल जेसे सोनपुर का पशु मेला, वैशाली का अशोक स्तंभ जो विश्व का पहला गणराज्य होसे का गौरव प्राप्त हुआ। शेरशाह सुरी का मकबरा, सासाराम, भागलपूर जहां प्राचीन विक्रमशीला विद्यालय था।

सीतामढी जहां त्रेतायुग में माता सीता का जन्म हुआ था। जमूई जो जूम्भिकग्राम और जनबुदानी के नाम सेजाना जाता था यहां पर ही जैन धर्य के 24वी तीर्थंकर महाबीर स्वामी को ज्ञान प्राप्त हुई।

सफर मे खुशी आनंद और
साहसिक कार्ये का दंगल हो
ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ
कि आपकी यात्रा मंगलमय हो।

****

राजभाषा गतिविधियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

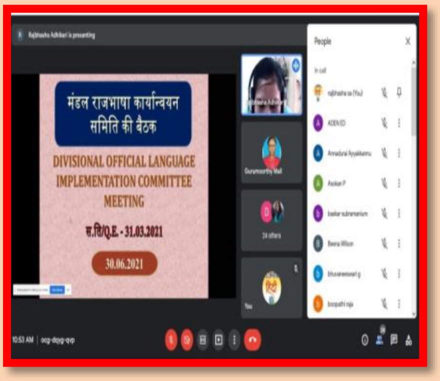

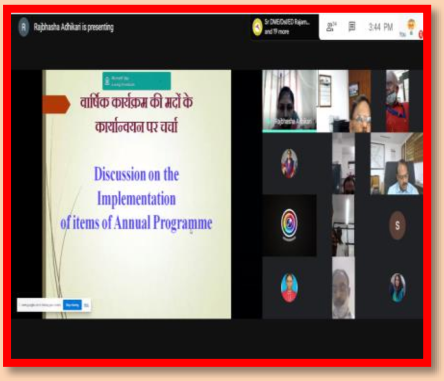

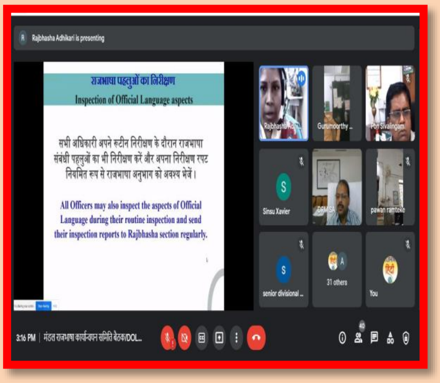

हिंदी कार्यशालाएं

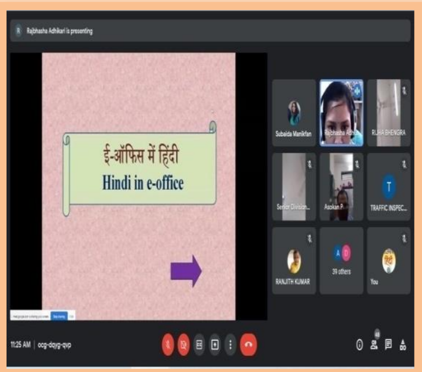

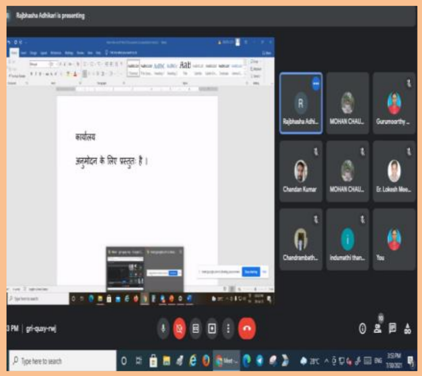

तकनीकी सेमिनार

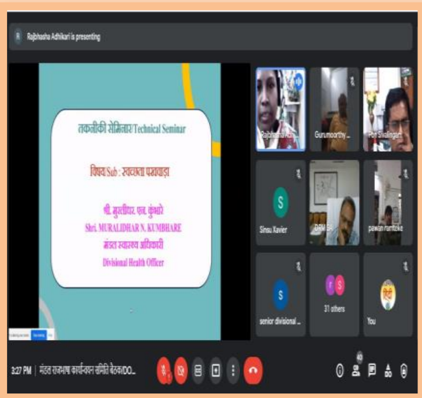

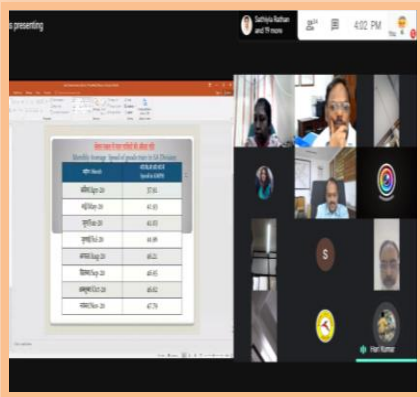

परीक्षाओं का आयोजन

राजभाषा उत्सव के विजेता

बोर्डों में वर्तनी संबंधी सुधार

स्टेशन प्रतियोगिताएं

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम

गृह पत्रिका का विमोचन

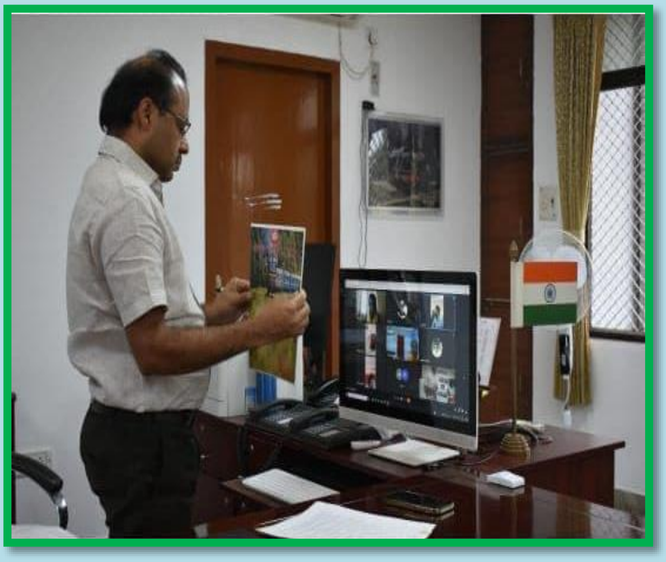

पुस्तकालय गतिविधियाँ

नराकास/सेलम की गतिविधियाँ

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

- सुभाषचन्द्र बोस

राजभाषा अनुभाग, सेलम मंडल द्वारा प्रकाशित